बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

2026

(कक्षा 12)

हिंदी अनिवार्य

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

पढ़ेगा राजस्थान
बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

संयोजक कार्यालय – संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन - 100 मार्गदर्शक

संगीता मानवी

संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू संभाग, चूरू

महेन्द्र सिंह बड़सरा

संभागीय कॉर्डिनेटर, शेखावाटी मिशन 100
संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

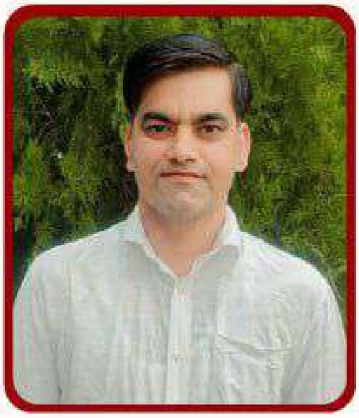

रामावतार भदाला

तकनीकी सहयोगी शेखावाटी मिशन - 100

संकलनकर्ता टीम : हिन्दी अनिवार्य

विजय कुमार सैनी
सेठ कालूराम हनुमान प्रसाद केडिया रा.उ.मा.वि. बाय, नवलगढ़ (झुंझुनू)

सुरेंद्र सैनी
रा.उ.मा.वि.जाट वाली नवलगढ़ (झुंझुनू)

सम्पत कुमार
रा.उ.मा.वि. किरोड़ी नोहरा, नवलगढ़ (झुंझुनू)

डॉ.सरिता सैनी
रा.उ.मा.वि. ,सेवा धोद (सीकर)

रूपचंद सबलानिया
पीएम श्री रा.उ.मा.वि. सिगरावट, धोद (सीकर)

राजू वर्मा
रा.उ.मा.वि. बांकोटी,खेतड़ी (झुंझुनू)

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

प्रश्न–पत्र की योजना 2025–2026

कक्षा – 12th
विषय – हिन्दी अनिवार्य
अवधि – 3 घंटे 15 मिनिट पूर्णांक– 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार–

क्र.सं.	उद्देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	ज्ञान	22	27.5
2.	अवबोध	25	31.25
3.	ज्ञानोपयोग	23	28.75
4.	कौशल	7	8.75
5.	विश्लेषण	3	3.75
	योग	80	100

2. प्रश्नों के प्रकार अनुसार अंकभार–

क्र.सं.	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रतिप्रश्न	कुल अंक	प्रतिशत (अंको का)	प्रतिशत (प्रश्नों का)	संभावित समय
1.	बहुविकल्पात्मक	18	1	18	22.5	35.29	20
2.	रिक्तस्थान	06	1	06	7.5	11.77	10
3.	अतिलघुत्तरात्मक	12	1	12	15	23.53	40
4.	लघुत्तरात्मक	7	2	14	17.5	13.73	35
5.	दीर्घउत्तरीय	04	3	12	15	7.84	42
6.	निबंधात्मक	04	5(2)4(2)	18	22.5	7.84	48
	योग	51		80	100	100	195 मिनट

विकल्प योजना : खण्ड 'स' एवं 'द' में हैं

3. विषय वस्तु का अंकभार–

क्र.सं.	विषय वस्तु	अंकभार	प्रतिशत
1	अपठित गद्य	6	7.5
2	अपठित पद्य	6	7.5
3	निबंध लेखन	5	6.25
4	पत्र व प्रारूप लेखन	5	6.25
5	अभिव्यक्ति और माध्यम	8	10
6	व्यावहारिक व्याकरण	8	10
7	आरोह भाग–2 गद्य	17	21.25
8	आरोह भाग–2 पद्य	14	17.50
9	वितान भाग– 2	11	13.75
	योग	80	100

BSER

प्रश्न–पत्र ब्ल्यूप्रिन्ट 2025–2026

कक्षा: –12th　　　विषय :– हिन्दी अनिवार्य　　　समय:– 3 घंटे 15 मिनिट　　　पूर्णांक :– 80

क्र.सं.	उद्देश्य इकाई/उप इकाई	ज्ञान						अवबोध						ज्ञानोपयोग						कौशल						विश्लेषण						योग
		बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	
1	अपठित गद्य							1(3)		1(3)																						6(6)
2	अपठित पद्य							1(3)		1(3)																						6(6)
3	निबंध लेखन						1(-) *												3(1) *						1(-) *							5(1)
4	पत्र व प्रारूप लेखन						1(-) *												3(1) *						1(-) *							5(1)
5	अभिव्यक्ति और माध्यम	1(2)									2(2)						2(1)															8(5)
6	व्यावहारिक व्याकरण	1(2)	1(6)																													8(8)
7	आरोह भाग–2 गद्य	1(3)					1(-) *			1(2)		3(1)					2(1)		2(1) *					3(1) *	1(-) *							17(9)
8	आरोह भाग–2 पद्य	1(3)					1(-) *			1(2)							2(1)	3(1) *	2(1) *						1(-) *							14(8)
9	वितान भाग– 2	1(2)								1(2)							2(2)													3(1)*		11(7)
	योग	12(12)	6(6)				4(-)	6(6)		12(12)	4(2)	3(1)					10(5)	3(1)	10(4)					3(1)	4(-)					3(1)		80(51)
	सर्वयोग	22(18)						25(21)						23(10)						7(1)						3(1)						

विकल्पों की योजना :– खण्ड 'स' एवं 'द' में प्रत्येक में एक आंतरिक विकल्प है नोट:–कोष्ठक के बाहर की संख्या 'अंकों' की तथा अंदर की संख्या 'प्रश्नों' के द्योतक है।

विशेष :– उक्त ब्ल्यू प्रिन्ट मॉडल प्रश्न पत्र का है जो प्रश्नों के प्रकारों को समझने की सुविधा मात्र के लिए है। मूल प्रश्न पत्र का ब्ल्यू प्रिन्ट भिन्न हो सकता है।

BSER

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

2026

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट PDF डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

पढ़ेगा राजस्थान बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

SHEKHAWATI MISSION-100 : 2025-26

शेखावाटी मिशन–100

अपठित गद्यांश (6 अंक)

1. **निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:** **(6x1=6)**

चरित्र–बल मनुष्य का सर्वोत्तम गुण है। मनुष्य अपने चरित्र की शक्ति से अनेकानेक आपत्तियों, विपत्तियों और कठिनाइयों का सामना कर सकता है। चरित्र किसी व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र की मूलाधार शक्ति है। सम्मानपूर्वक और सफल जीवन व्यतीत करने के लिए उत्तम चरित्र का होना नितांत आवश्यक है। दूसरों पर जितना अधिक गहरा प्रभाव चरित्र का पड़ता है, उतना अन्य किसी गुण का नहीं। जीवन को सुख–शांति तथा आनंद से भरपूर बनाने के लिए मनुष्य को निरंतर सच्चरित्र बनने का प्रयास करना चाहिए। दुश्चरित्र व्यक्ति समाज का कोष्ठ है, मानवता का कलंक है, सत्चरित्र ही सफलता की कुंजी है। सच्चरित्रता के अभाव में केवल बौद्धिक ज्ञान सुगंधित शव के समान है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर–चरित्र, चरित्र बल

(ii) मनुष्य का सर्वोत्तम गुण क्या है?

उत्तर– चरित्र बल

(iii) चरित्र की शक्ति से मनुष्य क्या–क्या कर सकता है?

उत्तर– अनेकानेक आपत्तियो, विपत्तियो और कठिनाइयों का सामना।

(iv) उत्तम चरित्र का होना किस लिए आवश्यक है?

उत्तर– सम्मान पूर्वक और सफल जीवन व्यतीत करने के लिए

(v) मनुष्य को सच्चरित्र बनने का प्रयास क्यों करना चाहिए?

उत्तर– जीवन को सुख–शांति तथा आनंद से भरपूर बनाने के लिए।

(vi) सच्चरित्रता के अभाव में केवल बौद्धिक ज्ञान किसके समान होता है?

उत्तर– सुगंधित शव के समान

2. **निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए –** **(6x1=6)**

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे?
जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पर आवै ।।
कमल–नैन को छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै ।
परम गंग को छाँड़ि पियासो, दुरमति कूप खनावै ।।
जिहि मधुकर अंबुज–रस चाख्यौ, क्यों करील फल भावै।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर– ईश्वर प्रेम

(ii) जहाज का पंछी उड़कर कहाँ जाता है?

उत्तर– पुनः जहाज पर लौट आता है।

(iii) गंगा के जल को छोड़कर कुँआ खुदवाने वाले व्यक्ति को कवि ने क्या कहा है?

उत्तर– अज्ञानी, मुर्ख आदी

(iv) करील के फल किसे अच्छे नहीं लगते?

उत्तर– मधुकर/भ्रमर को क्योंकि उसने आम का रस पहले ही चख लिया है।

(v) 'मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे? –पंक्ति का भावार्थ लिखिए ।

उत्तर– कवि का मन ईश्वर के चरणों के अतिरिक्त कही और सुख नहीं पाता है।

(vi) 'पियासो' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर– प्यासा

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए सभी प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए – (6x1=6)

व्यक्ति को अपने जीवन में नाना प्रकार के लक्ष्य निर्धारित करने की अपेक्षा किसी एक उत्तम लक्ष्य को ही निश्चित करना चाहिए। जो व्यक्ति कई उद्देश्यों की पूर्ति का ख्वाब छोड़कर अर्जुन की तरह एक ही लक्ष्य को चिड़िया की आँख मानकर उस पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित करता है, निश्चय ही सफलता उसके चरणों को चूमती है। एक ही साथ दो घोड़ों पर सवार होने वाले का फिसलकर नीचे गिरना निश्चित है। किसी पेड़ के तने, डालियों, पत्तों फूलों की अलग–अलग सेवा करने वाले को फलों से वंचित ही रहना पड़ेगा जबकि वह यदि मूल (जड़) को ही सींचे तो उसे फल की प्राप्ति होनी ही है। अतः व्यक्ति को एक ही उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना चाहिए।

(i) व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने के लिए क्या निश्चित करना चाहिए?

उत्तर– अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

(ii) 'नयन' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए ।

उत्तर– आँख

(iii) फल की प्राप्ति किसको सींचने से होती है।

उत्तर– जड़ को सींचने पर होती हे।

(iv) इस गद्यांश से छाँटकर 'उपेक्षा' शब्द का विपरीतार्थ लिखिए।

उत्तर– अपेक्षा

(v) 'चिड़िया की आँख में निहित प्रतीकात्मक अर्थ को लिखिए।

उत्तर– लक्ष्य का निर्धारण

(vi) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर– लक्ष्य

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पड़कर सभी प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए (6)

अपने नहीं अभाव मिटा पाया जीवन भर,

शेखावाटी मिशन–100

पर औरों के सभी अभाव मिटा सकता हूँ।
तूफानों भूचालों की भयप्रद छाया में,
में ही एक अकेला है जो गा सकता हूँ।
मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्यापक है.
इसमें मुझसे अगणित प्राणी आ जाते हैं।
मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है।
मैं खण्डहर को फिर से महल बना सकता हूँ।
जब–जब भी मैंने खण्डहर आबाद किए हैं,
प्रलय–मेघ भूचाल देख मुझकों शरमाए ।
मैं मजदूर मुझे देवों की वस्ती से क्या
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए ।

(i) कवि ने किसके अभाव मिटाने की बात कही है?

उत्तर– दुसरो के।

(ii) जीवन में कवि ने खण्डहर से महल बनाने हेतु किसकी आवश्यकता पर बल दिया है?

उत्तर– अपने अदम्य विश्वास पर।

(iii) अदम्य व्यक्ति को देखकर कौन–कौन शर्माते हैं?

उत्तर– प्रलय–मेघ–भूचाल आदी शर्माते है।

(iv) जीवन में सुधार हेतु किसका महत्त्व अधिक बताया है?

उत्तर– अपने आप पर विश्वास पर

(v) कवि ने अपने आप को क्या मानकर धरती पर स्वर्ग बनाने की बात कही है?

उत्तर– मजदूर।

(vi) 'बादल' का पर्याय पद्यांश से छाँट कर लिखिए।

उत्तर– मेघ।

अध्याय–1 भक्तिन (महादेवी वर्मा)

बहुचयात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 'भक्तिन' पाठ है–

(अ) कहानी (ब) निबंध

(स) संस्मरणात्मक रेखाचित्र (द) एकांकी (स)

प्र:2 भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था?

(अ) लक्ष्मी (ब) सरस्वती (अ)

शेखावाटी मिशन–100

(स) विद्या (द) भक्तिन

प्र:3 सेवक धर्म में भक्तिन किससे स्पर्धा करने वाली थी? (ब)

(अ) राम से (ब) हनुमान से

(स) लक्ष्मण से (द) विभीषण से

प्र:4 'खोटे सिक्के की टकसाल' किसे कहा गया है ? (ब)

(अ) भक्तिन की सास को (ब) भक्तिन को

(स) भक्तिन की बेटी को (द) इनमें से कोई नही

प्र:5 'भक्तिन' संस्मरण महादेवी वर्मा की किस कृति में संकलित है

(अ) स्मृति की रेखाएँ (ब) अतीत के चलचित्र (अ)

(स) पथ के साथी (दा) मेरा परिवार

प्र:6 भक्तिन का शहर आने का क्या कारण हो सकता है?

(अ) खरीदारी करना (ब) जमींदार द्वारा दी गई सजा

(स) रोजगार करना (द) उपर्युक्त सभी (ब)

प्र:7 भक्तिन सबसे अधिक किससे डरती थी?

(अ) मालकिन से (ब) मालकिन की नाराजगी से

(स) जमीदार से (द) कारागार से (द)

प्र:8 भक्तिन का नामकरण किसके द्वारा किया गया ?

(अ) पंडित के द्वारा (ब) पिता के द्वारा

(स) महादेवी वर्मा के द्वारा (द) माता के द्वारा (स)

प्र:9 'भक्तिन' नामक अध्याय मे 'खाटे सिक्कों की टकसाल' किसे कहा गया है।

(अ) भक्तिन को (ब) माता को

(स) विमाता को (द) कुमाता को (अ)

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 भक्तिन नामक संस्मरण में 'नाम का विरोधाभास' लेकर जीने से आप क्या समझते है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– नाम के अर्थ के अनुरूप जीवन में परिस्थितियों का नहीं बन पाना ही या नाम के विपरित परिस्थितियों का होना ही 'नाम का विरोधाभास' लेकर जीना कहलाता है।

उदाहरण के लिए भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था लेकिन नाम के अनुरूप सुख समृद्धि और सम्पन्नता उसके जीवन में नहीं थी।

प्र:2 महादेवी वर्मा के घर किन–किन पालतू प्राणियों का उल्लेख हुआ है।

उत्तर– हिरनी (सोना)

शेखावाटी मिशन–100

कुत्ता (बसन्त)

बिल्ली (गोधूलि)

प्र:3 भक्तिन नामक संस्मरण में 'खोटे सिक्को की टक्साल' किसे व क्यों कहा गया है?

उत्तर– प्रस्तुत पाठ में 'खोटे सिक्कों की टकसाल' लक्ष्मी (भक्तिन) को कहा गया है क्योंकि उसने पितृसतात्मक मान्यताओं वाले समाज में लगातार तीन पुत्रियों को जन्म दिया।

प्र:4 'भक्तिन' ने महादेवी वर्मा को अधिक देहाती बना दिया किन्तु स्वयं शहर की हवा से दूर रहीं। इस वाक्य की सत्यता सिद्ध कीजिए।

उत्तर– भक्तिन के स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वह दूसरों को अपने अनुकूल बना लेना चाहती थी स्वयं अपने सिद्धान्तो से रत्तीभर नहीं हटती थी, इसी के परिणाम स्वरूप भक्तिन ने महादेवी को मक्के के बासी दलिया को मट्ठे के साथ खाना, बाजरे में तिल मिलाकर बने पुए खाना, ज्वार की खिचड़ी महुए की लापसी खाने के साथ ही देहाती भाषा सीखा दी परन्तु खुद ने रसगुल्ले को अपने मुंह तक नहीं जाने दिया।

प्र:5 पहली मुलाकात के अवसर पर महादेवी वर्मा ने भक्तिन के स्वभाव के बारे में क्या अनुमान लगाया ?

उत्तर– महादेवी वर्मा को लगा कि भक्तिन दृढ सकल्प वाली महिला है और वह काफी समझदार महिला है।

प्र:6 महादेवी वर्मा के जीवन में भक्तिन के आने से क्या परिवर्तन आए?

उत्तर– भक्तिन के आने से महादेवी वर्मा ने सुविधाओं की चिंता करना छोड़ दिया और वह अपनी असुविधा छिपाने लगी। भक्तिन ने महादेवी वर्मा की अनेक दंत कथाएं कठस्थ करा दी और महादेवी वर्मा पहले से और अधिक देहाती बन गई ।

प्र:7 जीवन के दूसरे परिच्छेद से भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है भक्तिन के सम्बंध में लेखिका के अनुसार जीवन का दूसरा परिच्छेद कौनसा है?

उत्तर– अपने विवाह के पश्चात जब भक्तिन ससुराल पहुंची वहीं से उसके जीवन का दूसरा परिच्छेद प्रारम्भ हुआ। भक्तिन की जेठानियों को पुत्र प्राप्ति का सुख था किन्तु भक्तिन के क्रमशः तीन कन्याओं को जन्म दिया जिसके कारण उसे घर का सारा काम करना पड़ता और दुखमय जीवन व्यतीत करना पड़ा

प्र:8. भक्तिन की चारित्रिक विशेषताएं बताएं–

उत्तर– भक्तिन की चारित्रिक विशेषता–

1. मेहनती
2. स्वाभिमान से जीने वाली
3. हक के लिए लड़ने वाली
4. पतिव्रता
5. बोलने में चतुर
6. धार्मिक स्त्री
7. मितव्ययी

प्र:9 भक्तिन नामक अध्याय में बालविवाह के समर्थको पर किस प्रकार व्यंग्य किया गया है ?

उत्तर– प्रस्तुत अध्याय में निम्न प्रकार से बाल विवाह समर्थको पर निम्न प्रकार व्यंग्य किया–

'' पाँच वर्ष की उम्र में भक्तिन को हँडिया ग्राम के एक सम्पन्न गोपालक की सबसे छोटी पुत्रवधु बनाकर पिता ने शास्त्र से दो पग आगे रहने की ख्याति कमाई और नौ वर्षीय युवती का गौना देकर विमाता ने बिना मांगे पराया धन लौटाने

शेखावाटी मिशन–100

वाले महाजन का पुण्य लूटा।

प्र:10 'इस सेवक का साथ टेढी खीर है। महादेवी वर्मा ने ऐसा क्यों कहा था।

उत्तर– भक्तिन देहाती थी और अंधविश्वास तथा छूआ–छूत को मानने वाली स्त्री थी। पहले दिन से रसोई में प्रवेश होने से पूर्व भक्तिन के द्वारा किये गये क्रियाकलाप यथा–

धुली हुई धोती को जल के छीटों से पवित्र कर पहनना पीपल में पानी डालना, सूर्य को अर्ध्य देना तथा जप करना और कोयले से मोटी रेखा बनाना आदि से देखकर लेखिका ने ऐसा कहा है क्योकि वो इन बातो पर विश्वास नही करती थी।

दीर्घ उत्तरात्मक

प्र:1 'भक्तिन' नामक संस्मरण में शास्त्र के प्रश्न को अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेने का कौनसा उदाहरण लेखिका ने दिया?

उत्तर– शास्त्र के प्रश्न को भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती थी उदाहरण के लिए लेखिका को स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता है। अतः उन्होने भक्तिन को रोका उसने अकुंठित भाव से उत्तर दिया है कि शास्त्र में लिखा है– लेखिका ने पूछा– क्या लिखा है? तुरंत उत्तर मिला– 'तीरथ गए मुँडाऐ सिद्ध' कौनसे शास्त्र का यह रहस्यमयी सूत्र है यह जान लेना लेखिका के लिए सम्भव नहीं था अतः लेखिका को हार कर चुप रहना पड़ता और भक्तिन का चूड़ाकर्म हर बृहस्पतिवार एक दरिद्र नापित (नाई) के गंगा जल से धुले उस्तरे द्वारा सम्पन्न होता रहा।

प्र:2 भक्तिन की विधवा बेटी का जबरन विवाह के सन्दर्भ में स्त्री के मानवाधिकार या स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का जीता–जागता प्रमाण है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– भक्तिन की विधवा बेटी के साथ उसके ताऊ के लड़के के साले ने जबर्दस्ती की थी, उसे जबरन अपने साथ कोठरी में बंद कर दिया था। तब गाँव की पंचायत में लड़की की इच्छा के विरुद्ध तीतरबाज युवक साथ बांध दिया गया और पति–पत्नी की तरह रहने का निर्णय सुनाया गया। इस घटना को स्त्री सम्मान व अधिकार कुचलने वाली मानकर कहा जा सकता है कि स्त्रियों के साथ ऐसे व्यवहार सदियो से होते आ रहे हैं। समय के साथ स्त्री जाति का शोषण नही रुका, उनके अधिकारों का हनन होता रहा। आज भी गाँवों में पंचायते द्वारा ऐसे फैसले सुनाए जाते है भक्तिन की बेटी के साथ घटित घटना इसी सामाजिक परंपरा का जीता जागता प्रमाण है।

शेखावाटी मिशन–100

अध्याय–2 बाजार दर्शन (जैनेन्द्र कुमार)

बहुचयनात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 'बाजार दर्शन' पाठ के लेखक है (ब)

(अ) फणीश्वर नाथ रेणु (ब) जैनेंद्र कुमार

(स) विष्णु खरे (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्र:2 लेखक ने बाजार की असली कृतार्थता बताई है–

(ब) अभाव जाग्रत करना (ब) आवश्यकता के समय काम आना

(स) अधिकाधिक धन कमाना (द) अनाप–शनाप सामान खरीदना (ब)

प्र:3 बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को लेखक ने क्या नाम दिया है?

(अ) नीतिशास्त्र (ब) अनीति शास्त्र

(स) समाजशास्त्र (द) राजनीति शास्त्र (ब)

प्र:4 'बाजार दर्शन' पाठ गद्य लेखन की कौन सी विद्या में रचित है?

(अ) कहानी (ब) निबंध (ब)

(स) एकांकी (द) जीवनी

प्र:5 'वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है' ये शब्द किसके लिए कहे गए है?

(अ) लेखक के लिए (ब) चूरन वाले भगत जी के लिए (ब)

(स) पाठको के लिए (द) जैनेन्द्र कुमार के लिए।

प्र:6 भगत जी को शक्ति का बल प्राप्त था लेखक के किन–किन शब्दों के माध्यम से समझने का प्रयास किया है?

(अ) स्पिरिचुअल (ब) आत्मिक

(स) धार्मिक और नैतिक (द) उपर्युक्त सभी के माध्यम से (द)

प्र:7 किस उपन्यास ने जैनेन्द्र कुमार को मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई,

(अ) व्यागपत्र (ब) मुक्तिबोध

(स) परख (द) कल्याणी (अ)

प्र:8 भगत जी का कार्य था–

(अ) नमक बेचना (ब) कोयले बेचना

(4) चूरन बेचना (द) जीरा बेचना (स)

प्र:9 ऊँचे बाजार का आमंत्रण कैसा होता है?

(अ) खतरनाक (ब) आपतिजनक

(स) मूक (द) गम्भीर (स)

शेखावाटी मिशन–100

लघूतरात्मक प्रश्न

प्र:1 'मन बंद होने' से क्या आशय है?

उत्तर– मन बंद होने से आशय है– शून्य होना। अर्थात, अपनी आवश्यकताओं का निरोध करना ही मन का बंद होना कहलाता है।

प्र:2 बाजार दर्शन निबंध में आवश्यक खरीददारी करवाने में भूमिका निभाने वाले किन कारकों का उल्लेख किया है?

उत्तर– **(i)** स्त्रीत्व का प्रश्न

(ii) पर्चेजिंग पावर

(iii) बाजार (सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला।)

प्र:3 बाजार दर्शन निबंध के अनुसार कौन–कौन से अवगुण मनुष्य को हमेशा के लिए बेकार बना डालते है?

उत्तर– असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या।

प्र:4 'बाजार दर्शन' निबंध में आधार 'बाजार के जादू' को स्पष्ट करते हुए उससे बचने के उपाय लिखिए।

उत्तर– बाजार का जादू चढ़ने से व्यक्ति बाजार की आकर्षक वस्तुओं के वश में हो जाता है। गैर जरूरी चीज खरीदने लग जाता है। जादू उतरने पर पता चलता है वे वस्तुएं उसके आराम में खलल डालती है। इससे बचने का उपाय लेखक ने बताया है कि मन खाली नहीं होना चाहिए अर्थात बाजार जाते समय निश्चित वस्तु खरीदने का लक्ष्य होना चाहिए।

प्र:5 शून्य होने का अधिकार किसे व क्यों है।

उत्तर– शून्य होने का अधिकार 'परमात्मा' को है क्योकि परमात्मा सम्पूर्ण तथा रागद्वेष से मुक्त है।

प्र:6 बाजार की सार्थकता से क्या तात्पर्य है बाजार को सार्थक कौन बनाता है?

उत्तर – बाजार की सार्थकता से तात्पर्य – लोगों की जरूरत का सामान उनको उपलब्ध कराना।

बाजार की सार्थकता देने वाला – अपनी आवश्यकताओं को जानकर वहाँ खरीदारी करने वाला ही बाजार को सार्थकता देता है।

प्र:7 बाजार दर्शन निबंध में लेखक ने सच्चा ज्ञान किसे कहा है ?

उत्तर – अपूर्णता के बोध को हमारे अन्दर गहरा करने वाले ज्ञान को ही लेखक ने सच्चा ज्ञान कहा है।

प्र:8 बाजार दर्शन निबंध में शैतान का जाल किसे कहा गया है।

उत्तर– बाजार के आकर्षण को कहा गया है।

प्र:9 कथाकार होने के साथ साथ जैनेन्द्र कुमार की पहचान किस रूप में हो रही है।

उत्तर– अत्यंत गम्भीर चितंक के रूप में।

प्र:10 बाजार के जादू की क्या मर्यादा बताई गई है?

उत्तर– जिस प्रकार चुम्बक का जादू लोहे पर चलता है वैसे ही बाजार के जादू की भी मर्यादा है। मन खाली हो और जेब भरी हो, ऐसी हालात में इस जादू का असर सबसे अधिक होता है भरे हुए मन से बाजार जाने वाले व्यक्ति पर यह जादू असर नहीं डालता है।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:11 बाजार के 'मूक आमत्रण' की क्या विशेषता होती है,

उत्तर– बाजार के 'मूक आमत्रण' की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इसमें आग्रह या बुलावा नहीं होता है ऐसे में इस आमंत्रण का तिरस्कार नहीं किया जा सकता।

प्र:12 बाजार के जादू से बचने के लिए क्या उपाय बताया गया है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– बाजार के जादू से बचने का उपाय– हमे कभी भी खाली मन से बाजार नहीं जाना चाहिए अर्थात आवश्यकताओं का निर्धारण करके ही भरे हुए मन से बाजार जाना चाहिए ।

उदाहरण– लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए पानी भीतर हो तो लू का तपन व्यर्थ हो जाता है। इसी प्रकार मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार भी फैला का फैला ही रह जाता है।

प्र:13 बाजारूपन से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं,

उत्तर– बाजारूपन– परम्पर प्रेम भावना का कम होना एक दूसरे को केवल ग्राहक व व्यापारी की नजर में देखना, बाजार में छल – कपट बढ़ना, एक दूसरे से ठगने के प्रयास में रहना, दूसरे से हानि को अपना लाभ समझना ही बाजारूपन है।

बाजार की असली सार्थकता– आवश्यकता के समय काम आना किंतु ऐसी स्थिति वाले बाजारों में आवश्यकता का आदान–प्रदान न होकर शोषण होने लगता है ऐसे में छल–कपट होने लगता. है और निष्कपट लोग इसके शिकार होते हैं।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या असर पड़ता है?

उत्तर– **(i)बाजार का जादू चढ़ने पर–**

जब मनुष्य खाली मन से बाजार जाता है तो अनेकानेक चीजों का आमंत्रण उसके मन तक पहुँच जाता है । ऐसे में उसके मन में चाह जगती है और सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला लगता है उसे लगता है कि उसके पास इन सारी वस्तुओं का अभाव है एवं आराम में वृद्धि करने योग्य हो जाएगी । ऐसी स्थिति में मनुष्य बिना सोचे समझे अधिकाधिक धन का अपव्यय करने लगता है।

(ii) बाजार का जादू उतरने पर–

बाजार का जादू उतरने पर मनुष्य को वास्तविकता का अनुभव होता है और उसे लगने लगता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद न देकर खलल या परेशानी ही करती है। ऐसी स्थिति में मनुष्य केवल पछतावा ही करता है।

प्र:2 बाजार दर्शन निबंध का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– जैनेन्द्र कुमार (1905–1990 ई.) विरचित 'बाजार दर्शन' निबंध का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक–ठीक समझकर बाजार का उपयोग करे तो उसका सच्चा लाभ उठा सकते हैं। ऐसे में अगर हम – अपनी जरूरतों को तय कर बाजार जाने की बजाय उसकी चमक–दमक में फँस गए तो बाजार का स्वरूप

शेखावाटी मिशन–100

हमें असंतोष, तृष्णा और– ईर्ष्या से घायल कर सदा के लिए बेकार बना डाल सकता है।

वर्तमान समय में की स्थिति वाले बाजारों का हम सही–सही उपयोग कैसे करे ? बाजार से सच्चा लाभ कैसे ले ? और बाजार को सच्चा लाभ या सार्थकता कैसे प्रदान करे यही बताना इस निबंध का मुख्य उद्देश्य है।

प्र:3 बाजार दर्शन पाठ के आधार पर भगत के चरित्र की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

उत्तर– भगत जी के चरित्र की दो विशेषताएँ निम्न हैं–

(1) संतोषी तथा निर्लोभी – भगत जी को पैसे का लोभ नहीं है। छह आने की कमाई करने के बाद भगत जी शेष चूरन को बच्चों में मुफ्त वितरित कर देते थे। वह पच्चीसवाँ पैसा भी स्वीकार नहीं करते वह व्यापार को शोषण का जरिया नहीं मानते तथा अपनी जरूरत का पैसा कमाकर संतुष्ट रहते हैं।

(2) तृष्णा और संग्रह से मुक्तः– भगत भी जब भी बाजार जाते हैं तो पूर्ण चेतना अवस्था में जाते हैं। बाजार से काला नमक व जीरा खरीदने के बाद उनके लिए बाजार महत्त्वहीन हो जाता है भगत जी बाजार से अनावश्यक वस्तुएँ नहीं खरीदते हैं।

(3) अपनी आवश्यकता को ठीक–ठीक समझने वाले ।

अध्याय–3 काले मेघा पानी दे (धर्मवीर भारती)

बहुचयनात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण के रचयिता कौन?

(अ) जैनेन्द्र कुमार (ब) मुंशी प्रेमचन्द (द)

(स) फणीश्वर नाथ रेणु (द) धर्मवीर भारती

प्र:2 अनावृष्टि दूर करने के लिए गाँव के बच्चों की टोली से चिढ़ने वाले लोग उन्हें क्या कहते थे?

(अ) मेढक मण्डली (ब) इन्दर सेना (अ)

(स) शेर मण्डली (द) शरारती मण्डली

प्र:3 लेखक पर बचपन में किसके संस्कार थे?

(अ) समाजवादी (ब) राष्ट्रवादी (द)

(स) मावर्सवादी (द) आर्यसमाजी

प्र:4 'जो चीज मनुष्य पाना चाहता है, उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा' कैसे? यह कथन किसका है?

(अ) लेखक का (ब) माँ का

(स) जीजी का (द) पिता का (स)

प्र:5 भारतीय अंग्रेजों से किस मान्यता के कारण पिछड़ गए ?

(अ) ध्यान (ब) अंधविश्वास (ब)

शेखावाटी मिशन–100

(स) भक्ति (द) दर्शन

प्र:6 'बोल गंगा मइया की जय' जयकार कौन लगाते थे–

(अ) पुजारी (ब) इंदर सेना (स) अ व ब दोनों (5) कोई मित्र मंडली (ब)

प्र:7 'काले मेघा पानी दे' सस्मरण के लेखक निम्न में से कौन है–

(अ) धर्मवीर भारती (ब) महादेवी वर्मा (स) जैनेन्द्र कुमार (द) फणीश्वरनाथ रेणु (अ)

प्र:8 इन्द्र सेना पानी और कीचड़ में लोट पोट होकर क्या मांगते थे?

(अ) पैसे (ब) कपडे (स) जल (द) वर्षा (द)

प्र:9 इन्द्र सेना द्वारा जल का दान मांगने पर लेखक क्या कहता था?

(अ) धार्मिक विश्वास (ब) अंधविश्वास (स) अ व ब दोनों (द) लोक प्रचलित विश्वास (ब)

लघूतरात्मक

प्र:1 'काले मेधा पानी दे' नामक अध्याय में लेखन ने भारतीयों के अग्रेजों से पिछड़ने और गुलाम बनने का कारण किसे बताया है

उत्तर– देश में प्रचलित अंधविश्वास, झूठ आडम्बर, एवं पाखंड के कारण ही भारतीय लोग अग्रेजों के गुलाम बने थे।

प्र:2 'काले मेघा पानी दें' संस्मरण में किस द्वन्द्व का सुन्दर चित्रण हुआ है?

उत्तर– प्रस्तुत अध्याय में लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वन्द्व का चित्रण हुआ है।

प्र:3 "विज्ञान का सत्य बड़ा है या सहज प्रेम का रस" 'काले मेधा पानी दे' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर– आज विज्ञान का युग है और वैज्ञानिक विकास को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान का सत्य बड़ा है। जीजी ने लेखक को सहज प्रेम–भाव में इन्द्र सेना पर पानी फेंकना उचित आचरण बताया। लेखक न चाहता हुआ भी उसके अनुसार कार्य करने लगा। इसका कारण जीजी का सहज प्रेम ही था।

प्र:4 "यह भी सच है कि यथा प्रजा तथा राजा" इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए–

उत्तर– इस कहावत में जीजी का मानना है कि राजा भी प्रजा के अनुकूल आचरण करता है अतः जीजी का मानना है मनुष्य को अपना आचरण त्यागपूर्ण बनाना चाहिए।

प्र:5 लेखक के अनुसार देश के नागरिको के चरित्र में किस गुण का अभाव है?

उत्तर– स्वदेश के लिए सच्चे प्रेम, त्याग, बलिदान आदि गुणों का अभाव है।

प्र:6 इंदर/इन्द्र सेना पर पानी फेकने को जीजी ने किस प्रकार सही ठहराया?

उत्तर– इन्द्र सेना पर पानी फेकने को जीजी ने निम्न प्रकार सही ठहराया–

जिस प्रकार बहुत सारा अनाज प्राप्त करने के लिए पहले किसान को खेत में कुछ अनाज बोना पड़ता है उसी प्रकार इन्द्र भगवान को पानी प्राप्त करने के लिए इन्द्र सेना को पानी बीज के रूप में देना पड़ता है।

प्र:7 धर्मवीर भारती के किस उपन्यास पर फिल्म बन चुकी है।

उत्तर– सूरज का सातवा घोड़ा

प्र:8 क्या इन्द्र सेना आज के युवा वर्ग के लिए प्रेरणास्त्रोत हो सकती है।

उत्तर– इन्द्रसेना आज के युवा वर्ग के लिए प्रेरणा स्रोत हो सकती है क्योकि इन्द्रसेना की तरह सगंठित होकर जनहित के लिए किया गया कार्य हमें उन्नति की ओर ले जाता है यदि सभी लोग स्वार्थ को छोड़कर जनकल्याण का कार्य करे तो समाज व राष्ट्र आगे बढ़ सकता है।

प्र:9 'पानी दे गुड़धानी दे' पानी के साथ गुड़धानी की मांग क्यों की जा रही है। स्पष्ट करे–

उत्तर– जब बादल पानी देगे तभी खेतों में अन्न उत्पन्न होगा और लोगों को खाने के लिए गुड़धानी मिलगे अनाज के लिए लोगों की भूख शांत होगी और चेहरे पर प्रसन्नता छा जाएगी।

प्र:10 इन्द्र सेना के बारे में लेखक और जीजी की राय में क्या अंतर था?

उत्तर– लेखक का मानना था कि इन्द्र सेना पर पानी फेकना एक ढोंग है इस बात से जीजी नाराज तो हुई फिर उसे समझाते हुए कहा कि इन्द्र सेना पर पानी फेंकना पानी से बर्बादी नहीं है। ऋषि–मुनियों ने कहा है कि दान देने से मनुष्य बदले में कई गुना प्राप्त होता है। जिस चीज की हमें आवश्यकता हो, उसको दे देना ही सच्चा त्याग होता है। ऐसा त्याग का फल हमे मिलता है।

प्र:11 'गगरी फूटी बैल पियासा' इन्द्र सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यो हुई है ?

उत्तर– इन्द्र सेना के इस खेलगीत में बैलों के पियासा रहने की बात इसलिए उजागर हुई है क्योंकि कृषि कार्य का मूल आधार बैल ही होते हैं, ऐसे में अगर वे प्यासे होंगे तो खेतों में जुताई सम्भव नहीं हो पाएगी पानी के अभाव में खेती भी नहीं रहेगी और बैल भी भूख प्यास से मर जाएंगे। वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में इस कथन का आशय यह है कि देश में भ्रष्टाचार इस हद तक व्याप्त है कि संचालित होने वाली विकास योजनाओं का लाभ कभी भी आम जन तक नहीं पहुंच पाता है।

शेखावाटी मिशन–100

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– धर्मवीर भारती (1926ई – 1997 ई.) विरचित 'काले मेघा पानी दे' नामक संस्मरण में लोक प्रचलित आस्था और विश्वास तथा विज्ञान के मध्य द्वन्द्व का सुन्दर चित्रण किया गया है। लेखक ने बताया है कि विज्ञान का सत्य भी बड़ा है और सहज प्रेम का रस भी अपनी जगह बड़ा ही है। विज्ञान सिद्धांतो पर आधारित है। जबकि विश्वास लोगों की भावनाओं पर। आज के इस वैज्ञानिक युग में इन दोनों का ही होना आदर्श जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

इसके साथ ही लेखक ने दान और त्याग के महत्व को बताते हुए कर्तव्य पालन की बात भी कही है। लेखक ने देश में व्यापत भ्रष्टाचार की स्थिति की ओर संकेत भी किया है।

प्र:2 लोगों ने लड़को की टोली को मेंढक मंडली नाम क्यों दिया था ? यह टोली अपने आप को इन्द्र सेना कहकर क्यो पुकारती थी? 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– **(i)** **मेढक मंडली–**

जो लोग उन लड़कों के नग्न स्वरूप शरीर उनकी उछलकूद और उनके शोर–शराबे तथा उनके कारण गली में होने

वाले कीचड़–कादो से चिढ़ते थे वे उन्हें मेंढ़क मण्डली कहा करते थे।

(ii) इन्द्र सेना–

बच्चों की यह टोली स्वयं को इन्द्र सेना कहकर पुकारती थी क्योकि वर्षा के बादलों के स्वामी है–इन्द्र। ऐसे में यह टोली लोगों के लिए इन्द्र भगवान से पानी माँगती– फिरती थी अतः आस्था और विश्वास को मानने वाले लोग इन्हें इन्द्र सेना मानकर घर का सारा पानी इन पर उड़ेल देते थे।

अध्याय–4 पहलवान की ढोलक (फणीश्वर नाथ रेणु)

बहुचयनात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 'शेर के बच्चे' का वास्तविक नाम क्या था?

(अ) लुट्टन सिंह (ब) बादल सिंह (द)

(स) श्यामानंद (द) चाँद सिंह

प्र:2 चाँद सिंह के गुरु का क्या नाम था?

(अ) लुट्टन सिंह (ब) काला खाँ

(स) बादल सिंह (द) उपर्युक्त सभी (स)

प्र:3 'पहलवान की ढ़ोलक' अध्याय गद्य की किस विद्या में है?

(अ) निबंध (ब) कहानी

(स) संस्मरण (द) उपर्युक्त सभी (ब)

प्र:4 चाँद सिंह किस राज्य का प्रसिद्ध पहलवान था।

(अ) हरियाणा (ब) पंजाब

(स) बिहार (द) प. बंगाल (ब)

प्र:5 मैला आँचल का प्रकाशन कब हुआ ?

(अ) 1954 ई. (ब) 1955 ई.

(स) 1931ई. (द) 1956 ई. (अ)

प्र:6 ''वाह रे बहादुर'' पंक्ति में 'बहादुर' शब्द किसरे लिए प्रयुक्त हुआ है?

(अ) बादल सिंह (ब) फणीश्वर नाथ रेणु (स) राजा (द) लुट्टन सिंह (द)

प्र:7 रात के अंधेरे में गाँव के निवासियों में संजीवनी भरने का कार्य कौन करता था।

(अ) राजा (ब) पहलवान की ढोलक (स) पहलवान (द) अ व ब दोनो (ब)

प्र:8 साहित्य में सर्वप्रथम आंचलिक शब्द का प्रयोग किसने किया–

(अ) महादेवी वर्मा (ब) जैनेन्द्र कुमार

(स) फणीश्वरनाथ रेणु (द) धर्मवीर भारती (स)

शेखावाटी मिशन–100

प्र:9 राजदरबार का दर्शनीय जीव बन गया था –

(अ) राजा (ब) मैनेजर (स) लुट्टन सिंह (द) दारा सिंह (स)

लघुत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 'उसने क्षत्रिय का काम किया है'– ये शब्द किसने, किसको, कब और क्यों कहे थे ?

उत्तर– यह शब्द राजा श्यामानंद ने पहलवान लुट्टन सिंह के लिए अपने मैनेजर और राजपंडितों को उस समय कहे थे जब उन्होंने राजा साहब के द्वारा लुट्टन को लुट्टन सिंह कहने पर आपत्ति की थी।

प्र:2 पहलवान कालॉ खाँ के सम्बन्ध में कौनसी बात मशहूर थी ?

उत्तर– कालॉ खाँ के सम्बन्ध में यह बात मशहूर थी कि वह ज्यों ही आ–ली कहकर अपने प्रतिद्वंद्वी पर टूटता है तो प्रतिद्वद्वी पहलवान को लकवा मार जाता है।

प्र:3 लुट्टन सिंह के सिर पर कसरत की धुन या पहलवानी का भूत क्यों सवार हुआ था?

उत्तर– जब लुट्टन 9 वर्ष का था तब गाँव के लोग उसकी विधवा सास को तरह–तरह की तकलीफ दिया करते थे अतः उन लोगों से बदला लेने की नियत से ही उस प्रकार कसरत की धुन सवार हुई थी।

प्र:4 जब में मर जाऊ तो मुझे सिर के बल पर नहीं पेट के बल सुलाना, यह शब्द लुट्टन सिंह के कौनसे पक्ष को उद्घाटित करते है ?

उत्तर– ये शब्द लुट्टन सिंह के संघर्षशील और उज्ज्वल पक्ष को उद्घाटित करते है क्योकि लुट्टन सिंह ने जीवन के किसी परिस्थिति में हार नहीं मानी और ना ही कभी मानना चाहा।

प्र:5 लुट्टन सिंह से ऐसा क्यों कहा कि मेरा गुरू कोई पहलवान नही यह ढोल है ?

उत्तर– क्योकि लुट्टन पहलवान ढोलक को ही अपना गुरू मानता था उसकी आवाज से ही उसने शक्ति और दाव–पेंच की परीक्षा ली तथा प्रसिद्ध पहलवान चांद सिंह को पराजित कर वह राजपहलवान बना।

प्र:6 पहलवान की ढोलक नामक कहानी में भारत पर इंडिया छा जाने की समस्या व्यक्त हुई है कैसे?

उत्तर– राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आ जाना केवल व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन नहीं है बल्कि पुरानी व्यवस्था का पूरी तरह बदल जाने का प्रतीक है सभ्यता के नाम पर पुरानी व्यवस्थाएँ, परम्पराएँ, कलाएँ और कलाकार अप्रासंगिक होते जा रहे है तथा आधुनिक व्यवस्था के नाम पर नई व्यवस्था आरोपित कि जा रही है।

नए राजकुमार के आते ही व्यवस्था परिवर्तन होना तथा पुरानी कला और कलाकार से हटाकर दगंल का स्थान घोड़ो की रेस को देना अपने आप में भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या ही है।

प्र:7 गांव में महामारी फैलने और अपने बेटो के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान रात भर ढ़ोलक क्यों बजाता था?

उत्तर– क्योकि वह स्वयं भी उस दुःख को महसुस कर रहा था तथा गांव के लोगों ने भी जीवन जीने का संचार कर रहा था। लुट्टन सिंह पहलवान अदम्य साहस और जिजीविषा वाला आदमी था। वह किसी भी विपरित परिस्थिति में हार नहीं मानता था। ऐसे में वह स्वयं भी जीना चाहता था तथा लोगों में भी जीवन जीने की शक्ति का संचार करना चाहता था।

शेखावाटी मिशन–100

निंबन्धात्मक प्रश्नोत्तर–

प्र:1 'पहलवान की ढ़ोलक' नामक कहानी में 'लुट्टन सिंह' एक ऐसा पात्र है जो आरम्भ से मृत्युपर्यन्त जिजीविषा का अदभुत दस्तावेज है'' कैसे? समझाइए–

अथवा

पहलवान की ढ़ोलक नामक कहानी में निहीत संदेश को अपने शब्दों में लिखिए –

उत्तर– 'फणीश्वरनाथ रेणु' द्वारा रचित 'पहलवान की ढोलक' कहानी हमें यह संदेश देती है कि अदम्य साहस और जिजीविषा वाला व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता है वह स्वयम् भी जीता है और दूसरे लोगों के अंदर भी जीवन जीने की शक्ति का संचार करता है। साथ ही यह कहानी हमें लोक कला एवं लोक कलाकारों के संरक्षण का भी संदेश देती है।

प्र:2 पहलवान की ढ़ोलक नामक कहानी में भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या अभिव्यक्त हुई है कैसे?

उत्तर– 'पहलवान की ढ़ोलक' नामक कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है राजा साहब की जगह नए राजकुमार केवल व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन नहीं बल्कि पुरानी व्यवस्था के पूरी तरह बदल जाने का प्रतीक है। सभ्यता के नाम पर पुरानी व्यवस्थाएँ, पुरानी कलाएँ और कलाकार अप्रासंगिक होते जा रहे है तथा आधुनिक व्यवस्था के नाम पर नई व्यवस्था आरोपित की जा रही है। उदाहरण के लिए नए राजकुमार के आते ही व्यवस्था परिवर्तन होना तथा पुरानी कला और कलाकार को हटाकर दंगल का स्थान घोड़ों की रेस को देना अपने आप में भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या है।

शेखावाटी मिशन–100

अध्याय–5 शिरीष के फूल (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

बहुचयनात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 हजारी प्रसाद के जन्म से सम्बंधित स्थान है

(अ) आरत दूबे का छ परा (ब) बलिया (द)

(स) उत्तरप्रदेश (द) उपर्युक्त सभी

प्र:2 सत्कवि होने की प्रमुख शर्ते क्या है?

(अ) अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता (ब) विद्ग्ध प्रेमी के समान हृदय (स)

(स) अ व ब दोनों (द) जरा व मृत्यु

प्र:3 'शिरीष के फूल' नामक अध्याय का लेखक कौन है?

(अं) रघुवीर सहाय (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ब)

(स) जैनेन्द्र कुमार (द) सुर्यकांत त्रिपाठी निराला

प्र:4 बाणभट्ट की आत्मकथा किसका उपन्यास है?

(अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ब) निराला

(स) जैनेन्द्र कुमार (द) भीमराव आम्बेडकर (अ)

प्र:5 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' किसका निबंध संग्रह है?

(स) बाणभट्ट (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(स) हरिषेण (द) आलोक धन्वा (ब)

प्र:6 शिरीष की तुलना की गई हैं–

(अ) अवधूत से (ब) हाथी से (स) भिखारी से (द) उपर्युक्त सभी से (अ)

प्र:7 किस पेड़ के फल सबसे मजबूत होते हैं,

(अ) अशोक (ब) शिरीष (स) अश्ष्टि (द) धाकड़ (ब)

प्र:8 परवर्ती का अर्थ–

(अ) पहले (ब) बाद में (स) आगे–पीछे (द) दाये – बाये (ब)

प्र:9 शिरीष के फूल खिलना आरम्भ होते–

(अ) शीत ऋतु (ब) बसंत ऋतु (स) ग्रीष्म ऋतु (द) शिशिर ऋतु (ब)

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर–

प्र:1 प्रस्तुत निबंध में सत्कवि होने की क्या शर्ते रखी है।

उत्तर– (i) अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता

(ii) विदग्ध प्रेमी के समान हृदय

शेखावाटी मिशन-100

प्र:2 संसार में अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य किसे बताया गया है?

उत्तर– जरा और मृत्यु ।

प्र:3 शिरीष की तुलना अवधूत से क्यों की गई है?

उत्तर– शिरीष की तुलना अवधूत से की गई है। अवधूत जीवन की कठिनतम परिस्थितियों में भी उसी प्रकार मस्त रहता है जिस प्रकार सुख–दुःख और आनंद के क्षणों में रहता है। शिरीष भी भीषण गर्मी तथा लू में हरा–भरा तथा सुन्दर फूलो से लदा–फदा रहता है

प्र:4 परवर्ती के कवि कौन थे?

उत्तर– परवर्ती का अर्थ बाद के अर्थात् कालिदास के बाद के कवि।

प्र:5 शिरीष के फलों को देखकर लेखक को किसकी याद आती है और क्यों?

उत्तर– पुरानी पीढ़ी के राजनेताओं की क्योंकि जब तक नई पीढ़ी के लोग धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक हो जमे रहते हैं।

प्र:6 पुराने की अधिकार लिप्सा से लेखक का क्या आशय है–

उत्तर– पुरानी पीढ़ी के लोग अपने पद और अधिकारों को छोड़ना नहीं चाहते पद से चिपके रहने की चाह और दूसरों में अधिकार न देने का भाव ही अधिकार लिप्सा कहलाती है,

प्र:7 शिरीष की तुलना अवधूत से क्यों की गई है।

उत्तर– शिरीष अवधूत की तरह विकट परिस्थितियों में स्थिर बना रहता है जिस प्रकार अवधूत कठिन परिस्थितियों में मस्त रहता है।

प्र:8 'शिरीष के फूल' नामक निबंध में कालिदास, सुमित्रानंदन पत और रविन्द्रनाथ टैगोर में क्या समानता बताई,

उत्तर– (1) तीनों कवि विद्वग्ध प्रेमी के समान हृदय को प्राप्त कर चुके है।

(2) तीनो कवि अनासक्त योगी की स्थिर –प्रज्ञता को प्राप्त कर चुके है।

प्र:9 'शिरीष के फूल' नामक निबंध में पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी के मध्य द्वन्द्व को स्पष्ट किया है कैसे ?

उत्तर– प्रस्तुत निबंध में लेखक ने साहित्य समाज और राजनीति में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी मध्य द्वन्द्व को संकेतित किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि पुरानी पीढ़ी के लोग अपने पद और अधिकार छोड़ना नहीं चाहते तथा शिरीष के फलों के समान चिपके रहते है तो दूसरी पीढ़ी के लोग अपना अधिकार समझकर जाने के लिए संघर्ष करते है अतः पुरानी पीढी का अधिकार लिप्सु बने रहना और नई पीढ़ी का उन्हें पाने के लिए सघर्ष करना द्वन्द्व के रूप में उजागर हुआ है।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नोत्तर–

प्र:1 'शिरीष के फूल' नामक निबंध में लेखक ने पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के मध्य द्वन्द्व को संकेतित किया है। कैसे?

उत्तर– प्रस्तुत निबंध में लेखक ने साहित्य समाज और राजनीति में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के मध्य– द्वन्द्व को संकेतित किया है। उन्होंने स्पष्ट कहा– है कि पुरानी पीढ़ी के लोग अपने पद और अधिकारों को छोड़ना नहीं चाहते तथा

शेखावाटी मिशन–100

शिरीष के फलों के समान चिपके रहते है तो दूसरी और नई पीढ़ी के लोग इन्हें अपना अधिकार समझकर पाने के लिए संघर्ष करते हैं।

अतः पुरानी पीढ़ी का अधिकार लिप्सु बने रहना और नई पीढ़ी का उन्हें पाने के लिए संघर्ष करना ही दोनों के मध्य एक द्वन्द्व को उजागर करता हैं।

प्र:2 'शिरीष के फूल' के माध्यम से लेखक ने संघर्षशीलता एवं जिजीविषा की जो व्यंजना की है। उसे स्पष्ट कीजिए

उत्तर— 'शिरीष के फूल' पाठ के माध्यम से लेखक ने बताया है कि शिरीष वृक्ष भीषण गर्मी व लू के प्रभाव को सहता हुआ अविचल खड़ा रहता है और शान्त भाव से सुन्दर फूलों की सृष्टि करता है। जब तेज गर्मी में भूमि तपती रहती है, तब शिरीष निश्चिंत भाव से खड़ा रहता है और समाज को भी जीवन की कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए व्याकुल एवं विचलित नहीं होने का संदेश देता है।

प्र:3 'हाय वह अवधूत आज कहाँ है?' 'शिरीष के फूल' निबंध के आधार पर बताइए कि उपर्युक्त वाक्य किसके लिए कहा गया है और क्यो?

उत्तर— उपर्युक्त वाक्य गांधी जी के लिए कहा गया है। गाँधी जी को अवधूत की संज्ञा देते हुए लेखक कहता है कि गाँधीजी अवधूत की तरह ही अनासक्त व समभाव रखते हुए मारकाट, अग्निदाह, लूटपाट, खून खच्चर जैसी विपरित परिस्थितियों में अपने सत्य, अहिंसा के सिद्धान्तों के साथ निरन्तर आजादी का मार्ग प्रशस्त करते रहे। आज की विपरित परिस्थितियों में अपने सत्य, अंहिसा के सिद्धान्तों के साथ निरन्तर आजादी का मार्ग प्रशस्त करते रहे। आज की विपरित परिस्थितियों मे ऐसे मनीषी का न होना लेखक के मन को कचोटता है और वह कहता है हाय! वह अवधूत कहाँ है।

शेखावाटी मिशन—100

अध्याय–6 (श्रम विभाजन और जाति प्रथा)

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर

बहुचयात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' का हिन्दी रूपांतरण निम्न में से किसने किया है

(अ) आनंद यादव (ब) ललई सिंह यादव

(स) महादेवी वर्मा (द) आलोक धन्वा (ब)

प्र:2 दूध पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है और इसी का दूसरा नाम भीमराव आंबेडकर ने किसे कहा है?

(अ) राजतंत्र (ब) तानाशाहम् (स)

(स) लोकतंत्र (द) उपर्युक्त सभी

प्र:3 बाबा साहब भीमराव आंबेडकर का जन्म कहाँ हुआ था?

(अ) महू (उत्तरप्रदेश) (ब) महू (मध्यप्रदेश) (ब)

(स) महू (आंध्रप्रदेश) (द) महू (उरुणाचल प्रदेश)

प्र:4 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' किसकी रचना है।

(अ) आनंद यादव (ब) निराला (स)

(स) आंबेडकर (द) हजारी प्रसाद

प्र:5 भीमराव आंबेडकर का जन्म कब हुआ ?

(अ) 14 अप्रैल 1891 (ब) 16 अप्रैल 1891 (अ)

(स) 15 अप्रैल 1891 (द) 14 जनवरी 1891

प्र:6 डॉ भीमराव अम्बेडकर के रचनात्मक प्रेरक थे–

(ब) कबीर (ब) महात्मा गाँधी (स) ज्योतिबा फुले (द) विवेकानंद (स)

प्र:7 श्रम विभाजन गम्भीर दोष है.

(अ) अंधविश्वास (ब) संसाधनों का (स) जातिप्रथा (द) परम्परा का (स)

प्र:8 स्वंतत्रता, समता और भ्रातृत्व भाव से गठित समाज है

(अ) अनगढ़ (ब) तर्कशील (स) आदर्श समाज (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

प्र:9 जाति प्रथा समाज में पैदा करती है–

(अ) सम्मानता (ब) अमीरी (स) ऊँच नीच का भेदभाव (द) गरीब (स)

प्र:10 डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अनुसार आदर्श समाज में कौनसे तत्त्व होने चाहिए?

उत्तर– समानता, स्वतत्रंता व बंधुता

शेखावाटी मिशन–100

प्र:11 व्यवहार्य सिद्धांत क्या है।

उत्तर– व्यवहार में लाये गये सभी नियम यही है कि सभी के साथ समान व्यवहार किया जाए।

प्र:12 मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है।

उत्तर– 1. शारीरिक वंश परम्परा 2. सामाजिक उत्तराधिकारी 3. मनुष्य के प्रयत्न पर।

प्र:13 जाति प्रथा के दोष बताइए–

उत्तर– समाज को ऊँच–नीच में बाँटना, अस्पृश्यता, आपसी भाईचारे को खत्म करना

प्र:14 भीमराव अम्बेडकर के अनुसार दासता क्या है।

उत्तर– किसी मनुष्य को दूसरे मनुष्य के अधीन रहकर उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करना तथा अपनी इच्छा और मन महत्वहीन होना ही दासता है।

प्र:15 एनीहिलेगन ऑफ कास्ट का हिन्दी रूपातंरण किसने दिया–

उत्तर– ललई सिंह यादव ने।

प्र:16 जाति प्रथा को श्रम विभाजन का एक ही रुप न मानने के पीछे अम्बेडकर ने क्या तर्क दिये–

उत्तर– 1. ऐसा विभाजन मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं होता ।

2. इसके अंतर्गत मनुष्य की क्षमता का विचार किए बिना ही उसे अपने पेशे से वंश के अनुसार बांध देना ।

3. ऐसे में व्यक्ति से जिस पेशे से बाधा जाता है वह उसके लिए अनुप्रयुक्त एवं अपर्याप्त हो सकता है।

4. इसके अंतर्गत शोषण होता है तथा संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति भी नहीं दी जाती है।

लघूतरात्मक प्रश्न–

प्र:1 मनुष्य की क्षमता किस बातों पर निर्भर करती है? बाबा साहेब आंबेडकर के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– **(i)** शारीरिक वंश परम्परा

(ii) सामाजिक उत्तराधिकार या पैतृक सम्पदा

(iii) मनुष्य के अपने प्रयत्न।

प्र:2 'असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार' से आप क्या समझते है ? 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' नामक अध्याय के अनुसार स्पष्ट करें। क्या आप इस दृष्टिकोण से सहमत है?

उत्तर– डॉ आम्बेडकर के इस कथन से हम सहमत नहीं हैं क्योंकि श्रम करने की शक्ति या शरीर रचना के अनुसार सभी व्यक्ति समान नहीं होते हैं। ऐसे में असमान प्रयत्न या प्रयास होने के कारण समाज के लोगों के साथ समान व्यवहार किया जाना अनुचित है ऐसी स्थिति में व्यक्ति स्वयं को कमजोर एवं निराश महसूस करने लगता है एवं समाज में आगे नहीं बढ़ पाता है।

प्र:3 भीमराव आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज के कौनसे तत्व होने चाहिए।

उत्तर– समानता, स्वतंत्रता व बंधुता ।

शेखावाटी मिशन–100

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 'श्रम विभाजन एवं जाति प्रथा' नामक अध्याय में आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक है। कैसे?

उत्तर– भीमराव आंबेडकर विरचित द्वारा लेख के आधार पर जातिप्रथा से समाज को आर्थिक नुकसान होता है क्योंकि इसके अतंर्गत व्यक्ति को जीवनभर के लिए उसके वंशानुगत पेशे में बाँध दिया जाता है ऐसी स्थिति में उसके रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण को दबाकर वंशानुगत पेशे को अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है। अतः ऐसी स्थिति– में मनुष्य की कार्यकुशलता एवं कार्य के प्रति चेष्टा कमजोर पड़ जाती है जिससे उसे इच्छित आर्थिक लाभ नहीं मिल पाता है फलतः उसे आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

प्र:2 भीमराव आंबेडकर के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है।

उत्तर– लेखक के अनुसार 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जाता है वरन उसके अतंर्गत कुछ लोगो को दूसरे लोगो के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है हांलाकि यह स्थिति कानूनी पराधीन न होने पर भी सामान्यता भारत की जाति प्रथा में देखी जाती है। इसके अतंर्गत कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध ऐसा कार्य करने पर मजबूर होना पड़ता है जो उसके लिए अपर्याप्त एवं अनुपयुक्त है।

शेखावाटी मिशन–100

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

प्र:1 सप्रसंग व्याख्या –बाजार दर्शन–

"बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति–शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी।"

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश मनोवैज्ञानिक कथा धारा के प्रवर्तक व प्रेमचन्दोत्तर युग के महत्वपूर्ण कथाकार, जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित विचारात्मक निबंध 'बाजार दर्शन' शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग–इस गद्यांश में निबंधकार ने बताया है कि बजार को सार्थकता देने वाले, उसकी उपयोगिता सिद्ध करने वाले लोग कौन से है।

व्याख्या–प्रस्तुत गद्यांश में निबंधकार ने बाजार की सार्थकता के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए हैं कि बाजार को सार्थकता तभी प्राप्त होती है जब मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुरूप वस्तुएँ खरीदता है अर्थात बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो यह जानता है कि उसे किस चीज की आवश्यकता है और कौनसी चीज उसके लिए लाभदायक है जो मनुष्य यह नहीं जानता कि उसे क्या चाहिए और वह अपने पैसे कि 'पर्चेजिंग

पावर' के अनुपात में वस्तुएँ खरीदता है तो वह केवल एक विनाशक शक्ति या एक शैतानी शक्ति ही बाजार को देता है जिसे व्यंग्य की शक्ति भी कह सकते है। ऐसे कार्य से न तो बाजार को लाभ होता है और न ही बाजार से क्रेता को सच्चा लाभ प्राप्त होता है। ऐसे लोग केवल बाजारूपन बढाते है। जिसका मतलब है कपट और धोखाधड़ी बढाना। कपट का बढ़ाना। अर्थात एक दूसरे के प्रति सद्भाव का घटना। जब सद्भावना की कमी होती है तो मनुष्य आपस में भाई भाई नहीं रह जाते उनके बारे में एक दूसरे के प्रति अपनेपन की भावना नहीं रहती।

विशेषः–

(क) गद्यांश की भाषा सरल है।

(ख) शैली व्याख्यात्मक एवं विवेचनात्मक है।

(ग) निबंधकार जैनेन्द्र कुमार ने बाजार को विनाशक शक्ति देने की अपेक्षा सार्थकता देने की बात कही है।

2. सप्रसंग व्याख्या–पहलवान की ढ़ोलक–

निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

अंधेरी रात चुपचाप .... खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

सन्दर्भः–

उपर्युक्त गद्यांश हमारी पाठयपुस्तक आरोह भाग–2 के पाठ 'पहलवान की ढोलक' कहानी से लिया लिया है। कहानीकार फणीश्वर नाथ रेणु है।

प्रसंग–

इस गद्यावतरण में मलेरिया और हैजे की चपेट में आये गाँव की भयानकता का वर्णन किया गया है।

व्याख्या–

कहानीकार कहते है कि पूरा गाँव हैजा और मलेरिया की चपेट में आया हुआ है। गाँव के गाँव खाली होने लगे है। रोजाना दो–तीन लाशें घरो से निकलती थी। ऐसा लगता मानो अंधेरी रात भी आँसू बहा रही है। चारों तरफ गाँव में खामोशी फैली हुई थी । प्रत्येक घर से निकलने वाला रुदन और आहें उस खामोशी में ही दबी जा रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कही कोई प्रकाश नही नजर आता था। ऐसी स्थिति को देखकर आकाश का कोई तारा टूटकर अपनी संवेदना व्यक्त करने के लिए पृथ्वी पर आना भी चाहता था तो दूरी के कारण उसकी स्वयं की चमक और शक्ति रास्ते मे ही खत्म हो जाती थी। ऐसा मालूम होता, मानों अन्य तारे उसकी भावुकता तथा असफलता को देखकर उसका उपहास उड़ाते थे।

विशेषः–(1) महामारी की भयानकता का करुण चित्र प्रकट हुआ है।

(2) भाषा सहज–सरल व बोधगम्य है।

शेखावाटी मिशन–100

शिरीष के फूल

3. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

जेठ की जलती धूप .... से तो लँडूरे भले ।

सन्दर्भः – प्रस्तुत गद्यांश पाठय पुस्तक 'आरोह' भाग–2 के पाठ 'शिरीष के फूल' निबंध से लिया गया है। निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी है।

प्रसंग –प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने शिरीष के फूल की विशेषता का वर्णन किया है।

व्याख्याः–

द्विवेदी जी ने बताया है कि ज्येष्ठ माह में सूर्य की गर्मी इतनी तेज हो जाती है कि धरती धुआँ रहित अग्निकुण्ड हो जाती है। अर्थात सूर्य की तीव्र गर्मी से धरती आग की तरह जलती है जिससे अधिकतर पेड़ पौधे झुलस जाते है, किन्तु इस विषम परिस्थिति में भी शिरीष के पेड़ ऊपर से नीचे तक फूलो से लदे रहते हैं। ज्येष्ठ की इस भयंकर गर्मी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। तेज गमी में कम ही पेड़ फलने फूलने की हिम्मत रखते है। वैसे तो आस–पास कर्णिकार एवं अमलतास के पेड़ है किन्तु शिरीष के साथ अमलतास के फूलों से तुलना नही की जा सकती है। अमलतास का पौधा फूलों सहित केवल दस पन्द्रह दिनों के लिए ही फूलता है। पलाश का फूल सिर्फ वसंत ऋतु में फलता फूलता है, संत कबीरदास को इस तरह दस–पन्द्रह दिनो के लिए खिलना पसंद नहीं था। उनका मानना है कि दस दिन खिलने के बाद ठूँठ हो जाना अच्छी बात नहीं है। ऐसे पेड़–पौधो की शोभा का क्या वर्णन करना जो जीवन शक्ति से भरपूर नहीं है। द्विवेदी जी कहते है कि यह उसी प्रकार है जैसे पूँछवाले जानवरों से तो लँडूरा अर्थात पूँछविहीन ही रहना अच्छा है। लेखक का संकेत दिखावटी व भ्रष्ट नेताओं की तरफ है जिनका महत्त्व कम समय के लिए होता है

विशेषः– (1) खड़ी बोली हिन्दी के साथ, तत्सम व देशज शब्दो का प्रयोग हुआ है।

(2) पलाश व अमलतास की तुलना मौका परस्त नेताओं से की है।

सप्रसंग व्याख्या –मेरी कल्पना का आदर्श समाज–

4. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

'समता का औचित्य .... अलग–अलग कर सकें।

सन्दर्भः–

प्रस्तुत गद्यांश पाठयपुस्तक आरोह–भाग–2 में डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा लिखित 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' लेख से लिया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रसंगः– इसमें डॉ आंबेडकर ने एक राजनेता की दृष्टि से 'समता' के प्रति दृष्टिकोण होना चाहिए, बताया गया है।

व्याख्याः–

डॉ० आंबेडकर कहते हैं कि जातिप्रथा या आदर्श समाज दोनों का ही आधार 'समता' पर टिका है। लेकिन समता का उचित भाव या अवस्था सिर्फ यहीं आकर खत्म नहीं होती है। एक राजनेता का जनता के प्रति संतुलित दृष्टिकोण। एक राजनीतिज्ञ का सामना जनता की बहुत बड़ी संख्या से होता है। राजनेता के पास अपनी जनता से व्यवहार करते समय, उनसे जानकारी लेते समय, उनकी आवश्यकताओं को समझने के लिए न तो पर्याप्त समय होता है और न ही तथ्यपूर्ण जानकारी। राजनेता के लिए यह समय बहुत मुश्किल होता है कि वह अपनी जनता की जरूरतों एवं क्षमताओं के आधार पर जरूरी व आवश्यक व्यवहार अलग– अलग तरह से कर सके। आशय यही है कि समता ही वह तथ्य है जिसे अपनाकर बड़ी मात्रा में सबके साथ समान व्यवहार संभव भी है और उचित भी है।

विशेष (1) डॉ. आंबेडकर ने समतामूलक आदर्श समाज की रूपरेखा प्रस्तुत की है।

(2) भाषा सरल, सहज व बोधगम्य है।

व्याख्या गद्य आरोह

5. शास्त्र का प्रश्न भी भक्तिन अपनी सुविधा अनुसार सुलझा लेती है। मुझे स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता, अतः मैंने भक्तिन को रोका। उसने अकुंठित भाव से उतर दिया कि शास्त्र में लिखा है। कुतूहलवश मैं पूछ ही बैठी – 'क्या लिखा है।' तुरन्त उत्तर मिला 'तीरथ गए मुंडए सिद्ध।' कौनसे शास्त्र का रहस्यमयी सूत्र है, यह जान लेना मेरे लिए संभव ही नहीं था। अतः मैं हारकर मौन रही और भक्तिन का चूड़ाकर्म हर बृहस्पतिवार को, एक दरिद्र नापित के गंगाजल से धूले उस्तरे द्वारा यथाविधि निष्पन्न होता रहा।

<u>**संदर्भ–**</u> ने प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग–2' में लिखित भक्तिन नामक अध्याय से लिया गया है।

<u>**प्रसंग**</u> – प्रस्तुत अंश में बताया गया है कि भक्तिन भले ही पढ़ी लिखी नहीं थी परंतु उसमे व्यवहार–बुद्धि की कमी नहीं भी।

<u>**व्याख्या–**</u> भक्तिन ने कभी किसी शास्त्र का दर्शन तक नहीं किया लेकिन अपनी बात मनवाने के लिए शास्त्र की दुहाई देने में थोड़ा भी संकोच नहीं करती। लेखिका को स्त्रियों का सिर मुड़ाना अच्छा नहीं लगता लेकिन भक्तिन हर बृहस्पतिवार को अपना सिर घुटवा लेती थी। महादेवी ने जब उसे रोका तो उसने बिना संकोच किए कह दिया कि ऐसा शास्त्रों में लिखा है जब लेखिका ने पूछा क्या लिखा है तो भक्तिन ने तुरंत उत्तर दिया 'तीर्थ गए मुडाए सिद्ध' इस शास्त्र वचन की सत्यता का खोज कर पाना महादेवी के लिए सम्भव नहीं था। अतः चुप रह गई। भक्तिन ने हर बृहस्पतिवार को सिर मुड़ाना जारी रखा एक दरिद्र नाई के उस्तरे को गंगाजल में धुलवाकर भक्तिन यथाविधि से यह कार्य करती रही।

विशेषः– 1. प्रस्तुत गद्य की भाषा सहज व सरल है।

2. भक्तिन की वचन चतुराई का वर्णन ।

शेखावाटी मिशन–100

3. शैली में मधुर व्यंग्य के पुट से आकर्षण उत्पन्न किया गया है।

6. उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा–सा उपाय है वह यह कि बाजार जाओं तो खाली मन न हो। मन खाली हो, तब बाजार न जाओं। कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला का फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ –न– कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की उसली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

संदर्भ :– प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग–के अध्याय–2' के अध्याय 'बाजार दर्शन' से लिया गया है जिसरे लेखक जैनेन्द्र कुमार है।

प्रसंगः– प्रस्तुत अंश में बाजार के जादू से बचने का सरल उपाय है जब मन खाली हो तब बाजार जाने से बचना चाहिए। मन खाली होगा तो व्यर्थ की वस्तुएँ मन में ललचाएँगी, पैसे का अपव्यय होगा। अगर मन भरा हो तो बाजार का प्रभाव नहीं पड़ेगा जिस प्रकार गर्मी के मौसम में चल रही हो तो पानी पीकर निकलना चाहिए इससे लू का लूपन नष्ट हो जाता है। जब हमारा मन किसी लक्ष्य से भरा होगा तब यह बाजार का आकर्षण हम पर कोई प्रभाव नहीं डालेगा और न ही हमे हानि पहुंचा पाएगा लेखक के अनुसार बाजार हमारा सच्चा अहसान मानेगा जब हम उसे सच्चा लाभ प्रदान करे।

विशेष– 1. भाषा सरल होते हुए भी गूढ विचारों को स्पष्ट कर रही है।

2. प्रस्तुत गद्य बाजार की कृतार्थता स्पष्ट करता

3. भाषा शैली व्याख्यात्मक और तार्किक है

7. आज हम देश के लिए करते क्या है। मांगे हर क्षेत्र में बड़ी–बड़ी है पर त्याग का कही नाम– निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमान लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते है पर क्या हमने कभी जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन पा रहे हैं। काले मेघा दल के दल उमड़ते है, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है बैल पियासे के पियासे रह जाते है। आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ?

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांग पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग–2' में संकलित पाठ 'काले मेघा पानी दे' से लिया गया है जिसके लेखक धर्मवीर भारती है।

प्रसंगः– प्रस्तुत अंश में लेखक नागरिकों को उनके कर्तव्य देश के प्रति स्मरण करा रहा है।

व्याख्या– आज के नागरिक आशा करते हैं कि के देश और सरकार उनकी सभी सुविधाओं का प्रबंध करे पर क्या हम देशवासी सोचते है कि हमने देश के लिए किया क्या व क्या करेंगे। हर क्षेत्र में नागरिक देश से बड़ी–बड़ी उम्मीद लगाए बैठा है, पर उसमें देश के लिए त्याग की भावना नाम मात्र की भी नहीं मिलती। लोग स्वयं को बड़े ईमानदार समझते है और दूसरों के दुर्गुणों का बखान करते है। इस काम में उन्हें बड़ा रास आता है कि किस–किस ने क्या–क्या भ्रष्टाचार और घोटाला किया परंतु अपने अंदर कभी झांक के नहीं देखते कि कही वे स्वयं तो भ्रष्टाचार में सहायक नहीं है आज देश में अनेक योजनाएं बनती है लाखों करोड़ो धनराशि व्यय होती है लेकिन

शेखावाटी मिशन–100

जनता के हाथ कुछ नहीं लगता। मेघ खूब बरसते है परंतु जनता के दुर्भाग्य की गगरी रीती रह जाती है इतनी वर्षा में भी बैल प्यासे रह जाते हैं।

विशेषः– 1. प्रस्तुत गद्यांश की भाषा सहज व सरल है।
2. व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग ।
3. लेखक की अभिलाषा है कि यह स्थिति बदलें ।
4. लेखक ने देश के नागरिकों की घटिया मानसिकता पर प्रहार किया है।

8. जाति–प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक– सुरक्षा तथा सम्पति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योकि इस प्रकार की स्वतत्रंता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है। तो उसका अर्थ उसे दासता में जकड़ कर रखना होगा क्योकि दासता कोई कानूनी परिधान को नही कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति सम्मिलित है जिसमे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़े। यह स्थिति कानूनी परिधान न होने पर भी पाई जा सकती है।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांग 'आरोह भाग–2' में संकलित है यह अध्याय 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' से लिया गया है जिसके लेखक भीमराव अम्बेडकर है।

प्रसंग– प्रस्तुत अंश में बाबा साहेब ने जाति प्रथा के पोषकों पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या– बाबा साहेब ने जाति प्रथा के समर्थकों पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि जाति प्रथा के समर्थक जीवन, शारीरिक सुरक्षा तथा सम्पति के अधिकार को तो स्वीकार करने को तैयार रहते है लेकिन वे मनुष्य को उसकी क्षमता और उसके प्रभावशाली प्रयोग की स्वतत्रंता नहीं देना चाहेंगे क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता। यह स्वतत्रंता किसी को नहीं दी जा सकती। इसका आशय व्यक्ति को दासता में जकड़े रखना होगा ।

विशेष :– 1. प्रस्तुत गद्यांश की भाषा सहज व सरल है।
2. शैली व्याख्यात्मक व तार्किक है।
3. लेखक ने स्वेच्छानुसार पेशा न चुन पाने की स्थिति को एक प्रकार दासता माना है।

1. व्यक्तित्व व कृतित्व

प्रश्नः1 महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद (उ०प्र०) में 26 मार्च, 1907 ई. में हुआ। इनकी आरम्भिक शिक्षा इन्दौर के मिशन स्कूल में हुई थी। इनका विवाह अल्पायु में हो गया पर इनका अध्ययन चलता रहा। 1929 में बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहती थी परन्तु महात्मा गांधी के सम्पर्क में आने में बाद समाज सेवा की ओर उन्मुख हो गई। आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्री होने के कारण उन्हें आधुनिक युग की मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती भी कहा है। इनका कार्यक्षेत्र

शेखावाटी मिशन–100

बहुमुखी रहा है।

इनकी रचनाएँ– नीहार, रश्मि, नीरजा यामा (काव्य संग्रह) अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार (संस्मरण); श्रृंखला की कड़ियां, आपदा, भारतीय संस्कृति के स्वर (निबंध) आदि। ज्ञानपीठ पुरस्कार, पद्म विभूषण, भारत–भारती पुरस्कारो सम्मानित लेखिका व कवयित्री की मृत्यु 11 सितम्बर 1987 ई० में हुई।

2. जैनेन्द्र कुमार

प्रश्न– जैनेन्द्र कुमार का जीवन परिचय लिखिए –

उत्तर– लेखक जैनेन्द्र कुमार का जन्म 2 जनवरी, 1905 ई० में अलीगढ में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा हस्तिनापुर के गुरुकुल तथा उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हुई। हिंदी उपन्यास के इतिहास में मनोविश्लेषणात्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में मान्य हैं। जैनेन्द्र अपने पात्रों में सामान्य में सूक्ष्म संकेतो की निहिति की खोज करके उन्हें बड़े कौशल से प्रस्तुत करते है।

उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ–

परख, अनाम, स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्धन, मुक्तिबोध (उपन्यास संग्रह), वातायन, एक रात, फांसी, दो चिड़िया, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब (कहानी संग्रह); जड़ की बात पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रे, सोच–विचार (निबंध संग्रह) आदि है। साहित्य रचना के दौरान इन्हें पद्मभूषण, भारत– भारती तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। इनका देहान्त 24 दिसम्बर, 1990 में हुआ।

3. धर्मवीर भारती

प्रश्न:3 धर्मवीर भारती का जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर–धर्मवीर भारती का जन्म 25 सितम्बर, 1926 को इलाहाबाद में हुआ। इलाहाबाद में ही उच्च शिक्षा पाई। वे मूल रूप से व्यक्ति– स्वातंत्र्य, मानवीय संकट एवं रोमानी चेतना के रचनाकार हैं। उनकी कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास निबंध, गीतिनाट्य और रिपोर्ताज हिंदी साहित्य की उपलब्धियाँ हैं। वे एक समय की प्रख्यात पत्रिका धर्मयुग के प्रधान संपादक भी थे।

उनकी प्रमुख रचनाएँ– 'कनुप्रिया, सात गीत वर्ष, ठंडा लोहा, (कविता संग्रह); बंद गली का आखिरी मकान (कहानी संग्रह) सूरज का सातवां घोड़ा, गुनाहो का देवता (उपन्यास); अँधा युग (गीतिनाट्य); पश्यंती, कहनी अनकहनी, मानव मूल्य और साहित्य, ठेले पर हिमालय (निबंध–संग्रह) आदि है। पद्मश्री, व्यास सम्मान एवं साहित्य से जुड़े अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इनका देहान्त सन् 1997 में हुआ ।

शेखावाटी मिशन–100

4. हजारी प्रसाद

प्रश्नः4 'हजारी प्रसाद द्विवेदी' का जीवन परिचय व साहित्यिक परिचय लिखिए–

उत्तर– द्विवेदी जी का जन्म सन 1907, आरत दुबे का छपरा, बलिया उत्तर प्रदेश में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा पर घर प्राप्त करने के बाद आपने काशी तथा लखनऊ, विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षा प्राप्त की।

हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला आदि भाषाओं व उनके साहित्य के साथ इतिहास, संस्कृति, धर्म दर्शन और आधुनिक ज्ञान विज्ञान की व्यापकता व गहनता में बैठ कर उनका अगाध पांडित्य नवीन मानवतावादी सर्जना और आलोचना की क्षमता लेकर प्रकट हुआ है।

प्रमुख रचनाएँ–

इनकी प्रमुख रचनाएँ अशोक के फूल, कूटज, विचार प्रवाह, आलोक पर्व (निबंध संग्रह) बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, पुनर्नवा (उपन्यास) हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य की भूमिका (आलोचना ग्रन्थ) आदि है। इन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' प्राप्त हुआ। साहित्य रचना करते हुए सन 1979. दिल्ली में देहान्त हुआ।

आरोह (पद्य भाग)

1. हरिवंशराय बच्चन

शेखावाटी मिशन–100

प्र:1 हरिवंश राय बच्चन कैसे कवि माने जाते हैं–

(अ) छायावादी (ब) प्रकृतिवादी (स) हालावादी (द) रहस्यवादी (स)

प्र:2 ''मैं सांसों के दो तार लिए फिरता हूँ।'' पंक्ति का आशय है–

(अ) मैं अपने आप से प्रेम करता हूँ (ब) मैं लोगों से प्रेम के सम्बन्ध रखता

(स) मैं लोगों में प्रेम का संचार करता हूँ (द) मैं लोगों को झंकृत करता हूँ (ब)

प्र:3 'उन्मादों में अवसाद' से तात्पर्य है–

(अ) उग्रता में विषाद (ब) आलस्य में शान्ति (स)

(स) प्रेम के पागलपन में विषाद (द) दुःखों में विषाद

प्र:4 शीतल वाणी में आग से क्या भाव है ?

(अ) मधुरता में जलन (ब) कोमल वाणी में प्रेम की तीव्र उष्मा (ब)

(स) कटुवाणी में वेदना का ताप (द) प्रेम मे भी ईर्ष्या

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 'निशा निमन्त्रण' गीत में कवि ने किस काव्यात्मक चित्रण की कोशिश की है?

उत्तर– कवि हरिवंशराय बच्चन 'निशा निमन्त्रण' से उद्धृत गीत में प्रकृति के दैनिक परिवर्तनशीलता के सन्दर्भ में प्राणीवर्ग (विशेषकर मनुष्य) के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश की है। बहुत ही सरल स्वानुभूत बिम्बों के

जरिये किसी अगोचर सत्य की रूहानी छुअन महसूस कर देना कवि की अलग विशेषता है।

प्र:2 'आत्म परिचय' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर– 'आत्म परिचय' कविता का प्रतिपाद्य अपने को जानने से है, जो कि दुनिया को जानने से कहीं अधिक कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा मीटा होता है। जीवन से पूरी तरह अलग रहना संभव नहीं होता है। फिर भी कवि की दुनिया उसी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान, अपनी पहचान और अपना परिवेश ही होता है। फिर भी संसार से सामंजस्य रखते हुए कवि जीवन में मस्ती आनंद अपनाने का संदेश देता है।

प्र:3 'मैं और, और जग और कहाँ का नाता''– इस कथन से कवि का क्या आशय है?

उत्तर– कवि का आशय है कि संसार के लोग स्वार्थी हैं, वे धन–वैभव के लिए लालायित रहते हैं। इसलिए कवि कहते हैं, कि कहाँ मैं, जो निरपेक्ष स्वार्थ रहित जीवन जीता हूँ, और कहाँ ये संसार जहाँ कदम–कदम पर स्वार्थी लोग है। उनसे मेरा रिश्ता भला कैसे हो सकता है।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 'आत्मपरिचय कविता' में कवि ने अपने व्यक्तित्व की कौन–कौनसी विशेषताओं से अवगत कराया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि हरिवंशराय बच्चन ने 'आत्मपरिचय' कविता में जग की सारी समस्याओं का उत्तरदायित्व अपने पर लिये तथा साथ ही सबके लिए जीवन में प्यार साथ लिये रहना बताया है। कवि को प्रेमहीन अपूर्ण संसार अच्छा नहीं लगता, इसलिये वो अपने स्वप्नों के संसार में ही विचरण करते हैं। कवि सुख दुःख दोनों में ही मग्न रहते है इसलिए वे संसार रूपी सागर की समस्याओं रूपी लहरों पर मस्त रहते हैं। कवि अपनी शीतल वाणी में जोश की आग लेकर घूमते हैं। संसार को मिथ्या जानकर हानि–लाभ, मान–अपमान, सुख–दुःख, सभी अवस्थाओं को समान मानते हैं। विपरीत परिस्थितियाँ उनके जीवन में उत्साह और उमंग भर देती है

प्र:2 'दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' कविता में व्यक्त गुढ अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' कविता में कवि ने सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के अहसास में लक्ष्य प्राप्ति के लिए कुछ करने का जज्बा लिए अर्थ के कविता में व्यक्त किया है। मंजिल की दूरी से घबराकर कुछ लोग प्रयास करना छोड़ देते हैं। मनुष्य आशा–निराशा के बीच झूलने लगता है। यह बीच की स्थिति को व्यक्त करता है। दूसरी स्थिति में यह आशा मनुष्य के जीवन में नव संचार के भाव भरती है, कि हमारे जीवन का एक ध्येय है कि हमारे अपने हमसे स्नेह–प्रेम की आस टिकाये बैठे हैं। तीसरी स्थिति, कवि स्वयं की या एकाकी जीवन व्यतीत करने वालों की स्थिति के बारे में कहते हैं कि जो अकेले है, उन्हें यह ढलता दिन और भी व्याकुल बना देता है।

शेखावाटी मिशन–100

2. 'आलोक धन्वा'

प्र:1 'पतंग' के बहाने किसका सुन्दर चित्रण किया गया है?

(अ) बाल सुलभ इच्छाओं का (ब) प्रकृति का सुन्दर चित्रण (अ)

(स) युवा क्रिया का (द) मन की खुशी का

प्र:2 'खरगोश की आँखों जैसा लाल' कौन प्रतित होता है?

(अ) सर्दी का सूर्य (ब) वर्षा का सूर्य

(स) गर्मी का सूर्य (द) सर्दी का सवैरा (द)

प्र:3 ''पतंगों के साथ–साथ वे भी उड़ रहे हैं'' पंक्ति में वे कौन हैं?

(अ) उनका मन (ब) पक्षी (द)

(स) दूसरों के पतंग (द) बच्चों के लक्ष्य

प्र:4 'पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज एक धागे के सहारे' पंक्ति में अलंकार है–

(अ) मानवीकरण (ब) अतिशयोक्तित (अ)

(स) रुपका (द) उत्प्रेक्षा

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 'पतंग' शीर्षक कविता का प्रतिपाद्य या मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– शरद ऋतु में धरती एवं आकाश स्वच्छ हो जाते हैं। ऐसे में पतंग उड़ाते बच्चों का उल्लास एवं उत्साह देखने लायक हो जाता है। इस तरह प्रस्तुत कविता का प्रतिपाघ ऋतु–सौन्दर्य के साथ बाल मन के उल्लास व उत्साह का चित्रण करता रहा है

प्र:2 ऐसा कब प्रतीत होता है कि पृथ्वी बालकों के पैरों के समीप स्वयं ही धूमती चली आती है? 'पतंग' कविता के आधार पर समझाइये।

उत्तर– जब बच्चे अत्यधिक तेज गति से बैसुध होकर दौड़ते हुए पतंग उड़ाते हैं, तब प्रतीत होता है कि पृथ्वी स्वयं आगे बढ़कर बच्चों के पैरों के समीप पहुँचने का प्रयत्न कर रही है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि, बच्चे दौड़ नहीं रहे है अपितु पृथ्वी स्वयं ही उनके कोमल चरणों की ओर चली आ रही है।

प्र:3 बच्चे और भी निडर कब हो जाते है?

उत्तर– पतंग उड़ाते समय बच्चे जब भी छत की खतरनाक दिवारों एवं मुंडेरों से नीचे गिर जाते हैं, और उस दुर्घटना में चोटग्रस्त होने से बच जाते हैं, तब में पूरी तरह निडर हो जाते हैं, और फिर दुगने जोश से पतंगे उड़ाते है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 कविता 'पतंग' में बिम्बों के द्वारा काव्य सौन्दर्य प्रकट किया गया है। स्पष्ट कीजिए।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– इस कविता में सुंदर बिम्बों के माध्यम से बच्चों की बाल सुलभ चेष्टाओं का प्रभावी चित्रण हुआ है। काव्य में बिम्ब वह मानसिक चित्र है, जो कल्पना द्वारा अनुभूत किया जाता है। यह इन्द्रियों पर आधारित होता है जिनकी सहायता से हम काव्य के मूर्त रूप की अनुभूति करते हैं। 'पतंग' कविता में बिम्बों की रंगीन दुनिया चारों तरफ व्याप्त है। यह एक ऐसी दुनिया है जहाँ शरद ऋतु का चमकीला इशारा है, दिशाओं में मृदंग बजते हैं। पतंग डोर के सहारे तथा बच्चे अपने रंध्रों के सहारे उड़ रहे हैं। बच्चों के भागते कदम डाल के लचीले वेग के समान हैं। इस तरह दृश्य, चाक्षुप, स्थिर, गतिशील और श्रव्य बिम्ब प्रस्तुत हुए है।

3. कुँवर नारायण

प्र:1 'कविता के बहाने' कविता का उद्देश्य है–

(अ) यान्त्रिकता के दबाव में कविता का अस्तित्व रहेगा (स)

(ब) कविता में केवल दिखावा मात्र है

(स) वर्तमान में कविता के वजूद के प्रति आशंका

(द) कविता कोरी कल्पना मात्र है

प्र:2 कविता एक खेल है बच्चों के बहाने पंक्ति का भाव है–

(अ) बच्चे खेलने में बहाने बनाते है

(ब) कविता खेलने में बहाने बनाती है (स)

(स) कविता बच्चों के खेल के समान असीमित उड़ान है

(द) कविता में सीमित कल्पनाओं की उड़ान है।

प्र:3 ''तमाशबीनों की शाबासी और वाह–वाह'' पंक्ति में 'वाह–वाह' कौन करते हैं?

(अ) तमाशा देखने वाले (ब) विद्वान लोग (स)

(स) मूर्ख जो अर्थ नहीं समझते हैं (द) भाषण को जटिल बनाने वाले

प्र:4 'बात सीधी थी पर' कविता में किस पर व्यंग्य किया गया है?

(अ) जिस भाषा में चमत्कार हो (ब) जिस भाषा में सहजता हो (अ)

(स) जिस भाषा में आडम्बर ना हो (द) जिस भाषा में बनावटी पन न हो

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 'कविता के बहाने' शीर्षक कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कविता चिड़िया की उड़ान और फूलों के विकास से भी अधिक काल्पनिक उड़ान और भावात्मक सुगन्ध वाली होती है। कविता बच्चों के खेल जैसी आनन्ददायी होती है, लेकिन आज के युग में यान्त्रिकता के दबाव में कविता के अस्तित्व पर संकट आ रहा है।

प्र:2– 'कविता एक खेल है बच्चों के बहाने'' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– बच्चों को खेल से आनन्द मिलता है, वे अपने–पराये का भेदभाव भूलकर खेल खेलते हैं। कविता रचना भी खेल के समान आनन्ददायी होती है। उसमें काल्पनिक भाव सौन्दर्य का चित्रण भेदभाव रहित और अतीव आनन्ददायी होता है।

प्र:3 'भाषा को सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय है?

उत्तर – भाषा को सहूलियत से बरतने का कवि का अभिप्राय है कि कुछ लोग भाषा की अभिव्यक्ति में अपने आपको अतिविशिष्ट या अपनी प्रसिद्धि प्रदर्शित करने के लिए क्लिष्ट या अलंकृत भाषा का प्रयोग कर बैठते हैं, जो आमजन की समझ से बाहर होकर व्यर्थ घूमती रहती है। इसलिए भाषा को सहूलियत से बरतना चाहिए जिस से सम्पूर्ण जन मानस के समझ में आ सके। उन्हें रुचिकर लगे।

प्र:4 "आखिरकार वही हुआ, जिसका मुझे डर था।" कवि को क्या डर था ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि को यह डर था कि भाषा में चमत्कार लाने हेतु वह जितने भी प्रयत्न कर रहा था, वे सब निरर्थक हो गए। इस चक्कर में भाषा का सरल अर्थ चूड़ी के पेंच की तरह मर गया।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 'बात सीधी थी पर' कविता में कवि ने किस विषय पर ध्यान आकर्षित किया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'बात सीधी थी पर' कविता में कवि ने भाषा की सहजता पर बात की है। कवि का कहना है कि हमें सीधी–सरल बात को बिना जटिल बनाये आसान शब्दों में कहने का प्रयास करना चाहिए। भाषा के जटिल प्रयोग करने के फेर में बात स्पष्ट नहीं हो पाती है, तथा अभिव्यक्ति की सरलता में उलझाव आ जाता है। व्यक्ति जैसा सोचता व अनुभव करता है, उसे उसी रूप में सहजता से व्यक्त कर देना चाहिए। लेकिन कभी–कभी वाह–वाही पाने के लोभ में अपनी बात को सजा सँवारकर, कलात्मक ढंग से अलंकृत शैली का प्रयोग करने लगता है। जिसके चक्कर में सीधी– सरल बात भी टेढ़ी हो जाती है। रचना कर्म में इसे एक दोष माना जाता है।

4. रघुवीर सहाय

प्र:1 ''कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता में किस पर व्यंग्य किया गया है?

(अ) अपाहिज पर (ब) पत्रकार पर (स)

(स) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर (द) समाज पर

प्र:2 ''हम समर्थ शक्तिवान' समर्थ शक्तिवान किसे कहा गया है ?

(अ) उद्योगपतियों को (ब) राजनेताओं को (स)

(स) दूरदर्शनवालों को (द) खिलाड़ियों को

प्र:3 'आपका अपाहिजपन तो दुःख देता होगा?' ऐसा प्रश्न पूछकर किसकी मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है।

(अ) अपाहिज की मानसिकता पर (ब) समाज की मानसिकता पर (स)

शेखावाटी मिशन–100

(स) मीडिया की मानसिकता पर (द) दर्शक की मानसिकता पर

प्र:4 कैमरे में बन्द अपाहिज कविता में कौनसी शब्द शक्ति है–

(अ) अभिधा (ब) लक्षणा (ब)

(स) व्यंजना (द) कोई नहीं

लधत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता की भूल संवेदना लिखिए।उत्तर–

उत्तर– इस कविता में कवि ने करुणा और सहानुभूति जगाने के उद्‌देश्य से प्रसारित मीडिया के कार्यक्रमों में निहित क्रूरता तथा शोषण को व्यक्त किया गया है। मीडिया माध्यम की ऐसी व्यावसायिकता एवं संवेदनहीनता पर आक्षेप किया गया है।

प्र:2 कवि रघुवीर सहाय की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर– कवि रघुवीर सहाय की दो रचना है – "आत्महत्या के विरुद्ध" तथा "सीढ़ियों पर धुप" है

प्र:3 परदे पर वक्त की कीमत है– इस कथन का नया आशय है?

उत्तर– इस कथन का आशय यह है कि दूरदर्शन के परदे पर उन कार्यक्रमों को ही दिखाया जाता है, जो रोचक हो और व्यवसाय में लाभकारी भी रहें, इसलिए वे अपने व्यवसाय पर अधिक ध्यान देते हैं। और समय बर्बाद नहीं करना चाहते है।

प्र:4 "हम दूरदर्शन पर एक दुर्बल को लायेंगे" – इसका क्या कारण हो सकता है? बताइये।

उत्तर– दूरदर्शन के कई कार्यक्रमों का उद्देश्य मानवीय संवेदना जगाना रहता है, उस पर दर्शको की संख्या बढ़े, उसमें रोचकता आए और संवेदना को सहजता से बेचा जा सके, इस दृष्टि से ऐसे कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 कवि रघुवीर सहाय की कविता "कैमरे में बन्द अपाहिज" में किस पर व्यंग्य किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कवि रघुवीर सहाय ने इस कविता में मीडिया की दोहरी नीति पर व्यंग्य किया है अक्सर समाचार चैनल किसी व्यक्ति या घटना की दुःखपूर्ण दशा को प्रस्तुत करते समय अपनी संवेदना खोकर पूर्णतः व्यावसायिक प्रवृति से संचालित करके उसे अपने व्यवहार से क्रूर बना देते हैं, इस कविता में व्यंग्य है। दूरदर्शन सीमित वर्ग तक सिमटा हुआ है। किसी की पीड़ा को बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को संवदेनशील होना चाहिए, किन्तु अपनी व्यंजन में यह कविता हर ऐसे व्यक्ति पर व्यैंय करती है, जो दुःख–दर्द, यातना–वेदना को बेचना चाहता है।

प्र:2 कमरे में बन्द अपाहिज" कविता में कवि ने किस तरह के बाजारीकरण को प्रस्तुत किया है और कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि ने बताया है कि टेलीविजन (मीडिया) के लोग स्वयं को बहुत ताकतवर समझते हैं। इस कविता में एक दुर्बल अपाहिज व्यक्ति है। वह विवश है और उसे दूरदर्शन के व्यापारीकरण का हिस्सा बनना पड़ता है। दूरदर्शन द्वारा सामाजिक कार्यक्रम के नाम पर लोगों के दुःख–दर्द बेचने का काम होता है। उन्हें अपाहिज के दुःख–दर्द और

शेखावाटी मिशन–100

मान–सम्मान की कोई परवाह नहीं होती है। उन्हें अपने कार्यक्रम की लोकप्रियता हेतु उसे रोचक बनाना है जिससे उन्हें कमाई हो सके। इस प्रकार कविता ने मीडिया का बाजारीकरण प्रस्तुत किया है।?

5. शमशेर बहादुर सिंह

प्र:1 'उषा' कवितांश में कवि ने किस समय का वर्णन किया है–

(अ) सूर्योदय पूर्व का (ब) सूर्योदय पश्चात का (अ)

(स) सूर्यादय पूर्व रात्रि का (द) सूर्यास्त का

प्र:2 राख से लीपा हुआ चौका (अभी गीला पड़ा है।)" पंक्ति में अभी गीला पड़ा है क्या कारण है?

(अ) धर का आँगन सूखा नहीं है (अ) आसमान की आर्द्रता के कारण (ब)

(स) अभी सूर्योदय नहीं हुआ है (द) आसमान से वर्षा हो रही है

प्र:3 "स्लेट पर या लाल खड़ीयाँ चाक मल दी हो किसी ने" पंक्ति में अलंकार है –

(अ) उपमा (ब) रूपक (द)

(स) मानवीकरण (द) उत्प्रेक्षा

प्र:4 सूर्योदय के साथ–साथ गाँव की सुबह का एक जीवन्त परिवेश की कल्पना की गई है। कैसे ?

(अ) वहाँ सिल है (ब) राख से लीपा हुआ चौका है (स)

(स) स्लेट पर चाक मलते अदृस्य बच्चों के हाथ (द) उपर्युक्त सभी

लधूत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' नवीन बिम्बों और उपमानों का जीवन्त दस्तावेज है।" स्पष्ट करें।

उत्तर– शमशेर बहादुर ने 'उषा" कविता में प्रातः कालीन धुंधले–नीले आकाश के लिए नीला हुआ चौका, काली सिल और स्लेट पर लाल खड़िया से मलना आदि नवीन उपमान दिये हैं। इसी प्रकार 'नील जल में झिलमिलाती गौर देह' से सुन्दर बिम्बों की योजना उपस्थित की है।

प्र:2 'उषा' कविता में भोर का प्राकृतिक सौन्दर्य–चित्रण किस प्रकार किया गया है

उत्तर– 'उषा' कविता में भोर के प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए नवीन उपमानों, बिम्बों तथा नये प्रतिकों का प्रयोग किया गया है। इसमें प्रातः कालीन आकाश को राख से लीपा हुआ चौका, लाल केसर से धुली काली सिल बताया गया है। इसमें प्रकृति का शब्द चित्र सजीव अभिव्यक्त हुआ है।

प्र:3 "जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है।" 'उषा' कविता की प्रस्तुत पंक्ति में 'जादू टूटता है' का आशय स्पष्ट कीजिए–

उत्तर– भोर होते ही आकाश में कुछ–कुछ लालिमा फैलने लगती है, फिर नीले आकाश में सूर्य का गौर झिलमिलाता लेख प्रकाश से युक्तशरीर या बिम्ब चमकने लगता है। इससे उषा का प्राकृतिक सौन्दर्य समाप्त हो जाता है, और ऐसा लगता है कि अब उसका जादू टूट गया है।

शेखावाटी मिशन–100

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 'उषा' कविता के आधार पर बताइए कि कवि ने किन उपमानों का प्रयोग कर कविता को गतिशीलता दी है। इसके आधार पर अन्य किन उपमान का प्रयोग किया जा सकता है?

उत्तर– 'उषा' शीर्षक कविता में कवि ने सूर्योदय पूर्व आकाशीय दृश्यों का आधुनिक उपमानों से ही चित्रण किया है। भोर से पहले आकाश का रंग नीला शंख जैसा, राख से लीपा हुआ गीला चौका, कुछ देर बाद सूरज की लालिमा उसमें मिल जाने से काली – स्लेट पर लाल खड़िया तथा कुछ देर बाद सूरज के प्रकट प्रकाश की सुन्दरी सी झिल–मिल गौर–देह आदि जैसे नवीन उपमानो का प्रयोग कर कविता को गतिशीलता दी है। इनके आधार पर नील कमल, मधुर चन्द्रिका, मन्दिर–शिखर, आदि जैसे परम्परागत उपमानों का सहज प्रयोग किया जा सकता है।

6. सूर्यकान्त त्रिपाठी (निराला)

शेखावाटी मिशन–100

प्र:1 'बादल राग' कवितांश निराला के किस काव्य संग्रह से उद्धत है?

(अ) अनामिका (ब) परिमल (अ)

(स) नये पत्ते (द) अणिमा

प्र:2 क्रान्ति हमेशा किसका प्रतिनिधित्व करती है?

(अ) शोषक वर्ग का (ब) पूँजीपति वर्ग का (स)

(स) वंचित वर्ग का (द) राजसी वर्ग का

प्र:3 'बादल राग' कवितांश में बादलों का किस रूप में आह्वान किया गया?

(अ) जल के रूप में (ब) क्रान्ति के रूप में (ब)

(स) अशनि–पात के रूप में (द) वर्ण हुंकार के रूप में

प्र:4 "ये जीवन के पारावार" जीवन के पारावार किसे कहा गया है?

(अ) समुद्र को (ब) बादलों को (ब)

(स) आसमान को (द) धरती को

लधूत्तररात्मक प्रश्न

प्र:1 'अशनि–पात से शापित, उन्नत शत–शत वीर' – बादल राग कविता में बादलों को 'अशनि–पात से शापित, उन्नत शत–शतवीर' कहने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर– बरसात में बिजली गिरने से जैसे बड़े–बड़े वृक्ष धराशायी हो जाते हैं, उसी प्रकार क्रान्ति से सैंकड़ों पूँजीपतियों एवं शोषक वर्ग के बड़े लोगों का सर्वनाश होता है। इसका तात्पर्य सामाजिक परिवर्तन की व्यंजना करना है।

प्र:2 निराला की 'बादल राग' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– निराला की 'बादल राग' कविता का प्रतिपाद्य शोषित–पीड़ित कृषकों श्रमिको के जीवन में परिवर्तन लाने तथा

सामाजिक क्रान्ति के द्वारा पूँजीपतियों के शोषित आचरण का विरोध करना है। इसमें सामाजिक क्रान्ति का संदेश दिया गया है।

प्र:3 'ऐ जीवन के पारावार' बादल के लिए ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर– वादल समय–समय पर जल अर्पण करके संसार को नव–जीवन प्रदान करता है। सभी प्राणियों के जीवन रूपी सागर का पोषण–संवर्धन करता है। इसी विशेषता के कारण बादल को जीवन का पारावार कहा गया है। अर्थात् जीवन दान देने वाला समुद्र कहा गया है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 निराला जी की 'बादल–राग' कविता का उद्‌देश्य क्या है? वर्तमान सामाजिक परिवेश में इस रचना के प्रभाव का आकलन कीजिए।

उत्तर– 'बादल राग' कविता सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की क्रान्तिकारी भावों से पूरित कविता है। इसमें कवि ने बादलों को क्रान्ति का प्रतिक माना है। कवि ने शोषित वर्ग के हित में बादलों का आहवान किया है। क्रान्ति के प्रतीक बादलों की गर्जना सुनकर पूँजीवर्ग भयभीत हो जाता है। जबकि कृषक वर्ग आशा भरे नेत्रों से देखता है। अतः समाज में शोषितों को उनका अधिकार दिलाने हेतु क्रांति की आवश्यकता है। शोषकों के प्रति व्यंजनापूर्ण भावों की अभिव्यक्ति कर आर्थिक विषमता मिटाने पर जोर दिया है।

शेखावाटी मिशन–100

7. गोस्वामी तुलसीदास

प्र:1 तुलसीदास ने सबसे बड़ी आग बताया है–

(अ) जंगल की आग (ब) समुद्र की आग (स)

(स) पेट की आग (द) घर की आग

प्र:2 जीविका विहीन लोग एक दूसरे को क्या कहते हैं–

(अ) कहाँ जाये क्या करें (ब) एक–दूसरे की सहायता करेंगे (अ)

(स) हम जीविका कमायेंगे (द) हम कार्महीन हो जायेंगे

प्र:3 ''धूत कहो, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जौलहा कहौ कोऊ।'' पंक्ति में 'अवधूत' शब्द का आशय है

(अ) त्यागा हुआ (ब) संदेशवाहक (स)

(स) वीतरांग संन्यासी (द) राजपूत

प्र:4 ''मानहुँ कालु देह धरि बैसा'' पंक्ति में अलंकार है–

(अ) उपमा (ब) रूपक (स)

(स) उत्प्रेक्षा (द) संदेह

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 'आगि बड़वागि तें बड़ी है आगि पेट की'' तुलसी ने पेट की आग को बड़ी क्यों –बताया है?

उत्तर– शरीर को चलाने हेतु पेट का भरा होना आवश्यक हैं, और पेट भरने के लिए अनेक कर्म करने पड़ते हैं। भिखारी से लेकर बड़े–बड़े लोग भी पेट की आग शान्त करने में लगे रहते हैं। इसलिए पेट की आग को बड़वाग्नि से बड़ी कहा गया है। क्योंकि बड़वाग्नि प्रयत्न द्वारा शान्त हो जाती है।

प्र:2 ''मांगि के खैबो, मसीत के सोइबोष'' इससे तुलसी के विषय में क्या पता चलता है–

उत्तर– इससे तुलसी के विषय में यह पता चलता है कि वे धार्मिक कट्टरता से ग्रस्त नहीं थे और सर्वधर्म सद्भाव रखते थे। वे लोभ लालच से रहित, स्वाभिमानी और सच्चे सन्त स्वभाव के थे। इसलिए उन्हें मांग के खाने और मस्जिद में सोने से कोई परहेज नहीं था।

प्र:3 'लक्ष्मण–मूर्च्छा और राम–विलाप' काव्यांश के आधार पर भ्रातृ–शोक में विह्वल श्रीराम की दशा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर श्रीराम अत्यधिक विह्वल हो उठे। उस समय वे माता सुमित्रा का ध्यान कर लक्ष्मण को अपने साथ लाने पर पछताने लगे। लक्ष्मण जैसे सेवा–भावी अनुज के अनिष्ट की आशंका से वे प्रलाप करने लगे तथा अविनाशी प्रभु होने के पश्चात भी मनुष्यों की भाँति द्रवित हो गये।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 'पेट ही को पचत, बेचत बेटा–बेटकी।' मैं भक्त कवि तुलसीदास ने किस विकट स्थिति की ओर संकेत किया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि ने बताया है कि संसार में सभी अच्छे–बुरे, ऊँचे–नीचे कार्यों का आधार 'पेट की आग' की गंभीर रिथति ही सबसे बड़ा सत्य है। तुलसीदास के समय तत्कालीन परिस्थिति रोजगार को लेकर अत्यन्त विकट थी। अच्छे–अच्छे घरों के लोग पेट–पालन हेतु छोटा–बड़ा सभी कार्य करने लगे थे। समय की दारूण स्थिति एवं मनुष्यों का कठिन जीवन–यापन देखकर तुलसीदास ने निम्न पंक्ति कही कि पेट की आग बुझाने हेतु अपनी जान से प्यारी संतान को भी लोग बेचने में हिचकिचा नहीं रहे थे, जो कि बहुत ही बुरी परिस्थिति पर प्रकाश डालती है।

प्र:2 'धूत कहौं, अवधूत कही, राजपूतु कहौ'' निम्न पंक्ति द्वारा कवि तुलसीदास वर्तमान की किस भयंकर समस्या को इंगित कर रहे हैं? स्पष्ट कीजिए–

उत्तर– तुलसीदास की तत्कालीन स्थिति और अभी की वर्तमान परिस्थिति दोनों में ही जाति समस्या बहुत जटिल एवं बड़ी समस्या है। उस समय तुलसीदास की भक्ति एवं प्रसिद्धि देखकर कुछेक जाति विषेशज्ञ विद्वान तुलसीदास की नीचा व निम्न जाति का दिखाने हेतु दुश्प्रचार करते हैं। उन्हीं लोगों को सटीक जवाब देने हेतु तुलसीदास ने कहा है कि मुझे न किसी से लेना देना है। न किसी की बेटी के साथ, बेटा ब्याह कर जाति बिगाड़ूनी है। न मैं धर्म को लेकर कट्टरपंथी हूँ। मैं मांग कर, मस्शिद में सोकर तथा भगवान राम की भक्ति–आराधना कर अपना जीवन गुजार सकता हूँ।

शेखावाटी मिशन–100

8.फिराक गोरखपुरी

प्र:1 फिराक गोरखपुरी ने साहित्य में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?

(अ) कर्णिक (ब) गजल (स)

(स) रुबाइयाँ (द) मुक्तक

प्र:2 'रुबाइयाँ' कवितांश में कौनसा रस है ?

(अ) श्रृंगार रस (ब) करुण रस (द)

(स) हास्य रस (द) वात्सल्य रस

प्र:3 खिलखिलाते बच्चे की हँसी कब गूँज उठती है?

(अ), जब माँ बच्चे को गोदी में लेती है। (स)

(ब) जब माँ बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहती है।

(स) जब माँ बच्चे को लोका देती है।

(द) जब माँ बच्चे को चाँद का प्रतिबिम्ब दिखती है

प्र:4 ''भाई के बाँधती चमकती राखी'' चमकती राखी की तुलना किससे की गई है?

(अ) बिजली की चमक से (ब) चाँद की चाँदनी से (अ)

(स) हल्की–हल्की घटा से (द) सूर्य के तेज से

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 'बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे' फिराक गोरखपुरी ने रक्षा बंधन के लच्छों अर्थात धागों के बिजली की तरह चमकीला क्यों बताया है?

उत्तर– रक्षा बन्धन अर्थात राखी के लच्छों में रंग बिरंगी सुन्दरता और चमक का सहज आकर्षण रहता है। बादलों के साथ बिजली की चमक के समान राखी के धागों में भाई–बहिनं का अटूट स्नेह वन्धन बना रहता है। इसलिए कविं ने उन्हें चमकीला बताया है।

प्र:2 बच्चे की चाँद लेने की जिद को माता किस प्रकार अपनी ममताभरी समझ से पूर्ण करती है? फिराक गोरखपुरी की रूवाइयों के आधार पर समझाइये।

उत्तर– माता बच्चे की जिद को पूरी करने के लिए उसके हाथ में दर्पन देती है और उसका प्रतिबिम्ब दिखाकर कहती है कि, देख, चाँद तुम्हारे पास आ गया है। इस तरह मभताभरी समझ से बच्चे को मना लेती है।

प्र:3 रुबाइयों के आधार पर घर–आँगन में दीपावली व राखी के दृश्य – बिम्ब के अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– फिराक गोरखपुरी ने दीपावली का दृष्य – बिम्ब इस प्रकार चित्रित किया है–शाम का समय , लीपा–पुता एवं स्वच्छ घर–आँगन, माँ अपने बच्चो के लिए जगमगाते चीनी के खिलौने सजाती और प्रसन्नता से दीपक

शेखावाटी मिशन–100

जलाती है तथा बच्चों की खिलखिलाहट से पुरा घर आँगन, जगमगा जाता है। राखी के लच्छों में रंग–बिरछी सुन्दरता और बिजली की चमक का सहज आकर्षण रहता है। राखी के धागो में भाई–बहन का अटूट स्नेह–सम्बंध बना रहता है।

प्र:4 'फिराक गोरखपुरी की रूबाइयों की भाषा एवं प्रसंग सूरदास के वात्सल्य वर्णन की सादगी की याद दिलाता है।' उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में हिन्दी का एक घरेलू रूप दिखाई पड़ता है। उनकी रूबाइयों की भाषा और प्रसंग सूरदास के वात्सल्य वर्णन की सादगी की याद दिलाता है। माँ बेटे की कुछ मनमोहक अदाये तथा रक्षाबंधन का एक दृश्य प्रस्तुत है जो अपने आप में सहज सरल और भावनात्मक से पुरित है वात्सल्य में मनमोहक दृश्य को देखिए –

आँगन के लिए चांद के टुकड़े को खड़ी
हाथ पे झुलाती है उसे गोद भरी
नहला के छलके –छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओ में कंघी करके

जब घुटनियों में लेके है पिनहाती कपड़े/इस वात्सल्य वर्णन में प्यार कोमलता, मधुरता आदि के होते है दर्शन कन्हैया और माता यशोदा कि सहजता आनंनदानुभूति आदि की याद दिलाते हैं।

शेखावाटी मिशन–100

9.उमाशंकर जोशी

प्र:1 'छोटा मेरा खेत' कविता में किसान कर्म को किस कर्म के रूप में माना गया है ?

(अ) कवि कर्म (ब) मानव कर्म (अ)

(स) धर्म कर्म (इ) जीवन कर्म

प्र:2 'छोटा मेरा खेत' कवितांश में किसान की तुलना किससे की है?

(अ) स्वयं से (ब) सैनिक से (अ)

(स) मजदूर से (द) भगवान से

प्र:3 ''कल्पना के रसायनों को पी'' पंक्ति का कवि के लिए क्या आशय है?

(अ) रासायनिक तत्त्वों से बीज गल जाता है (ब) भाव कल्पना रूपी खाद पानी को पीकर (ब)

(स) बीज, हवा, खाद, पानी पीकर (द) बीज को गलाने का कार्य

प्र:4 'बगुलों के, पंख' कविता में किस समय का वर्णन किया गया है?

(अ) प्रातः काल का (ब) सायंकाल का (ब)

(स) मध्यकाल का (द) रात्रिकाल का

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र:1 'छोटा मेरा खेत' कविता का प्रतिपाद्य या मूल भाव बताइये।

उत्तर– 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने रूपक के द्वारा बताया है कि कागज का चौकोर पन्ना एक छोटे खेत के समान है, जिसमें कविता का जन्म भावात्मक आंधी के प्रभाव से किसी भी क्षण हो जाता है और वह शब्दबद्ध होकर कविता के आनंदमयी रूप में फूटता है जिसका रस प्रभाव अनन्त काल के लिए फलदायी होता है।

प्र:2 'बीज गल गया निःशेष'– 'छोटा मेरा खेत' कविता में इसका क्या आशय है–

उत्तर– इसका आशय यह है कि जिस प्रकार धरती के अन्दर बोया गया बीज पूरी तरह गलकर अंकुरित होता है, उसी प्रकार कवि के भाव अहम भावना से मुक्त होकर सर्वजन हिताय के लिए अभिव्यक्त हो जाते हैं।

प्र:3 'बगुलों के पंख' कविता का प्रतिपाद्य बताइए–

उत्तर– प्रस्तुत कविता का प्रतिपाद्य सन्ध्याकालीन प्राकृतिक, दृश्य के, सौन्दर्य का चित्रण करना है। आकाश में बादलों के मध्य उड़ती हुई बगुलों की पंक्ति को देखकर कवि को विशिष्ट सौन्दर्यानुभूति होती है।

प्र:4 'वह जो चुराए लिए जाती मेरी आँखे'' – इस पंक्ति में आँखे चुराने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर– कवि का आशय है कि सन्ध्या के समय कजरारे बादलों के मध्य श्वेत बगुलों की पंक्ति इतनी मनोरंम लगती है कि आँखे उनकी उड़ान के पीछे–पीछे भागती रहती है। मानो सन्ध्या की श्वेत काया कवि की आँखों को अपने साथ चुराये लिए जा रही है। कवि उस दृश्य से अपनी नजरे हटा नहीं पा रहे हैं।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 'बगुलों के पंख' कविता में वर्णित भाव कल्पना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– यह कविता प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर भाव बिम्बों को प्रस्तुत करने वाली कविता है कवि काले बादलों से भरे आकाश पंक्ति बनाकर उड़ते स्वेत बगुलों को देखता है। उस दृश्य को देखकर प्रतित होता है मानो काजल लगे बादलों के मध्य संध्या की सफेद काया तैर रही हो। शाम का स्वेत व लाल वर्ण, जो कि सूर्य की लालिमा से युक्त होता है, वह आकाश में सफेद बुगलों का साम्य करती सी प्रतित हो रही है। इस दृश्य से बंधी कवि की आँखे निरंतर टकटकी लगाकर उनका पीछा कर रही है। अर्थात इतना मनोरम दृश्य है, जिससे आँखे हटने का नाम ही नहीं ले रही हैं।

कवि परिचय

उत्तर– **(i) हरिवंशराय बच्चन परिचय–**

आधुनिक हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तक डॉ. हरिवंशराय बच्चन का जन्म सन् 1907 ई को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता का नाम प्रतापनारायण एवं माता का नाम सरस्वती देवी था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे, आकाशवाणी तथा विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ रहे। 1969 में 'दो चट्टानें' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1976 ई में इन्हें पद्मभूषण तथा सन् 1992 में सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित किया

शेखावाटी मिशन–100

गया। जनवरी 2003 में मुम्बई में इनका निधन हुआ।

प्रमुख रचनाएं – मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा– निमन्त्रण, आकुल अन्तर, एकान्त संगीत, मिलन यामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नये पुराने झरोखे, टूटी–फूटी कड़ियों (काव्य संग्रह) इनकी आत्मकथा चार खण्डों में प्रकाशित है। बच्चन का समस्त वाङ्मय 'बच्चन ग्रंथावली' नाम से दस खण्डों में प्रकाशित किया गया है।

(ii) कुँवर नारायण–

कुवर नारायण का जन्म 1927 में फैजाबाद, उत्तरप्रदेश में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. किया। यायावरी प्रकृति के कारण इन्होंने पोलैण्ड, रूस, चीन की यात्रा की। 1950 ईं के आस पास इन्होंने काव्य लेखन आरंभ किया।

सम्मान – कबीर सम्मान, व्यास सम्मान, लोहिया सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि।

रचनाएँ – ये तीसरे सप्तक के प्रमुख कवि है। इनकी प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित है– चक्रव्यूह, परिवेश हम तुम, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों (काव्य संग्रह).

प्रबंध काव्य – आत्मजमी कहानी संग्रह – आकारों के आस–पास, निधन–2017.

(iii) कवि परिचय "सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला"–

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1897 में बंगाल के महिषादल रियासत के मेदिनीपुर जिले में हुआ। महाकवि निराला 'रामकृष्ण मिशन, अद्वैत आश्रम तथा बेलूर मठ से जुड़े रहे। ये अपनी पत्नी की मृत्यु से आहत होकर अपने पैतृक गाँव गढ़कोला लौट आये। लखनऊ और इलाहाबाद में रहकर साहित्य सृजन किया। निराला युगान्तकारी कवि थे। इनकी कविता में तत्कालीन समाज की पीड़ा, परतंत्रता, कुण्ठा के प्रति आक्रोश तथा अन्याय व असमानता के प्रति गहरा विद्रोह है। इनका निधन 1961 में हुआ।

रचनाएँ – परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीरास, कुकुरमुता (काव्य संग्रह) इनकी समस्त रचनाओं को 'निराला ग्रंथावली' नाम से आठ खण्डों में प्रकारित किया गया है। 'तुलसीदास और राम की शक्तिपूजा' उनके गहन चिन्तन प्रौढता एवं प्रखरता के परिचायक है।

(iv) रघुवीर सहाय–

रघुवीर सहाय का जन्म सन् 1929 लखनऊ (उ.प्र.) में हुआ। थे समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील कवि है। साहित्य सेवा के कारण इनको 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका देहावसान 1990 में दिल्ली में हुआ।

प्रमुख रचनाएं – 'आत्म हत्या के विरुद्ध,' सीढ़ियों पर धूप, लोग भूल गये हैं, हँसो–हँसो जल्दी हँसो।

– ये ऑल इडिया रेडियो के हिन्दी समाचार विभाग तथा कल्पना, नवभारत टाइम्स, एवं दिनमान पत्र पत्रिकाओं से सम्बद्ध रहे।

– लोग भूल गये है" कृति पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(v) तुलसीदास का कवि परिचय–

हिन्दी साहित्य की सगुण काव्य धारा में रामभक्ति धारा के सर्वोपरि कवि तुलसीदास का जन्म बाँदा (उ.प्र.) जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 के लगभग हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। इनका बचपन अतीव

कष्टमय रहा। बाबा नरहरिदास ने इन्हें शिक्षा–दिक्षा प्रदान की। इनका निधन काशी में सन् 1623 में श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन हुआ।

तुलसीदास जी ने अनेक ग्रंथ रचे जिनमें से प्रमुख है– रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, कृष्ण गीतावली, पार्वती. मंगल, जानकी मंगल, रामलला नहछु, हनुमान बाहुक, वैराग्य संदिपनी, इत्यादि है।

इनका 'रामचरितमानस' हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य माना जाता है। इनके काव्य की भाषा अवधी तथा ब्रजभाषा रही थी।

(vi) उमाशंकर जोशी का कवि परिचय–

इनका जन्म गुजरात में सन् 1911 में हुआ था। इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा तथा आम जिन्दगी के अनुभव से परिचय करवाया। इन्होंने भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लिया तथा जेल भी गए ।

जोशीजी प्रमुख रचनाएं– 'विश्व शांति, गंगोत्री, निशीध, प्राचीना, आतिथ्य, बसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा (एकांकी) सापनाभारा, शहीद (कहानी) श्रावणी मेणो, विसामो (उपन्यास) इन्होंने 'संस्कृति' पत्रिका का सम्पादन भी किया। साहित्य को नव भंगीमा व स्वर देने वाले उमाशंकर जोशी का निधन सन् 1988 में हुआ।

सप्रसंग व्याख्या– आरोह–पद्य भाग

निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

प्रः1 "मैं जग–जीवन का भार लिए फिरता हूँ;
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।

मैं स्नेह–सूरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ! ?

उत्तर– मैं जग...................... करता हूँ

सन्दर्भ–उपर्युक्त पद्यांश कक्षा 12 की आधार हिन्दी पुस्तक 'आरोह–2 के कवि हरिवंशराय बच्चन की कविता 'आत्म–परिचय' से लिया गया है।

प्रसंग –'निशा–निमन्त्रण' से संकलित इस कवितांश में कवि अपनी जीवन शैली का परिचय दिया है कि वह किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन में स्नेह भार लिये घूमते हैं।

व्याख्या–कवि कहता है कि मैं इस सांसारिक जीवन का भार अपने ऊपर लिये हुये फिरता रहता हूँ। किसी प्रिय ने मेरे हृदय

शेखावाटी मिशन–100

की कोमल भावनाओं का स्पर्श करके हृदय रूपी वीणा के तारों को झंकृत कर दिया है। इस तरह मैं अपनी सासों के दो तार लिये हुए जग–जीवन में फिरता रहता हूँ। कवि बच्चन कहते हैं कि मैं प्रेम रूपी शराब को पीकर मस्त रहता हूँ। इसी मस्ती में इस बात पर कभी विचार नहीं करता हूँ कि लोग मेरे संबंध में क्या कहते हैं। यह संसार तो उन्हें पूछता है, अर्थात् प्रशंसा करता है जो उनके कहने पर चलते है उनके अनुसार गाता हूँ तथा कविता में अपने मनोभावों को अभिव्यक्ति देता हूँ।

विशेष–(i) कवि अपने जीवन के सुख दुख व प्रेम का दायित्व स्वयं उठाये हुये हैं।

(ii) मुक्त छंद एवं तुकान्त कविता की विधा है।

(iii) रूपक, अनुप्रास आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग है।

(iv) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग हुआ है।

(v) कोमल कान्त शब्दावली का प्रयोग हुआ है।:

2 सप्रसंग व्याख्याः–

"जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध,
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर
छतों के खतरनाक किनारों तक–
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

उत्तर– 'जन्म से .... संगीत

सन्दर्भ – उपर्युक्त पद्यांश कक्षा–12 की आधार हिन्दी पुस्तक आरोह भाग–2 के कवि आलोक धन्वा की कविता 'पतंग' से लिया गया है।

प्रसंग– कवि आलोक धन्वा की 'पतंग' एक लम्बी कविता है जिसके तीसरे भाग से यह कवितांश संकलित किया गया। बच्चों का कोमल व लचीला होना तथा पतंग उड़ाते समय किसी बात का होश न रखना, का कवि ने वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि बच्चों का शरीर जन्म से ही रुई के समान कोमल होता है। उनकी कोमलता को स्पर्श करने के लिए स्वयं पृथ्वी भी उनके व्याकुल पैरों के पास जाती है। जब वे बेसुध होकर दौड़ते है, तब उनके पैरों के स्पर्श से कठोर छतें भी कोमल बन जाती है। उनके भागते पैरों की आवाज से प्रतीत होता है कि चारों दिशाएं मृदंग की भाँति मधुर संगीत

शेखावाटी मिशन–100

निकाल रही हैं। वे पतंग उड़ाते हुए झुले की भाँति पेंग भरते हुए आगे–पीछे दौड़ते है। उस समय बच्चों का शरीर पेड़ की डालियों की तरह लचीलापन लिये हुये रहता है। कवि कहता है कि पतंग उड़ाते समय बच्चे छतों के खतरनाक किनारों तक आ जाते हैं, जहाँ अगर ध्यान न दिया जाये तो दुर्घटना हो सकती है। यहाँ उन्हें बचाने के लिए तेजी से कोई आ नहीं सकता है। केवल गिरने के भय से उत्पन्न हुआ उत्साह ही रोमांच बनकर उन्हें बचाता है।

विशेष–(i) कवि ने बच्चों की चेष्टाओं का सुन्दर वर्णन किया है।

(ii) मानवीकरण, अनुप्रास, उपमा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

(iii) साहित्यिक खड़ी बोली युक्त मिश्रित शब्दावली का प्रयोग

(iv) बिम्बों का सहज सुन्दर प्रयोग द्रष्टव्य है।

प्र:3 सप्रसंग व्याख्या–

"आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी!
हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया।
ऊपर से ठीक–ठाक
पर अन्दर से
न तो उसमें कसाव था
ना ताकत!"

उत्तर– 'आखिरकार....................ताकत'

सन्दर्भ– उपर्युक्त पद्यांश कक्षा – 12 की आधार हिन्दी पुस्तक 'आरोह', भाग–2 के अध्याय–3 कवि कुँवर नारायण द्वारा लिखित कविता काव्य संग्रह 'कोई दूसरा नहीं' की कविता 'बात सीधी थी पर' से लिया गया है।

प्रसंग–कवि ने इस पद्यांश में ऐसे कवियों पर व्यंग्य किया है जो वाहवाही लूटने के चक्कर में सीधी सरल भाषा को भी अपना पांडित्य प्रदर्शन के उद्देश्य से कठिन, बना देते हैं जिससे उस कविता का मूल भाव ही नष्ट हो जाता है। कवि ने कविता में भाषा की सहजता पर जोर दिया है।

व्याख्या – कवि कहता है कि बात् कहने के लिए उसे चमत्कारी स्वरूप देने के चक्कर में बनावटी भाषा का प्रयोग किया। आखिरकार परिणाम वही हुआ जिसका कवि को डर था। जिस प्रकार पेंच के साथ जबरदस्ती करने, उसे ज्यादा घूमाने से उसकी चूड़ी खत्म हो जाती है, उसी प्रकार भाषा पर अत्यधिक कसाव देने व प्रयोग करने से बात का प्रभाव व अर्थ दोनों खत्म हो गया। जिस तरह चूड़ी खत्म होने पर पेंच को उसी तरह ठोंक दिया जाता है कि अर्थ परिवर्तन की कोई

गुंजाइश नहीं है, उसी प्रकार कवि ने भी भाषा को उसी बनावटी– पन के साथ वहीं छोड़ दिया, जो व्यर्थ, बिना प्रभाव के अस्तित्वहीन भाषा बन कर रह गई। तब उस भाषा में ऊपर से तो सब ठीक–ठाक सुन्दर प्रतीत होता है परंतु अन्दर से भाषा की अर्थपूर्ण कसावट तथा ताकत दोनों खत्म हो जाती है।

विशेष–(i) बात को कहने के लिए सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(ii) कविता की विधा छंदमुक्त अतुकान्त है।

(iii) उर्दू शब्दावली बेतरह–करतब, आदि का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(iv) जोर–जबरदस्ती में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(v) 'बात की चूड़ी मरना' मुहावरे का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

प्र:4 सप्रसंग व्याख्या–

"बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने।
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और..................
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।"

उत्तर– 'बहुत काली...................................... हो रहा है।'

सन्दर्भ– उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग–2 आधार हिन्दी के पाठ– 5 शमशेर बहादूर सिंह द्वारा लिखित कविता 'उषा' से लिया गया है।

प्रसंग–उषा कविता में कवि ने सूर्योदय से पहले पल–पल बदलते प्रकृति के सुन्दर का रूप वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि सूर्योदय से पहले आकाश में पल–पल बदलते हुए वातावरण का चित्रण करते हुए कहता है कि भोर का दृश्य कुछ काले और लाल रंग के मिश्रण से अतीव मनोरम लगने लगा है। आकाश काली सिल हो और उसे अभी–अभी लाल केसर से धो दिया हो अथवा काली–नीली स्लेट पर लाल रंग की खड़िया चाक मल दी हो ऐसा लगने लगा है। नीले आकाश में सूर्य की किरणें ऐसे चमक रही है जैसे नीले जल में किसी सुन्दरी की गौरी देह झिलमिल, कर रही हो अर्थात् प्रातः कालीन सूर्य की किरणें हिलती हुई नायिका के समान लगती है, सूर्य का श्वेत बिंब भी हिलता हुआ सा प्रतीत हो रहा है। कुछ क्षण बाद जब सूर्योदय होता है तब उषाकाल का रंगीन सुरम्य वातावरण चमत्कारी जादू की तरह समाप्त हो जाता है और चारों तरफ सूर्य का तेज प्रकाश फैल जाता है।

कविता में उषाकाल के दौरान सूर्य की लाल, पीली आभा का सुन्दर वर्णन किया गया है।

(ii) भाषा भावों के अनुरूप सरल, सुबोध है।

(iii) उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है।

प्र:5 सप्रसंग व्याख्या–

"अट्टालिका नहीं है रे
आतंक–भवन
सदा पंक पर ही होता
जल– विप्लव–प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग– शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।"

उत्तर– 'अट्टालिका...................... शरीर'

सन्दर्भ– उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आधार हिन्दी आरोह–2 के अध्याय– 6 कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'अनामिका' के छठे भाग 'बादल राग' से लिया गया है।

सन्दर्भ–प्रस्तुत पद्यांश में कवि 'निराला' ने पूँजीपतियों में क्रांति का भय तथा निर्धन–गरीबों में हर्ष की लहर को वर्णित किया है।

व्याख्या– कवि 'निरालाजी' पूँजीपतियों के बड़े–बड़े भवनों को देखकर कहते हैं कि ये ऊँचे भवन अपनी ऊंचाई द्वारा गरीब व निर्धन लोगों को भयभीत करते हैं। इन भवनों की ऊँचाइयाँ ही गरीबों में डर भर देती है। इन्होंने गरीबों के शोषण से ही ऊँचे भवन निर्मित किये हैं। वर्षा से जो बाढ़ आता है उससे सबसे पहले कीचड़ ही बहता है। छोटे से कमल के फूल तो जल का स्पर्श कर और भी आनन्दित होते हैं। भावार्थ यह है– कि कीचड़ पूँजीपतियों का पर्याय तथा कमल उन गरीबों के समान है। गरीबों के बच्चे कठिन परिस्थितियों में भी जीने वाले सुकुमार होते हैं। जिन पर प्रकृति का कोई असर नहीं होता बल्कि प्रकृति के विभिन्न रूप को देखकर भी वे सदैव प्रसन्न रहते हैं। गरीब रोग–व्याधि, दु:ख–पीड़ा सभी में समान स्थिति में रहता है जबकि पूँजीपति ही सदैव अपने शोषण से उत्पन्न क्रांति के कारण भयभीत रहते हैं।

विशेष–(i) कवि ने किसानों एवं गरीबों की स्थिति का वर्णन किया है।

(ii) बादलों से क्रांति का आह्वान किया गया है।

(iii) भाषा तत्सम प्रधान और ओजस्वी है।

(iv) जल–प्लावन में कमल खिलता है। अर्थात कष्टों में भी गरीब व्यक्ति प्रसन्न रहता है जैसी विशेषोक्ति प्रस्तुत है।

(v) रूपक, अनुप्रास जैसे अलंकारों का अनायास प्रयोग हुआ है।

प्र:6 सप्रसंग व्याख्या–

शेखावाटी मिशन

"तब प्रताप उर राखि प्रभु जैहऊँ नाथ तुरंत।

अस कहि आयसु पाइ पद बँदि चलेउ हनुमंत।।

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार,।

मन महुँ जात सराहत पुनि–पुनि पवन कुमार।।"

उत्तर– 'तव' प्रताप .... पवन कुमार।'

सन्दर्भ– उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आधार हिन्दी आरोह–2 के अध्याय– 7 'गोस्वामी तुलसीदास' द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के लंकाकाण्ड 'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' शीर्षक से लिया गया है।

प्रसंग– गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में 'लक्ष्मण– मूर्च्छा और राम का विलाप' का वर्णन करते हुये प्रस्तुत प्रसंग में लिखते है, जब हनुमान हिमालय पर्वत पर से संजीवनी बूँटी लाते है उसी समय मार्ग में भरत से मिलाप होता है, उसी का वर्णन किया है।

व्याख्या– भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास जी बताते है है कि लक्ष्मण को युद्ध के दौरान शक्ति लगने पर हनुमान संजीवनी बूटी लाने जाते हैं, वापस आते समय उनकी मुलाकात भरत से होती है। वे भरत से कहते हैं कि हे प्रभो! मैं आपका प्रताप, यश हृदय में रखकर तुरंत ही भगवान राम के पास पहुंच जाऊँगा। इस प्रकार कहते हुए हनुमान भरत की आज्ञा प्राप्त कर उनके चरणों की वंदना करके चल दिए। भरत के बाहुबल, शील व शान्त व्यवहार, गुण तथा प्रभु श्रीराम के प्रति अपार स्नेह को देखते हुए मन ही मन बार–बार प्रशंसा करते हुए हनुमान लंका की तरफ चले जा रहे थे।

विशेष–(i) तुलसीदास जी ने हनुमान की भक्ति भावना तथा भरत के गुणों का वर्णन किया है।

(ii) अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।

(iii) दोहा छंद और अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

शेखावाटी मिशन–100

अध्याय–1 वितान (अंक–12)

सिल्वर वैडिंग–मनोहर श्याम जोशी

बहुचयात्मक प्रश्नोतरः–

प्र:1 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के कहानीकार का क्या नाम है ?

(अ) मनोहर वर्मा (ब) फणीश्वर नाथ रेणु (स) मनोहर श्याम जोशी (द) जैनेन्द्र कुमार (स)

प्र:2 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना क्या है?

(अ) परिवार की कहानी (ब) अपनापन

(स) दिखावटीपन (द) पुरानी पीढी व नई पीढी के बीच के अंतराल व वैचारिक मतभेद (द)

प्र:3 "मूर्ख लोग घर बनाते हैं और सयाने लोग उसमें रहते है।" यह कथन किसका है?

(अ) वसन्त का (ब) भूषण का (द)

(स) यशोधर बाबू का (द) किशनदा का

प्र:4 किशन दा अपना मानस पुत्र किसे मानते थे ?

(अ) यशोबर बाबू को (ब) भूषण को (स) गिरिश को (द) छोटे भाई को (अ)

प्र:5 सिल्वर वैडिंग में ऊनी ड्रेसिंग गाउन उपहार लेते समय यशोधर बाबू को बेटे की कौनसी बात चुभ गई थी?

(अ) ऊनी गाउन लाने की बात (ब) ऊनी गाउन पहनने की बात

(स) ऊनी गाउन पहनकर दूध लाने की बात (द) कोई बात नहीं चुभी (स)

प्र:6 जब सब्जी लेकर यशोधर बाबू घर पहुँचे तो उनकी दशा कैसी थी?

उत्तर– द्वारिका जाने वाले सुदामा जैसी

प्र:7 यशोदर बाबू का तकिया कलाम वाक्य क्या था?

उत्तरः– सम हाउ इंप्रोपर।

प्र:8 किशन दा की मृत्यु किस रोग से हुई?

उत्तर– जो हुआ होगा से।

प्र:9 अपनी पत्नी के मॉडर्न बनने पर यशोधर बाबू क्या कहकर उसका मजाक बनाते थे?

उत्तर– चटाई का लहँगा, शानयल बुढ़िया, बूढी मुँह मुँहासे, लोग करें तमासे।

प्र:10 यशोधर बाबू जूनियरों के दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण कैसे करते है?

उत्तर– चलते–चलते मनोरंजक बात कहकर।

प्र:11 यशोधर बाबू का विवाह हुआ था –

उत्तर– 6 फरवरी, 1947 को

प्र:12 यशोधर बाबू के मतानुसार वैडिंग एनिवर्सरी किनके चोंचले है?

उत्तर– गोरे लोगों के।

प्र:13 यशोधर बाबू घर जल्दी लौटना पसंद नहीं करते थे क्यों?

उत्तर– पत्नी और बच्चों से छोटी–बड़ी बात में मतभेद होना।

प्र:14 अब इस 'व–रल्ड' की नहीं .... उसकी चिंता करनी है। यहाँ उसकी से आशय है–

उत्तर– परलोक की।

प्र:15 "हमारा तो सैप ही ऐसा देखा ठहरा" यह नारा किसका था?

उत्तर– यशोधर बाबू का।

प्र:16 यशोधर बाबू अपने संस्कारों से थे –

उत्तर– कुमाऊँनी।

प्र:17 ऑफिस से छुट्टी होने पर यशोधर बाबू कहाँ जाते थे?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) सीधे घर (ब) मैदान में (स) बिड़ला मंदिर (द) कहीं नहीं (स)

प्र:18 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू के आदर्श कौन थे?

उत्तर– किशनदा (कृष्णानंद)

लघुत्तरात्मक प्रश्नोत्तर–

प्र:1 किशनदा की कौन–सी छवि यशोधर बाबू के मन में बसी हुई थी?

उत्तर– किशनदा की जो छवि यशोधर बाबू के मन में बसी हुई है वह 'सुबह की सैर' को निकले किशनदा की है, कुर्ते–पाजामे के ऊपर ऊनी गाउन पहने, सिर पर गोल विलायती टोपी, पाँवों में देशी खड़ाऊँ धारण किए हुए और हाथ में कुत्तों को भगाने के लिए एक छड़ी लिए हुए।

प्र:2 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने क्या संदेश व्यंजित किया है?

उत्तर– "सिल्वर वैंडिग" कहानी के माध्यम से कहानीकार ने पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के मध्य टकराहट का चित्रण किया है। यशोधर बाबू प्राचीन मान्यताओं के समर्थक है और किशनदा के विचारों को ही अपना आदर्श मानकर उनके अनुसार चलने का प्रयास करते है तो दूसरी और उनकी पत्नी और बच्चों में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है वे अपने पिता को पुरानी पीढ़ी का मानकर उनको सम्मान नहीं देते। इससे उनके पारिवारिक जीवन में पीढियों का द्वन्द्व चलता रहता है।

प्र:3 "सिल्वर वैडिंग" से इस कहानी का क्या आशय है ?

उत्तर– सिल्वर वैडिंग से इस कहानी का आशय विवाह की 25 वीं से वर्षगाँठ है अर्थात यशोधर बाबू के विवाह की 25 वीं वर्षगाँठ है। जिसके माध्यम से परिवार के आपसी संबंधों को व्यक्त किया गया है।

प्र:4 भूषण ने अपने पिता को उपहार में ऊनी गाउन लाकर क्यों दिया? 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर– भूषण ने अपने पिता को उपहार में ऊनी गाउन इसलिए लाकर दिया कि उसके पिता जब प्रातःकाल दूध लाने जाते थे तो फटा गाउन पहनकर जाते थे । भूषण को पिता से ज्यादा अपनी इज्जत की चिंता थी। अर्थात लज्जा से बचने के लिए ही उपहार में पिता को गाउन लाकर दिया।

प्र:5 "बच्चों का होना भी जरूरी है" यशोधर बाबू के इस कथन को समझाइए।

उत्तर – यशोधर बाबू का मानना है कि बच्चे बड़े होकर भले ही मनमानी करने लगते है लेकिन बच्चों का होना भी जरूरी है। बच्चों के बिना बुढापा ठीक से नहीं गुजरता और मृत्यु भी किशनदा की तरह 'जो हुआ होगा' से होती है।

प्र:6 नए युग के वे कौन–से मानक थे, जिनसे आदमी को बड़ा मान लिया जाता है? यशोधर बाबू की असहमति उनसे क्यों थी? आप क्या सोचते है? तर्क सहित बताइए।

उत्तर– यशोधर बाबू के अनुसार नये युग में फ्रीज और गैस का चूल्हा ऐसे उपकरण है जिनसे व्यक्ति समाज में बड़ा मान लिया जाता है। लेकिन यशोधर बाबू का मानना था कि फ्रीज तो बासी चीजों को रखने का उपकरण ठहरा उसका पानी गला पकड़ता है और गैस के चूल्हे पर बनी रोटी यशोधर बाबू के मन के अनुरूप न होने से, इनके प्रति यशोधर बाबू की असहमति थी।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:7 यशोधर बाबू को घर जल्दी लौटना पसन्द नहीं था। क्यों ? सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर– यशोधर बाबू का अपनी पत्नी व बच्चों से हर छोटी–बड़ी बात में पिछले कई वर्षों से मतभेद होने लगा जिससे वे घर जल्दी लौटना पसंद नहीं करते हैं।

प्र:8 "सिल्वर वैडिंग" कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर– कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि जीवन में आधुनिकता का समावेश करें परन्तु पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण नहीं करें। बड़ों को छोटो के प्रति स्नेह का व्यवहार करना चाहिए तथा छोटों को भी बड़ों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

प्र:9 यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असमर्थ रहते है, ऐसा क्यों?

उत्तर– यशोधर बाबू पुरानी परम्पराओं को मानते है। उन्हें आधुनिक पहनावें, पश्चिमी जीवन–शैली तथा रहन–सहन से नफरत है तथा किशनदा को अपना आदर्श मानते हैं। अतः वे समय के साथ ढल सकने में समर्थ नहीं हो पाते ।

प्र:10 यशोधर बाबू ने अपनी पत्नी में समय के अनुसार क्या–क्या परिवर्तन देखे?

उत्तर – यशोधर बाबू की पत्नी बुढापे में भी बगैर बाँह का ब्लाउज पहनती थी, रसोई से बाहर दाल–भात खा लेती थी, ऊँची हील वाली सैंडल पहनती थी, होठों पर लाली और बालों में खिजाब लगाती थी।

प्र:11 ''वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन पैदा करें'' यशोबर बाबू की इस सोच के कौनसे कारण थे ? लिखिए ।

उत्तर– पुरातन परम्परा के अनुयायी यशोबर बाबू बच्चों की तरक्की से खुश है, लेकिन नूतन संस्कारों के फलस्वरूप उनके बेटे बेटी यशोधर बाबू के सुझावों को अनदेखा कर अपने अनरूप कार्य क्षेत्र चुनते है व अन्य व्यवहार करते है जो यशोधर बाबू को समहाऊ इंप्रापर मालूम होते है, तभी वे कहते है कि वह खुशहाली भी कैसी जो अपने में परायापन पैदा करें।

प्र:12 यशोधर बाबू अपने बच्चों से क्या अपेक्षा रखते थे? 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर बताइए।

उत्तर– यशोधर बाबू अपने बच्चों से यह अपेक्षा रखते थे कि वे अपने घर परिवार में कोई भी कार्य करते समय उनसे सलाह अवश्य लें। भले ही उनकी बात को अधिक महत्त्व न दे पर उनका सम्मान बनाए रखे। लेकिन उनके बच्चे किसी भी कार्य में उनसे सलाह नहीं लेते। बच्चों की विचारधारा थी कि जिस बात को अब्बा जानते ही नहीं तो उनसे क्यों पूछी जाए।
इसी से वे बिना पूछे ही हर कार्य करते थे। यशोधर बाबु जानते थे कि बच्चों की नॉलेज उनसे ज्यादा है पर मन में अपेक्षा तो रहती ही थी।

दीर्घ उत्तरात्मक / निबंधात्मक प्रश्नः–

प्र:1 "सिल्वर वैडिंग" कहानी के आधार पर यशोधर बाबू के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– यशोधर बाबू 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के चरित नायक है वे नये परिवेश में मिसफिट होने की त्रासदी झेलते हुए परस्परा पंथी व्यक्ति है। हर अधेड़ व्यक्ति की तरह वे अपनी पुरानी आदतों और संस्कारों से बंधे हुए है। उनका वर्तमान उनके संस्कारों से मेल नहीं खाता। उनकी चारित्रिक विशेषताएं अधोलिखित है–

(i) **कर्तव्यनिष्ठ –**

यशोधर बाबू पत्नी और बच्चों के विरोध के बावजूद पिता का कर्तव्य पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाते है।

शेखावाटी मिशन–100

वे अपने बच्चों को बहुत अच्छी शिक्षा दिलाते है। उन्हें पारिवारिक रिश्तों और समाज संस्कृति से जोड़ने का भी भरसक प्रयत्न करते है परन्तु समाज की हवा के सामने टिक नहीं पाते।

(ii) **पारिवारिक व सामाजिक परम्पराओं के निर्वाहक-**

यशोधर बाबू पारिवारिक, सामाजिक व धार्मिक परम्पराओं को निभाने वाले है वे अपनी बहन या बहनोई के सुख–दुख में भागीदार होना चाहते है वे रामलीला, होली गवाना, जन्यों पुन्यूं आदि परम्पराओं का पालन करते हैं इनके रिहर्सल के लिए अपने क्वार्टर का कमरा भी देते है। रोज धार्मिक प्रवचन सुनने के लिए बिड़ला मंदिर जाते है तथा पूजा पाठ भी करते है ये सभी परम्पराएँ उनकी पत्नी व बच्चों को बुरी लगती है।

(iii) **आधुनिकता एवं पाश्चात्य संस्कृति के विरोधी-**

यशोधर, बाबू आधुनिकता के नाम पर मनमानी करने, उच्छृंखल होने, कम कपड़े पहनने तथा नये–नये उपकरणों को अपनाने के पक्षधर नहीं हैं। उन्हें अपनी शादी की रजत जयंती मनाना गैर–जरूरी लगता है। इसी प्रकार पत्नी व बेटी का आधुनिक कपड़े पहनना आपत्तिजनक लगता है। वास्तव में उनके संस्कार उन्हें अपनी तरह जीने के लिए प्रेरित करते है।

प्र:2 "नयी पीढ़ी और नवीन जीवन मूल्य, पुरानी पीढी और प्राचीन जीवन मूल्य – इन दोनों के मध्य सदैव टकराहट चलती रहती है।" "सिल्वर वैडिंग" कहानी के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर– पुरानी और नयी पीढ़ियों के बीच विचारों की टकराहट सदा चलती रहती है। दोनों पीढ़ियों का यह विचार – भेद कभी मिटता नहीं। हर युग में यह समाज के सामने प्रकट होता है।"सिल्वर वैडिंग" कहानी में यशोधर बाबू तथा किशनदा पुरानी पीढ़ी और पुराने जीवन मूल्यों के प्रतीक है। यशोधर बाबू के पुत्र–पुत्री और दफ्तर के चड्ढा नयी पीढ़ी और नए जीवन मूल्यों को मानने वाल हैं। पूरी कहानी में इनका टकराव दिखाई देता है। यशोधर का संयुक्त परिवार को पसंद करना, पुराने गरीब रिश्तेदारों से घुलना मिलना, उनकी आर्थिक मदद करना, पुरानी तरह के कपड़े पहनना, साइकिल पर दफ्तर जाना, मंदिर जाना, धार्मिक आयोजन करना उनके बच्चों तथा पत्नी को पसंद नहीं है। बच्चों और पत्नी द्वारा पाश्चात्य रहन–सहन, खानपान, वैडिंग पार्टी को अपनाना यशोधर बाबू को अच्छा नहीं लगता। कहानी में आरम्भ से अंत तक वैचारिक संघर्ष का चित्रण है।

प्र:3 आधुनिकता की और बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नयी उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए है। सिल्वर वैंडिग कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– सिल्वर वैडिंग कहानी के कथानायक यशोधर बाबू एक ऐसे संस्कारी व्यक्ति है, जो पुराने संस्कारों एवं मान्यताओं से चिपके रहते है परन्तु उनकी पत्नी एवं पुत्र–पुत्री नयी पीढी के संस्कारों को अपनाकर आधुनिक बन जाते है। फलस्वरूप उनके विचार, सोचने का ढंग, उनकी कार्य प्रणाली पूरी तरह से परिवर्तित हो जाती है। वे आधुनिक सोच के वशीभूत होकर स्वार्थी बन जाते है उन्हें रिश्तेदारों से कोई मतलब नही रह जाता है। बड़ों के प्रति सम्मान, आदरभाव, मानवीय सद्गुण समाप्त हो गए है। यशोधर बाबू चाहते है कि उनके बच्चे अनुभवी होने के नाते उनसे कुछ सलाह लिया करें। उनका बड़ा पुत्र उपेक्षापूर्ण कहता है– ''बब्बा, आप तो हद करते हैं। जो बात आप जानते ही नहीं आपसे क्यों पूछें?'' इस कारण

शेखावाटी मिशन–100

यशोधर बाबू की परिवारजनों से टकराहट चलती रहती है फिर भी वे सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास करते रहते हैं।

प्र:4 "सिल्वर वैडिंग" कहानी का कथानक आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण एवं बदलते मानवीय मूल्यों पर आधारित है। इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

उत्तर–. "सिल्वर वैडिंग" कहानी वर्तमान जीवन धारा का चित्रण भर देती है। वह आधुनिक समय का दर्पण है जिसमें पुरानी और नयी पीढी का अंतराल देखा जा सकता है। नए बच्चे आधुनिक पश्चिमी संस्कृति को अंधाधुंध अपना रहे है। उन्हें न तो माता–पिता की परवाह है न रिश्तेदारी की। वे अपनी परम्पराओं को भी दकियानूसी मानकर छोड़ रहे है। लेखक यह दिखाना चाहता है कि वर्तमान समय करवट ले रहा है नयी पीढ़ी अपनी जड़ों को छोड़ रही है। पुरानी पीढी निस्तेज है। ऐसे में पुराने संस्कारों वाले लोग हँसी के पात्र बन रहे हैं या अकेले होते जा रहे है दोनों ही स्थितियाँ उचित नहीं है। लेखक बिना कहे नयी पीढ़ी को संदेश देना चाहता है कि वह अपने पूर्वजों का, पारिवारिकता का और परम्पराओं का सम्मान करे। उन्हें तिलांजलि न दे। दूसरी ओर, नयी पीढ़ी को नई चुनौतियों के अनुसार ढलना चाहिए।

प्र:5 'संयुक्त परिवार वाले उस दौर में पति ने हमारा पक्ष कभी नहीं लिया।' इस कथन का 'सिल्वर वैंडिग' पाठ के प्रासंगिक वर्तमान परिपेक्ष में तर्क दीजिए ।

उत्तर– 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू की पत्नी ने यशोबर बाबू के विचारों का विरोध करते हुए बताया कि जब उनका विवाह हुआ था तब यशोधर बाबू का परिवार संयुक्त रूप से रहता था। उस समय यशोधर बाबू अपने परिवार वालों की बातों को अधिक महत्व देते थे, उन्होंने अपनी पत्नी के विचारों पर कभी भी ध्यान नहीं दिया। उनकी पत्नी चाहती है कि उनके पति अपनी पत्नी को स्वतंत्रता दे, उन पर बंदिशें नहीं लगाएं। वे अपनी पत्नी के खुले विचारों का समर्थन करें। अपने रिश्ते नातों और सामाजिकता को अधिक महत्त्व नहीं दें। लेकिन यशोबर बाबू अब भी पारिवारिकता को महत्त्व देते थे इसलिए उनकी पत्नी को लगता है कि उन्होंने कभी भी उसका साथ नहीं दिया। जब से वह इस घर में आई है तब से उसकी बात मानने वाला कोई नही था। इस कारण अब वे अपने बच्चों के साथ मिलकर अपने मन की अधूरी इच्छाएँ पुरी करना चाहती है। इसलिए वह समय के साथ ढल जाती है। अपने बच्चों के व्यवहार को उचित ठहराती है।

शेखावाटी मिशन–100

अध्याय–2 (जूझ)

आनंद यादव

बहुचयात्मक प्रश्नोतरः–

प्रः1 'जूझ' कहानी के रचयिता कौन है?

(अ) धर्मवीर भारती (ब) मनोहर श्याम जोशी

(स) आनंद यादव (द) जयशंकर प्रसाद (स)

प्रः2 'जूझ' कहानी क्या संदेश देती है?

(अ) संघर्ष करने की प्रेरणा (ब) अपनेपन की प्रेरणा (अ)

(स) लड़ने की सीख (द) खेती की प्रेरणा

प्रः3 'जूझ' कहानी किस शैली में लिखी गई है?

(अ) आत्मकथात्मक उपन्यास शैली (ब) कहानी शैली

(स) संस्मरण शैली (द) डायरी शैली (अ)

प्रः4 लेखक आनंद यादव को किसने कविताएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित किया?

(अ) मंत्री मास्टर ने (ब) मराठी अध्यापक न. वा. सौंदलगेकर ने (ब)

(स) लेखक के पिता ने (द) गाँव के मुखिया दत्ताजी राव ने

प्रः5 किसके कहने पर लेखक के पिता ने लेखक को स्कूल भेजना शुरु किया?

(अ) गाँव के मुखिया दत्ताजी राव के कहने पर (ब) पड़ोसी के कहने पर (अ)

(स) अध्यापक के कहने पर (द) माता के कहने पर

प्रः6 पाठशाला मे लेखक की मित्रता किसके साथ हुई ?

(अ) वसंत पाटिल (ब) मास्टर मंत्री (स) केशव करणी (द) मास्टर सौंदल गेकर (अ)

प्रः7 'सवेरे से तू पाठशाला जाता रह, कुछ भी हो, पूरी फीस भर दे उस मास्टर की। यह शब्द किसने कहे? 'जूझ' पाठ के आधार पर बताइए।

(अ) लेखक की मां ने (ब) दत्ताजीराव ने (स) लेखक के पिता ने (द) लेखक के चाचा ने (ब)

प्रः8 'आनंदा' फिर से कौनसी कक्षा में जाकर बैठने लगा ?

(अ) चौथी (ब) पाँचवी (स) सातवीं (द) तीसरी (ब)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न–

प्रः1 पढाई में सुधार के लिए लेखक ने किसका अनुसरण किया?

उत्तर– वसंत पाटिल का

प्रः2 'जूझ' पाठ का लेखक किस अध्यापक से सर्वाधिक प्रभावित हुआ?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– न.वा. सौदलगेकर

प्र:3 दादा ने अपने बेटे के सामने स्कूल जाने के लिए क्या शर्त रखी?

उत्तर– स्कूल जाने से पहले खेतों में पानी लगाना, स्कूल से आने के बाद पशु चराना, काम अधिक होने पर स्कूल से गैर हाजिर रहना।

प्र:4 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए कि लेखक के पिता ने उसकी पढाई क्यों छुड़वा दी?

उत्तर– खेती में काम करवाने के कारण।

प्र:5 लेखक का दादा कोल्हू जल्दी क्यों चलवाना चाहता था?

उत्तर– लेखक का दादा कोल्हू जल्दी इसलिए चलवाना चाहता था कि उनका गुड़ सबसे पहले बाजार में आए तो उसके पैसे (भाव) अच्छे मिलेंगे।

प्र:6 लेखक की माँ उदास एवं निराश क्यों थी?

उत्तर– क्योंकि वह जानती थी उसके पिता के सामने लेखक की पढाई की बात, करेगी तो वह उसकी एक नहीं सुनेगा। बरहेला सूअर की तरह गुर्राएगा।

प्र:7 वसंत पाटिल कौन था?

उत्तर– वसंत पाटिल लेखक की कक्षा का एक छात्र था। दुबला–पतला, शांत स्वभाव का और पढ़ने में बड़ा होशियार था।

प्र:8 "माँ के मन में जंगली सूअर बहुत गहराई में बैठा हुआ था।" इसमें जंगली सूअर किसे कहा गया है?

उत्तर– जंगली सूअर लेखक के पिता को कहा गया है।

प्र:9 मंत्री मास्टर पढ़ाते थे–

उत्तर– गणित।

प्र:10 "इन कविताओं के साथ खेलते हुए मुझे दो बड़ी शक्तियाँ प्राप्त हुई।" कथन है –

उत्तर– लेखक आनंद यादव का

प्र:11 मराठी अध्यापक न.वा. सौंदलगेकर ने किस पर कविता लिखी थी?

उत्तर– मालती की बेल पर।

प्र:12 वे प्रायः छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। हाथ से गरदन पकड़कर पीठ पर घूसा लगाते थे। यह शब्द किसके बारे में कहे गए है? 'जूझ' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर– मंत्री मास्टर

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए कि लेखक के पिता ने उसकी पढाई क्यों छुड़वा दी?

उत्तर– 'जूझ' कहानी में लेखक के पिता स्वयं अपने खेत पर काम नहीं करना चाहते थे। वे अपने खेत का सारा काम लेखक से करवाकर स्वयं गाँव भर में घूमना चाहते थे। इसलिए उन्होंने उसकी पढाई छुड़वा दी।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:2 कविता से लगाव के बाद लेखक को अकेले रहना क्यों अच्छा लगने लगा?

उत्तर– कविता से लगाव होने के बाद लेखक अपने खेत का काम करते हुए भी प्रसन्न रहता था, क्योंकि वह खेत पर काम करते हुए कविताओं को ऊँचे स्वर में गा सकता था। कभी–कभी तान आने पर नाच भी सकता था। इसलिए कविता लेखन के बाद उनका अकेलापन भी उन्हें अच्छा लगता था।

प्र:3 स्कूल में लेखक का ध्यान पढाई में कब लगने लगा? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर– लेखक जब स्कूल जाने लगा तो प्रारंभ में शरारती लड़कों के कारण वह थोड़ा डरा सहमा रहता था लेकिन कक्षा मॉनिटर वसंत पाटिल से दोस्ती होने के बाद और गणित तथा मराठी विषय के अध्यापकों के अच्छे व्यवहार के कारण लेखक का ध्यान पढ़ाई में लगने लगा। वह पहले की अपेक्षा ध्यान देकर पढने लगा और कक्षा के होशियार छात्रों में उसका नाम आने लगा।

प्र:4 'जूझ' आत्मकथात्मक अंश की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'जूझ' आत्मकथात्मक अंश की मूल संवेदना जीवन के संघर्ष से जुड़ी है। 'जूझ' का तात्पर्य भी लड़ना या संघर्ष करना ही होता है। यहाँ भी एक गरीब किसान के पुत्र की मेहनत, पढने की लगन व संघर्ष को प्रकट किया गया है। यह बालक भी अपने घर की विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष कर एक अच्छा होशियार विद्यार्थी बनता है। अपनी रुचि का विकास करते हुए एक अच्छा कवि बनता है। अतः यहाँ सच्ची मेहनत व लगन से अपने लक्ष्य को पाने का संदेश दिया है।

प्र:5 लेखक सौंदलगेकर मास्टर के किस प्रकार नजदीक पहुँच गया?

उत्तर– लेखक मराठी अध्यापक न.वा. सौंदलगेकर से कविता सुनकर और उनकी लय, ताल, छंद समझकर व कविता के प्रति आकर्षण के कारण उनके नजदीक पहुँच गया।

प्र:6 लेखक आनंद यादव के छात्र जीवन से क्या–क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर– लेखक आनंद यादव के छात्र जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि जैसे बालक आनंदा ने अपने परिवार की परिस्थिति को समझकर अपनी माँ से स्वयं के पढने की बात की और गाँव के मुखिया का सहयोग लेकर अपने पिता का समर्थन पाया और पाठशाला की हर बाधा को पार कर कक्षा मॉनिटर बना, वैसे ही अपनी सच्ची लगन व मेहनत से कठिनाई को दूर करके अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए।

प्र:7 लेखक की मराठी भाषा कैसे सुधरने लगी?

उत्तर– मराठी अध्यापक सौंदलगेकर के सम्पर्क में आने से उनको कविता को लय, ताल से सुनने के कारण उच्चारण की शुद्धता अलंकार, छंद व शुद्ध लेखन के बारे में जानकारी मिली, साथ ही स्वयं कविता रच लेने के कारण लेखक की मराठी भाषा सुधरने लगी।

प्र:8 लेखक को यह विश्वास कैसे हुआ कि कवि भी अपने जैसा ही एक हाड़–माँस का क्रोध लोभ का मनुष्य ही है?

उत्तर– मराठी अध्यापक न.वा. सौंदलगेकर के सम्पर्क में आने व उनके द्वारा कविता सुनाने व कविता पर चर्चा करने के कारण लेखक

शेखावाटी मिशन–100

की कवियों के प्रति धारणा बदली और लेखक को लगा कि मैं भी कविता रच सकता हूँ। कवि उसे हाड़–माँस व क्रोध–लोभ का मनुष्य ही लगने लगा।

प्र:9 वसंत पाटिल से दोस्ती होने के बाद लेखक के व्यवहार में कौन से परिवर्तन हुए?

उत्तर– वसंत पाटिल एक होशियार विद्यार्थी था। वह सीधा सादा और प्रतिभाशाली बालक था। उससे दोस्ती होने पर लेखक का मन पढाई में लगने लगा। गणित के सवाल पहले उसे समझ में नहीं आते थे लेकिन वसंत पाटिल से दोस्ती के बाद वह समस्या भी दूर हो गई और अब वह भी वसंत पाटिल के साथ कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के सवाल जाँचने लगा। जिससे उसका व्यवहार भी बदल गया और पाठशाला में विश्वास भी बढ़ने लगा।

प्र:10 'जूझ' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'जूझ' का अर्थ है – संघर्ष करना, मुश्किलों से लड़ते हुए आगे बढ़ना। जूझ आत्मकथात्मक उपन्यास का यह शीर्षक एकदम उपयुक्त है। कहानी का नायक आनंद यादव आरंभ से अंत तक कठिन परिस्थितियों से जूझता रहता है। जूझते – जूझते वह सफल हो जाता है इसी संघर्ष और जूझारू प्रवृति को उजागर करने के लिए उपन्यास का शीर्षक भी 'जूझ' रखा गया है। यह शीर्षक सार्थक संक्षिप्त और जिज्ञासापरक है। इसे हम सार्थक शीर्षक कह सकते है

प्र:11 'जूझ' कहानी 'प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच संघर्ष की कहानी है' कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

उत्तर– 'जूझ' पाठ के लेखक आनंद यादव का सम्पूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण रहा जिसने खेलने कूदने की उम्र में एक योद्धा की तरह संघर्ष किया। बाल्यकाल में उसके पिता ने खेती के काम करवाने के उद्देश्य से उसकी पढाई छुड़वा दी फिर भी उसने हार नहीं मानी व निराश नहीं हुआ। पढाई के प्रति लगन के कारण माँ व दत्ताजी राव की सहायता से पुनः पाठशाला में प्रवेश पाने के लिए संघर्ष किया। वहाँ पर भी साथियों ने उसे परेशान किया। फिर भी एकाग्रता एवं धैर्य से संघर्ष करते हुए सभी अध्यापको का चहेता बन गया। खेती के कार्य के साथ विद्याध्ययन एवं साहित्य सर्जन (काव्य रचना) का कार्य संघर्ष से करते हुए कवि बन गया।

दीर्घउत्तरात्मक / निबंधात्मक प्रश्न–

प्र:1 'जूझ' कहानी के लेखक के चरित्र की कौन–सी विशेषताएँ आपको प्रभावित करती है कारण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'जूझ' आत्मकथात्मक अंश के कथानायक सामान्य किशोरों से भिन्न दिखाई देता है उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित है–

(i) **<u>भविष्य के प्रति सचेत–</u>**

लेखक (कथानायक) अपने भविष्य के प्रति सचेत है वह जानता है कि पढ़ने से नौकरी मिल सकती है इससे भविष्य बन सकता है खेती से नहीं। इस कारण वह माँ को लेकर दत्ताजी राव के पास जाता है क्योंकि वह जानता है उनके आदेश का पालन दादा को करना ही पड़ेगा।

(ii) **<u>पढ़ने की ललक–</u>**

वह स्कूल में पढ़ना चाहता है वह कक्षा के होशियार विद्यार्थी वसंत पाटिल की प्रतिभा से प्रभावित होकर स्वयं लगन से पढ़ता है और अंत में वह वसंत पाटिल की तरह ही योग्य बन जाता है।

(iii) **अध्यापकों का प्रिय–**

कक्षा में उसकी पढ़ाई के प्रति लगन देखकर मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर उसे बहुत चाहते है, उसे कविता लिखने की प्रेरणा देते है, उसके द्वारा लिखी गई कविताओं को सही करते है। वह अच्छा कवि बन जाता है।

(iv) **कठोर परिश्रमी–**

लेखक कठोर परिश्रमी है, वह अपने कठोर परिश्रम से दादा की सभी शर्तों को पूरा करता है। तथा कक्षा में भी कठोर परिश्रम से होशियार विद्यार्थियों में गिना जाता है।

प्र:2 लेखक का पाठशाला में विश्वास कैसे बढ़ा। 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर– कक्षा का मॉनिटर वसंत पाटिल काफी होशियार था। लेखक ने उससे मित्रता की। एकाग्रता एवं वसंत पाटिल को देखकर उसकी भी गणित में रूचि के कारण गणित समझ में आने लगा। इससे वह गणित के शिक्षक की नजरों में योग्य छात्र बन गया।

मराठी शिक्षक सौंदलगेकर कविताओं को लय, गति एवं हाव भाव के साथ पढ़ाते थे। इससे लेखक ने भी सस्वर कविता वाचन का प्रयास किया। उसमें उसे काफी आनंद प्राप्त हुआ। मराठी शिक्षक ने उसे एक समारोह में कविता पाठ करने का मौका दिया। साथ ही कविता रचने की प्रेरणा दी। इससे लेखक का आत्मविश्वास बढ़ा।

प्र:3 दत्ताजी राव ने लेखक की मदद किस प्रकार की? 'जूझ' कहानी के आधार पर समझाइए।

उत्तर– दत्ता जी राव ने लेखक के दादा को फटकार लगाई और लेखक को कल से पाठशाला जाने को कहा और कहा मास्टर जी की फीस भर दे, मन लगाकर पढ़। यदि वह तुझे पाठशाला न जाने दे तो मेरे पास चले आना। मैं पढ़ाऊँगा तुझे। यह कहकर मदद की।

प्र:4 पाठशाला भेजने के लिए लेखक के दादा ने उससे क्या–क्या वचन लिए थे?

उतर – लेखक के दादा उसे स्कूल भेजने के पक्ष में नहीं थे। लेखक और उसकी माँ दत्ता जी राव के पास गए। दत्ता जी राव के समझाने पर दादा तैयार तो हुए लेकिन लेखक के दादा ने कहा– पाठशाला जाने से पहले दिन निकलते ही खेत पर जाएगा और खेतों में पानी लगाएगा। और सीधा स्कूल जाएगा, स्कूल से छुट्टी होते ही बस्ता घर पर रखकर घण्टे भर तक ढोर चराएगा। यदि कभी खेत पर अधिक काम हो तो उस दिन पाठशाला से गैर–हाजिर रहेगा। ये शर्ते मंजूर हो तो ही स्कूल जाने की अनुमति दी जाएगी। लेखक ने ये सभी शर्ते मानी और पालन किया।

प्र:5 'जूझ' कहानी के आधार पर समझाइए कि लेखक आनंद यादव की मराठी भाषा कैसे सुधारने लगी ?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– आनंद यादव के स्कूल में न. वा. सौंदलगेकर मराठी भाषा के शिक्षक थे। वह कवि भी थे। कक्षा में कविताएँ गाकर सुनाते थे। आनंद यादव की रूचि उनकी प्रेरणा से कविता की ओर बढी। वह स्वयं कविता लिखता और उनको दिखाता। वे उसमें सुधार करते। आनंद के प्रति उनकी आत्मीयता बढी। आनंद उनके घर जाने लगा। मास्टर जी उनको कवि की भाषा के बारे में समझाते थे। छंद और अलंकारों के बारे में भी बताते थे। वे लेखक को शुद्ध लेखन का ढंग बताते तथा अन्य कवियों की पुस्तकें व कविता–संग्रह पढ़ने के लिए देते थे। इन कारणों से सौंदलगेकर से निकटता और अपनापन होने के कारण आनंद यादव का मराठी भाषा का ज्ञान बढ़ता गया तथा जाने–अनजाने पर उसकी भराठी भाषा सुधरने लगी। वह अत्यन्त तन्मयता के साथ मराठी पढ़ाते थे। उनका व्यवहार भी छात्रों के प्रति स्नेहपूर्ण था अतः लेखक के जीवन पर उनका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।

शेखावाटी मिशन–100

अध्याय–3 (अतीत में दबे पाँव)

ओम थानवी

बहुचयात्मक प्रश्नोत्तर

प्र:1 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक रचना के लेखक कौन है?

(अ) विष्णु खरे (ब) ओम थानवी (स) मनोहर जोशी (द) महादेवी वर्मा (ब)

प्र:2 मुअनजो–दड़ो का अर्थ है–

(अ) काली चूडियाँ (ब) मोहन का पुरा (स) मुर्दों का टीला (द) कृष्ण का गाँव (स)

प्र:3 मुअनजो–दड़ो का काल कौन–सा था?

(अ) ताम्रकाल (ब) पाषाण काल (स) लौह काल (द) कांस्य काल (अ)

प्र:4 सिंधु घाटी की सभ्यता को किस सभ्यता के समकक्ष माना जाता है?

(अ) मिस्र की सभ्यता (ब) मेसोपोटामिया (इराक)

(स) क और ख दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं (स)

प्र:5 महा कुंड के पास मिले ज्ञानशालाओं के अवशेषों को क्या नाम दिया गया है?

(अ) कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स (ब) यज्ञ स्थल (अ)

(स) सचिवालय (द) संत निवास

प्र:6 मुअनजो–दड़ो शहर कितने हैक्टर क्षेत्र में फैला था ?

(अ) तीन सौ हैक्टर (ब) दो सौ हैक्टर (स) सौ हैक्टर (द) चार सौ हैक्टर (ब)

प्र:7 नागर भारत का सबसे पुरान लैंडस्केप किसे कहा गया है?

(अ) बौद्ध स्तूप को (ब) जल कुंड को (स) ज्ञानशाला को (द) महाकुंड को (अ)

प्र:8 सिन्धुघाटी सभ्यता मूलतः थी–

(अ) औद्योगिक सभ्यता (ब) व्यापारिक सभ्यता

(स) खेतिहर एवं पशुपालक (द) पर्यटन सभ्यता (स)

प्र:9 इतिहासकारों के अनुसार मुअनजो–दड़ो में लगभग कितने कुएँ थे?

(अ) पाँच सौ के करीब (ब) सात सौ के करीब

(स) चार सौ के करीब (द) तीन सौ से करीब (ब)

प्र:10 मुअनजो–दड़ो के एक छोटे घर की खुदाई में निकला प्रसिद्ध 'नर्तकी' शिल्प कहाँ है ?

(अ) दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय (ब) लंदन के संग्रहालय

(स) पाकिस्तान के संग्रहालय (द) मुअनजो–दडो के संग्रहालय (अ)

प्र:11 सिन्धु घाटी संस्कृति किस प्रकार की मानी जाती है?

(अ) पहाड़ी संस्कृति (ब) मैदानी संस्कृति (स) जल संस्कृति (द) वनवासी संस्कृति (ब)

अतिलघुतरात्मक प्रश्न–

प्र:1 मुअनजो–दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गांव की याद आई?

उत्तर– कुलधरा।

प्र:2 मुअनजो–दड़ो की खोज किसने व कब की?

उत्तर– राखाल दास बनर्जी ने सन् 1922 ई0 में।

प्र:3 मुअनजो–दड़ो की आबादी लगभग कितनी थी?

उत्तर– 85000

प्र:4 सिंधु सभ्यता की आड़ी और सीधी सड़कों को आज के वास्तुकार क्या कहते है?

उत्तर– ग्रिड प्लान।

प्र:5 स्तूप से महाकुंड की और जाने वाले रास्ते का नाम क्या रखा गया है?

उत्तर– डिविनिटी स्ट्रीट यानि देव मार्ग।

प्र:6 मुअनजोदड़ो में रंगाई का छोटा कारखाना खुदाई के समय किसे मिला था?

उत्तर– माधोस्वरुप वत्स को।

प्र:7 सिंधु सभ्यता की खूबी सौन्दर्य बोध है, जो राजपोषित या धर्मपोषित न होकर था–

उत्तर– समाज पोषित।

प्र:8 सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा और समृद्ध शहर था–

उत्तर– मुअनजो–दड़ो ।

प्र:9 लेखक के अनुसार सिंधु सभ्यता को आज के एक मुहावरे में कहा जाएगा–

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– लो – प्रोफाइल सभ्यता।

प्र:10 सिंधु सभ्यता को अन्य सभ्यताओं से अलग करने वाला प्रमुख तत्त्व है–

उत्तर– प्रभुत्व या दिखावे के तेवर का नदारद होना।

लघुत्तरात्मक प्रश्नोत्तर–

प्र:1 मुअनजो–दड़ो का अर्थ बताते हुए इसके बारे में क्या धारणा व्यक्त की गई है? उसे लिखिए।

उत्तर– मुअनजो–दड़ो का शाब्दिक अर्थ है– मूर्दो का टीला यह पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में स्थित है। इसे पुरातत्व का महत्त्वपूर्ण स्थल माना जाता है। इसके बारे में धारणा यह है कि अपने समय में वह घाटी की सभ्यता का केन्द्र अर्थात राजधानी रहा होगा। यह शहर दो सौ हैक्टेयर क्षेत्र में फैला था तथा इसकी आबादी पिच्यासी हजार थी।

प्र:2 ग्रिड प्लान से आप क्या समझते है? आधुनिक नगरनियोजन में कौन–से शहर ग्रिड शैली के शहर है?

उत्तर– नगर नियोजन के समय एकदम सीधी या आड़ी सड़कों की बनावट को वास्तुकार ग्रिड प्लान कहते है अर्थात नगर निर्माण में सड़कों को बिल्कुल सीधे या आड़े आकार में बसाया जाता है। जिससे आमने–सामने के भवनों को शुद्ध वातावरण प्राप्त होता है। वर्तमान में ब्रासीलिया, चंडीगढ़ और इस्लामाबाद शहर इसी ग्रिड शैली के शहर है जो आधुनिक नगर नियोजन के प्रतिमान ठहराए जाते है।

प्र:3 कुलधरा कहाँ स्थित है? इसकी प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– कुलधरा जैसलमेर के मुहाने पर पीले पत्थरों से निर्मित घरों वाला एक खूबसूरत गाँव है, लेकिन उस गाँव की खूबसूरती में एक गमी व्याप्त है, क्योंकि वहाँ के बाशिंदें अपने स्वाभिमान के कारण राजा से तकरार होने के कारण रातों–रात घर छोड़कर चले गए और यह स्थान अब खंडहर मात्र शेष है अर्थात यह सुंदर क्षेत्र अपने स्वाभिमान के कारण आज वीराने में तब्दील हो गया है।

प्र:4 मुअनजो–दड़ो की खुदाई अब क्यों बंद कर दी गई है?

उत्तर– सिंधु नदी के पानी के रिसाव से क्षार और दलदल की समस्या पैदा हो गई है। मौजूदा खंडहरों को बचाकर रखना ही अब अपने आप में बड़ी चुनौती है। इसलिए मुअनजो–दड़ों की खुदाई अब बंद कर दी गई है।

प्र:5 पुरात्तत्ववेताओं ने किस भवन को देखकर उसे 'कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स' माना है?

उत्तर– महाकुंड के उत्तर–पूर्व में एक बहुत लंबी–सी इमारत के अवशेष हैं। इसके बीचों बीच खुला बड़ा दालान है। तीन तरफ बरामदे हैं। इनके साथ कभी छोटे–छोटे कमरे रहे होंगे। पुरातत्त्व के जानकार कहते है कि धार्मिक अनुष्ठानों में ज्ञानशालाएँ सटी हुई होती थीं, उस नजरिए से इसे 'कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स' माना जा सकता है।

प्र:6 पुरातत्त्ववेता सिंधु घाटी सभ्यता को 'तर सभ्यता' क्यों कहते है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– पुरातत्त्ववेता सिंधु घाटी सभ्यता को 'तर सभ्यता' कहते है क्योंकि वहाँ की खुदाई में पक्की ईंटों से बने सात सौ कुएँ मिले

है, एक महाकुंड मिला है। जल निकासी के लिए नालियों की सुंदर व्यवस्था है। एक दूसरे के विपरीत मुख वाले आठ स्नानागार मिले है। नदी, कुएँ, कुंड और बेजोड़ पानी–निकासी इसलिए इस सभ्यता को तर सभ्यता कहते है।

प्र:7 सिंधु सम्यता के लोग स्वास्थ्य के प्रति सजग थे, कैसे ? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर– मुअनजो–दड़ो के घरों के आसपास तथा महाकुंड के बाहर गंदा पानी नहीं फैले, इसलिए वहाँ पर पक्की और समरूप आकार की ईंटों से बनी हुई नालियों का निर्माण किया गया था। ढकी हुई नालियाँ मुख्य सड़क के दोनों तरफ समांतर दिखाई देती हैं। हर घर में एक स्नानघर है। घरों के भीतर से पानी या मैल की नालियाँ बाहर हौदी तक आती है और फिर नालियों के जाल से जुड़ जाती हैं। इससे गंदा पानी गलियों में नहीं बहता था और स्वच्छता बनी रहती थी। इससे सिद्ध होता है कि सिंधु सभ्यता के लोग स्वास्थ्य के प्रति सजग थे।

प्र:8 नागर भारत का पुराना लैंडस्केप किसे कहा गया है?

उत्तर– नागर भारत का पुराना लैंडस्केप सिंधु सभ्यता की खुदाई से मिले 'बौद्ध स्तूप' को कहा गया है जो पच्चीस फूट ऊँचे चबूतरे पर छब्बीस सदी पहले बनी ईंटो से निर्मित है। चबूतरे पर बौद्ध भिक्षुओं के कमरे भी बने हुए है।

प्र:9 मुअनाजो–दड़ो की खूबी या विशेषता क्या है ?

उत्तर– मुअनजो–दड़ो को खूबी यह है कि उस आदिम शहर की सड़को एवं गलियों में आप आज भी घूम–फिर सकते हैं। यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति का सामान चाहे संग्रहालयों की शोभा बढा रहा हो किन्तु शहर जहाँ था, वहीं है। आप इसकी किसी भी दीवार पर पीठ टिका कर सुस्ता सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आज भी वह शहर सजीवता का आभास दिलाता है।

प्र:10 मुअनजो–दड़ो के 'रंगरेज के कारखाने' का वर्णन कीजिए।

उत्तर– प्रस्तुत पाठ में लेखक ओम थानवी ने बताया है कि मुअनजो–दड़ो में स्तूप के पश्चिम है गढ़ी के ठीक पीछे की ओर माधव स्वरूप वत्स ने खुदाई करवायी थी। वहीं पर रंगरेज के कारखाने जैसा एक अवशेष प्राप्त हुआ है। जमीन में ईंटो के गोल घेरे उभरे हुए दिखाई देते है, जिससे अनुमान लगाया जाता है कि इसमें रंगाई के बड़े बर्तन रखे जाते थे। जमीन में बने हुए इन गोल गड्ढों को देखकर ही रंगरेज के कारखाने का अनुमान सिद्ध होता है।

दीर्घउत्तरात्मक / निबंधात्मक प्रश्न–

प्र:1 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर मुअनजो–दड़ो के महाकुंड का वर्णन कीजिए।

उत्तर– मुअनजो–दड़ो में बौद्ध स्तूप के समीप एक महाकुण्ड अवस्थित है। यह कुण्ड चालीस फुट लम्बा, पच्चीस फुट चौड़ा तथा सात फुट गहरा है। कुण्ड के उत्तर और दक्षिण दिशा से सीढ़ियाँ उतरती हैं। इसके तीन तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं। उत्तर में दो पंक्तियों में आठ स्नानघर बने हुए है। उन स्नानघरों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि किसी का भी दरवाजा एक–दूसरे के सामने नहीं खुलता है यह कुण्ड सिद्ध वास्तुकला का सुन्दर नमूना है। इस कुण्ड की खास बात यह है कि यहाँ पक्की ईटो का जमाव है। कुंड का पानी रिस न सके, और बाहर का

शेखावाटी मिशन–100

अशुद्ध पानी कुण्ड में न आए, इसके लिए कुंड के तल में और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है। पार्श्व की दीवारों के साथ दूसरी दीवार खड़ी की गई हैं जिसमें सफेद डामर का प्रयोग हुआ है।

प्र:2 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिन्धु घाटी सभ्यता में खेती का वर्णन कीजिए।

उत्तर– मुअनजो–दड़ो की खुदाई से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता को उद्योग–व्यापार की सभ्यता माना गया था। बाद में हुई नवीन खोजों के अनुसार यह माना गया कि वहाँ के लोग खेती करते थे तथा पशुपालन भी करते थे।

इतिहासकार इरफान हबीब के अनुसार यहाँ के लोग रबी की फसल पैदा करते थे। वे गेहूँ, जौ, चना, सरसों, कपास आदि पैदा करते थे। खेती के लिए पत्थर तथा ताँबे से बने औजार प्रयोग में लाए जाते थे। खेती के लिए कुओं के पानी का इस्तेमाल होता था। वहाँ खुदाई में प्राप्त मिट्टी की बनी पशुओं की आकृतियाँ, बैलगाड़ी आदि से यह पता चलता है कि लोग गाय, बैल आदि पशुपालते थे तथा उनका उपयोग खेती के लिए किया जाता था। इस प्रकार सिंधु सभ्यता खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी।

प्र:3 मुअनजो–दड़ो के अजायबघर में सिंधु सभ्यता को बताने वाली कौन–सी वस्तुएँ मिली है?

उत्तर– 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के लेखक ओम थानवी ने बताया है कि मुअनजो–दड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत वस्तुओं कि संख्या पचास हजार से ज्यादा है। लेकिन अजायबघर में जो थोड़ी सी चीजें प्रदर्शित की गई हैं, वे सिंधु सभ्यता की झलक दिखाने में काफी है। उनमें काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, चाक पर बने विशाल मृदभांड, उन पर बने काले भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप तौल के पत्थर, ताँबे का आइना, मिट्टी की बैलगाड़ी और दूसरे खिलौने, दो पाटन की चक्की, कंघी मिट्टी के कंगन, रंग–बिरंगे पत्थरों के मनके वाले हार, पत्थरों के औजार, ताँबे व काँसे की बहुत सारी सुइयाँ भी है। यहाँ नर्तकी व दाढी वाले नरेश की मूर्ति भी है। इसके साथ ही अजायबघर में तैनात अली नवाज ने बताया कि कुछ सोने के गहने भी यहाँ हुआ करते थे जो चोरी हो गए हैं।

प्र:4 मुअनजो–दड़ो की सभ्यता लघुता में भी महत्ता का अनुभव कराने वाली 'लो प्रोफाइल' सभ्यता थी। कैसे? समझाइए।

उत्तर– मुअनजो–दड़ो अर्थात सिंधु घाटी सभ्यता सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य सभ्यताओं से भिन्न थी। वहाँ राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले चिह्न नहीं है। उपासना स्थल, पिरामिड और मूर्तिया अवश्य मिली है, परन्तु बड़े–बड़े महल, मंदिर या समाधियाँ नहीं है जो वहाँ के धर्म तंत्र को दर्शाता है। राजाओं और महंतों की समाधियाँ नहीं होने से राजतंत्र का रूप नहीं कह सकते। यहाँ छोटे औजार और मूर्ति शिल्प देखने को मिला है। नरेश के सिर पर मुकुट अर्थात सिरपेंच अत्यधिक छोटा हैं। नावें भी अत्यंत छोटे आकार की मिली है। इसलिए इस सभ्यता को लो–प्रोफाइल या लघुता का महत्व देने वाली सभ्यता मान सकते है।

प्र:5 'सिन्धु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा आपसी समझ से अनुशासित सभ्यता थी।'' 'अतीत में दबे पाँव' के

शेखावाटी मिशन–100

आधार पर स्पष्ट कीजिए–

उत्तर– सिन्धु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा आपसी समझ से अनुशासित थी क्योंकि सभ्यता के अन्तर्गत वहाँ पर हथियार नही मिले है, इससे ज्ञात होता है कि वहाँ राजतंत्र व्यवस्था नहीं थी जिसके पास अनुशासन रखने के लिए सेना होती है। वहां की अनुशासन व्यवस्था समाज के आपसी समझ पर ही आधारित थी। समाज द्वारा ही अनुशासन बनाए रखा जाता था। इसी कारण वहाँ की व्यवस्था अत्यंत अनुशासित थी, बसावट एवं रहन सहन कला सौंदर्य के अनुसार ही थी

प्र:6 मुअनजो–दड़ो के प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– मुअनजो–दड़ो का प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप लगभग छब्बीस सौ वर्ष पुराना है। इससे इस सभ्यता की प्राचीनता का भी ज्ञान होता है। यह विश्व का सबसे प्राचीन स्तूप है। यह एक मानव निर्मित पक्की ईटों के चबूतरे पर स्थित है। चबूतरे पर बौद्ध भिक्षुओं के कमरे भी बने हुए है। यह स्तूप गढ़ के एक सिरे पर स्थित है। इस स्तूप से ही सत्ता का संचालन होता था। यही इमारत आज तक अपने मूल स्वरूप में बची हुई है, जो इसकी विशेषता का आभास कराती है। इसलिए मुअनजो–दड़ो का बौद्ध स्तूप वहाँ के खंडहरों में भी अपनी अलग ही पहचान रखता है

शेखावाटी मिशन–100

भाषा; लिपि, एवं व्याकरण शब्द शक्ति अलंकार

भाषाः– भाषा शब्द संस्कृत की भाष धातु से बना है, जिसका अर्थ हैः –कहना या प्रकट करना।

परिभाषा :– भाषा वह साधन जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों, विचारों या अनुभवों का आदान–प्रदान करता है।

भाषा के दो रूप है–

1. मौखिक भाषा–साधारणतया बोलचाल की भाषा को मौखिक भाषा कहते है। जैसे नेताजी ने भाषण दिया।

2. लिखित भाषा – जब उच्चरित ध्वनि संकेतों को निश्चित चिह्नों या ध्वनि संकेतों द्वारा लिखकर व्यक्त किया जाता है, उसे लिखित भाषा कहते है। जैसे– रीना पत्र लिख रही है।

ध्वनि – मौखिक भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है।

वर्ण – लिखित भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है।

बोली – भाषा का सीमित, अविकसित तथा आम बोलचाल वाला रूप बोली कहलाता हैं। जैसे– मेवाड़ी, मारवाड़ी, हरियाणवी, भोजपुरी।

भाषा – भाषा व्यापक क्षेत्र में बोली जाती है जिसमें प्रचुर मात्रा में साहित्य होता है, राजकाज में प्रयुक्त व शिक्षा का माध्यम होती है। जैसे हिन्दी, तेलगु, मराठी।

परिनिष्ठित / मानकभाषा भाषा का रूप जिसे उस क्षेत्र का शिक्षित वर्ग आदर्श मानता है, यह व्याकरण सम्मत होती है और इसका प्रयोग लेखन, प्रशासन, शिक्षा व साहित्य में किया जाता है। जैसे हिन्दी। खड़ी बोली

राजभाषा – राजकाज की भाषा / प्रशासन की भाषा।

राष्ट्रभाषा – राष्ट्र / देश की भाषा

हिन्दी की बोलियॉ – हिन्दी केवल खड़ी बोली के रूप में ही विकसित नहीं है, अपितु इसमें अन्य बोलियों का भी समावेश है। जो इस प्रकार है–

(i) पश्चिमी हिन्दी – इसमें खड़ी बोली (कोरवी), ब्रज, बुंदेली, कन्नौजी, हरियाणवी बोलियों शामिल है।

(ii) पूर्वी हिन्दी – इसमें अवधी, बघेली, छतीसगढ़ी बोलियों शामिल है।

(iii) पहाड़ी हिन्दी – इसमें कुमाऊँनी, नेपाली व गढ़वाली बोलियों शामिल है।

(iv) राजस्थानी हिन्दी – इसमें मारवाड़ी, मेवाती, मालवी तथा जयपुरी शामिल है।

(v) बिहारी हिन्दी– इसमें भोजपुरी, मगही, मैथिली बोलियाँ आती है।

संवैधानिक प्रावधान

संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343–351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान है। अनुच्छेद 343(1) के अनुसार हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएं शामिल है।

हिन्दी दिवस 14 – सितंबर (14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा राजभाषा की मान्यता देने के कारण)

लिपि – किसी भी भाषा को लिखने के लिए प्रयोग किए जाने वाले निश्चित चिह्नों / संकेतों को ही लिपि कहते है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है, जो बाँयी से दाँयी ओर लिखी जाती है।

व्याकरण

व्याकरण शब्द वि + आ + करण से बना है, जिसका अर्थ हैः व्याख्या करना।

परिभाषा भाषा को शुद्ध बोलने, शुद्ध लिखने एवं शुद्ध प्रयोग करने संबंधी नियमों की जानकारी देने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते है।

व्याकरण के अंगः व्याकरण के तीन अंग है–

1. वर्ण विचार – (वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है, जैसे–क्,च्,ट्)

2. शब्द विचार – (वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते है, जैसे– क + म + ल = कमल)

3. वाक्य विचार – (निश्चित क्रम से संयोजित शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते है, जैसे–नीयति फुटबॉल खेलती है।)

प्रश्नः–

1. भावों, विचारों या अनुभवों का आदान–प्रदान करने वाले साधन को......... कहते है।

उत्तर–भाषा

2. भाषा के दो रूप .... तथा .... है।

उत्तर– मौखिक और लिखित

3. भाषा की सबसे छोटी इकाई .... है।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– वर्ण

4. हिन्दी दिवस .... को मनाया जाता है।

उत्तर– 14 सितम्बर

5. किसी भी भाषा को लिखने के लिए प्रयोग किए जाने वाले निश्चित चिह्नों / संकेतों को .... कहते है।

उत्तर– लिपि

6. व्याकरण के .... अंग है। नाम लिखिए।

उत्तर– तीन वर्ण विचार, शब्द विचार, वाक्य विचार

7. संविधान की आठवीं अनुसूची में .... भाषाएं शामिल है।

उत्तर– 22

8. भाषा को शुद्ध बोलने, शुद्ध लिखने एवं शुद्ध प्रयोग करने संबंधी नियमों की जानकारी देने वाले शास्त्र को .... कहते है।

उत्तर– व्याकरण

9. वर्णों के सार्थक समूह को .... कहते है।

उत्तर– शब्द

10. हिन्दी भाषा की लिपि .... है।

उत्तर– देवनागरी

11. भाषा का सीमित, अविकसित तथा आम बोलचाल वाला रूप .... कहलाता हैं।

उत्तर–बोली

शेखावाटी मिशन–100

प्रकरण – शब्द शक्ति

परिभाषा :– बुद्धि का वह व्यापार जिससे किसी के शब्द के निश्चयात्मक अर्थ का बोध होता है, शब्द शक्ति कहलाती है। तीन प्रकार के शब्द और तीन प्रकार के अर्थ होते है, इन्हीं के अनुरूप तीन प्रकार की शब्द शक्तियों होती है–

शब्द	अर्थ	शब्द शक्ति
वाचक	वाच्यार्थ	अभिधा
लक्षक	लक्ष्यार्थ	लक्षणा
व्यंजक	व्यंग्यार्थ	व्यंजना

1. अभिधा शब्द शक्ति :– वह शब्द शक्ति जिससे किसी शब्द के मुख्यार्थ प्रचलित या नामचीन अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते है।

उदाहरणः–
1. जयपुर जाता हूँ।
2. भारत की राजधानी दिल्ली है।
3. शुभमन गिल क्रिकेट खेलता है।
4. वह पत्थर तोड़ती है।

2. लक्षणा शब्द शक्तिः अभिधा के असमर्थ हो जाने पर जिस शब्द शक्ति के माध्यम से अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) का बोध होता है, उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहते है।

शर्त :– मुख्यार्थ में बाधा, मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में संबंध।

लक्षणा शब्द शक्ति के भेदः– रूढा लक्षणा, प्रयोजनवती लक्षणा

उदाहरण :– 1. रितिका गाय है।

2. राजस्थान वीर है।

3. लाल टोपी जा रही है।

4. चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

3. व्यंजना शब्द शक्तिः वह शब्द शक्ति वित्त किसी विशेष अर्थ (व्यंग्यार्थ) का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते है। अर्थात जब अभिधा और लक्षणा अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है, तब काव्य के गूढ़ अर्थ को प्रकट करने वाली शब्द शक्ति व्यंजना कहलाती है।

उदाहरणः– 1. माँ ने कहा, संध्या हो गई।

2. साहब चार बज गए है। 3. सूरज सिर पर आ गया है।

व्यंजना शब्द शक्ति के भेदः–

1. शाब्दी व्यंजना – जहाँ किसी शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है।

उदाहरणः– चिरजीवी जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।।

वृषभानुजा – राधा, गाय **हलधर** – कृष्ण, बैल

2. आर्थी व्यंजना – जहाँ किसी अर्थ विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है। इसमें पर्यायवाची शब्द रखने पर भी वही अर्थ निकलता है।

उदाहरणः– अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में दूध और आँखों में पानी ।।

रिक्त स्थान की पूर्ति वाले प्रश्न :–

1. बुद्धि का वह व्यापार जिससे किसी के शब्द के निश्चयात्मक अर्थ का बोध होता है .... कहलाती है।

उत्तर– शब्द शक्ति

2. तीन प्रकार के शब्द होते है– 1. .... 2. .... 3. ....

उत्तर– 1. वाचक 2. लक्षक 3. व्यजंक

3. मुख्यार्थ, वाच्यार्थ, प्रचलित या नामवाची अर्थ का का बोध कराने वाली शब्द शक्ति को .... शब्द शक्ति कहते है।

उत्तर– अभिधा

4. वह पत्थर तोड़ती है। पंक्ति में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर– अभिधा

शेखावाटी मिशन–100

5. अभिधा के असमर्थ हो जाने पर जिस शब्द शक्ति के माध्यम से अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) का बोध होता है, उसे .... शब्द शक्ति कहते है।

उत्तर– लक्षणा

6. मुख्यार्थ में बाधा तथा मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में संबंध ....शब्द शक्ति में होता है।

उत्तर– लक्षणा शब्द शक्ति

7. लक्षणा शब्द शक्ति के दो भेद :– 1. .... लक्षणा 2. .... लक्षणा।

उत्तर– 1. रूढ़ा लक्षणा 2. प्रयोजनवती लक्षणा

8. चोर नौ दो ग्यारह हो गया। पंक्ति में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर– लक्षणा शब्द शक्ति

9. राजस्थान वीर है। पंक्ति में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर– लक्षणा

10. वह शब्द शक्ति जिससे किसी विशेष अर्थ (व्यंग्यार्थ) का बोध होता है, उसे .... शब्द शक्ति कहते हैं।

उत्तर– व्यंजना

11. जब अभिधा और लक्षणा अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है, तब काव्य के गूढ़ अर्थ को प्रकट करने वाली शब्द शक्ति .... कहलाती है।

उत्तर– व्यंजना

12. व्यंजना शब्द शक्ति के दो भेदः 1. .... व्यंजना 2 .... व्यंजना ।

उत्तर– 1. शाब्दी व्यंजना 2. आर्थी व्यंजना

13. जहाँ किसी शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है। वहाँ .... व्यंजना होती है।

उत्तर– शाब्दी व्यंजना

14. जहाँ किसी अर्थ विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है। वहाँ .... व्यंजना होती है।

उत्तर– आर्थी व्यंजना

15. चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर ।।

पंक्तियों में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर– शाब्दी व्यंजना

16. अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में दूध और आँखों में पानी।।

पंक्तियों में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर– आर्थी व्यंजना

शेखावाटी मिशन–100

प्रकरण : अलंकार

अलंकार :– अलंकार का अर्थ है सजावट या आभूषण। जिस प्रकार स्त्रियां आभूषण से सुसज्जित होकर आकर्षक व सुन्दर दिखती है उसी प्रकार अलंकार के प्रयोग से काव्य अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बनता है। ''काव्य शोभाकरान धर्मान अलंकारान् प्रचक्षते'' अर्थात काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व अलंकार कहलाते है।

अलंकार के प्रकार :– अलंकार तीन प्रकार के होते है–

1. शब्दालंकार :– वे अलंकार जो शब्दों के माध्यम से काव्य का सौन्दर्य बढाते है, शब्दालंकार कहलाते है। जैसे– अनुप्रास, यमक, श्लेष।

2. अर्थालंकार – वे अलंकार जो अर्थों के माध्यम से काव्य सौन्दर्य बढ़ाते है, अर्थालंकार कहलाते है। जैसे–उपमा, रूपक, मानवीकरण।

3. उभयालंकार :– वे अलंकार जो दोनों (शब्द व अर्थ) के माध्यम से काव्य का सौन्दर्य बढ़ाते है। जैसे– श्लेष, वक्रोक्ति

(1) अनुप्रास अलंकार :–

काव्य में जहाँ एक ही वर्ण की आवृति एक से अधिक बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरणः–
1. तरनि तनूजा तट तरूवर तमाल बहु छाये।
2. चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रही है जल, थल में।
3. हमारे हरि हारिल की लकड़ी।
4. रघुपति राघव राजा राम
5. भगवान भक्तों की भयंकर भूरिभीति भगाइए।

अनुप्रास अलंकार के चार भेद हैः–

1. छेकानुप्रास 2. वृत्यानुप्रास 3. अंत्यानुप्रास 4. श्रुत्यानुप्रास

(2) यमक अलंकार :–

काव्य में जहाँ एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आये तथा उसका अर्थ अलग–अलग निकले तो वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरणः–
1. काली घटा का, घमंड घटा।
2. तीन बेर खाती थी, वे तीन बेर खाती है।
3. सजना है, मुझे सजना के लिए।
4. कनक–कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय ।।
5. माला फेरत जुग भया, मनका मनका फेर।

(3) श्लेष अलंकार :–

यह एक उभयालंकार है। काव्य में जहाँ एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हो, वहीं श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरणः :–
1. रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सन।
   पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून।।

शेखावाटी मिशन–100

2. चरण धरत चिंता करत, चितवत चारहुँ ओर।
सुबरन को ढूंढत फिरत कवि व्यभिचारी, चोर।।

(4) विभावना अलंकार :–

जो भी कार्य किया जाता है उसके पीछे कोई कारण अवश्य होता है लेकिन जब किसी पद में बिना कारण के ही कार्य का होना पाया जाता है, तो वहां विभावना अलंकार होता है।

वाचक :– बिना, बिनु, बिन, रहित

उदाहरणः– 1. निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छावाय।
बिन पानी साबुन बिन निर्मल करै सुभाय।।

2. दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल।
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल ।।

(5) वक्रोक्ति अलंकार :–

प्रत्यक्ष अर्थ के अतिरिक्त भिन्न अर्थ समझ लेना वक्रोक्ति अलंकार कहलाता है। अर्थात किसी एक बात के अनेक अर्थ होने के कारण सुनने वाले के द्वारा अन्य अर्थ ले लिया जाए, वहाँ वक्रोक्ति अलकार होता है।

उदाहरणः– 1. कौ तुम? मैं घनश्याम।
तो बरसों कित जाय ।।

2. कौन द्वार पर? हरि मैं राधे!
क्या वानर का काम यहाँ?

(6) अतिशयोक्ति अलंकार :–

काव्य में जहाँ किसी बात को अत्यधिक बढ़ा–चढ़ा कर वर्णित की जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरणः– 1. हनुमान की पूँछ में, लग न पायी आग।
लंका सारी जल गई, गए निशाचर भाग।।

2. आगे नदियां पड़ी अपार घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पार।

(7) संदेह अलंकार :–

काव्य में जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर यह निश्चित नहीं हो पाता है कि यह वही है या कोई और तथा यह संदेह अंत तक बना रहता है, वहाँ संदेह अलंकार होता है।

वाचक शब्द :– कि, कैंधो, किधौं, या

उदाहरणः– 1. सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
सारी ही कि नारी है कि नारी ही कि सारी है।।

2. ये है सरस ओस की बूँदें या है मंजुल मोती?

शेखावाटी मिशन–100

(8) भ्रांतिमान अलंकार :–

काव्य में जहाँ अत्यधिक समानता के कारण किसी वस्तु को देखकर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए वहीं भ्रांतिमान अलंकार होता है।

वाचक शब्द :– जानकर, मानकर, समझकर

उदाहरण:–

1. मुन्ना तब मम्मी के सर पर देख देख दो चोटी।
   भाग उठा भय मानकर सर पर सॉपिन लोटी ।।
2. ओस बिंदु चुग रही हंसिनी, मोती उनको जान

(9) विरोधाभास अलंकार :–

काव्य में जहाँ किसी पदार्थ, गुण या क्रिया में वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

उदाहरण:–

1. मैं निज रोदन में, राग लिए फिरता हूँ।
   शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ।।
2. या अनुरागी चित की गति समझे नहिं कोय ।
   ज्यों–ज्यों बूड़े स्याम रंग त्यों–त्यों उज्ज्वल होय ।।

रिक्त स्थान वाले प्रश्न :–

1. काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व .... कहलाते है।

उत्तर– अलंकार

2. अलंकार .... प्रकार के होते है।

उत्तर– तीन

3. वे अलंकार जो शब्दों के माध्यम से काव्य का सौन्दर्य बढाते है .... कहलाते है।

उत्तर– शब्दलंकार

4. वे अलंकार जो अर्थों के माध्यम से काव्य सौन्दर्य बढाते है............ कहलाते है।

उत्तर– अर्थालंकार

5. काव्य में जहाँ एक ही वर्ण की आवृति एक से अधिक बार होती है, वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– अनुप्रास

6.''हमारे हरि हारिल की लकड़ी।'' पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– अनुप्रास

7. अनुप्रास अलकार के .... भेद है।

उत्तर– चार

8. ''तरनि तनूजा तट तरूवर तमाल बहु छाये।'' पंक्ति में .... अलंकार है।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– अनुप्रास

9- ''सजना है, मुझे सजना के लिए।'' पंक्ति में .... है। अलंकार है।

उत्तर– यमक

10. काव्य में जहाँ एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आये तथा उसका अर्थ अलग–अलग निकले तो वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर–यमक

11. ''काली घटा का, घमंड घटा।'' पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– यमक

12. ''तीन बेर खाती थी, वे तीन बेर खाती है।'' पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– यमक

13. श्लेष अलंकार एक .... है।

उत्तर– उभयलंकार

14. काव्य में जहाँ एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हो, वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– श्लेष

15. '' सुबरन को ढूंढ़त कवि व्यभिचारी चोर। पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– श्लेष

16. ''पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून। पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– श्लेष

17. जब किसी पद में बिना कारण के ही कार्य का होना पाया जाता है, तो वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– विभावना

18. ''बिन पानी साबुन बिन निर्मल करै सुभाय।'' पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– विभावना

19. काव्य में जहाँ किसी पदार्थ, गुण या क्रिया में वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो, वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– विरोधाभास

20. ''मैं निज रोदन में, राग लिए फिरता हूँ।
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ।।''

पद में .... अलंकार है।

उत्तर– विरोधाभास

21. किसी एक बात के अनेक अर्थ होने के कारण सुनने वाले के द्वारा अन्य अर्थ ले लिया जाए, वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– वक्रोक्ति

शेखावाटी मिशन–100

22. प्रत्यक्ष अर्थ के अतिरिक्त भिन्न अर्थ समझ लेना .... अलंकार कहलाता है।

उत्तर– वक्रोक्ति

23. कौन द्वार पर? हरि में राधे!

क्या वानर का काम यहाँ? पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– वक्रोक्ति

24. काव्य में जहाँ किसी बात को अत्यधिक बढ़ा–चढ़ा कर वर्णित की जाए, वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– अतिशयोक्ति

25. हनुमान की पूँछ में, लग न पायी आग।

लंका सारी जल गई, गए निशाचर भाग ।। पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– अतिश्योक्ति

26. आगे नदियां पडी अपार घोड़ा कैसे उतरे पार।

राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पार ।।

पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– अतिशयोक्ति

27. काव्य में जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर यह निश्चित नहीं हो पाता है कि यह वही है या कोई और तथा यह संदेह अंत तक बना रहता है, वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– संदेह

28. ''कि, कँधो, किधाँ, या'' .... अलंकार के वाचक शब्द है।

उत्तर– संदेह

29. ''ये है सरस ओस की बूँदें या है मंजुल मोती?'' पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– संदेह

30. अत्यधिक समानता के कारण किसी वस्तु को देखकर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए, वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– भ्रांतिमान

31. ''ओस बिंदु चुग रही हंसिनी, मोती उनको जानकर।'' पंक्ति में ....अलंकार है।

उत्तर– भ्रांतिमान

32. मुन्ना तब मम्मी के सर पर देख देख दो चोटी।

भाग उठा भय मानकर सर पर सौंपिन लोटी ।। पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– भ्रांतिमान

33. कनक–कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।। पंक्ति में......................अलंकार है।

उत्तर– यमक

34. बिना, बिनु, बिन, रहित .... अलंकार के वाचक शब्द है।

उत्तर– विभावना

शेखावाटी मिशन–100

35. "या अनुरागी चित की गति समझे नहिं कोय।
ज्यों–ज्यों बूढे स्याम रंग त्यों–त्यों उज्ज्वल होय।।" पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– विरोधाभास

पारिभाषिक शब्दावली

ABILITY	=	योग्यता	ABSENCE	=	अनुपस्थिति
ACADEMIC	=	शैक्षणिक	ACTION	=	कार्यवाही
ADJOURN	=	तदर्थ	ADJUSTMENT-	=	समायोजन
ADMINISTRAT	=	प्रशासन	APPENDIX	=	परिशिष्ट
APPLICANT	=	आवेदक	APPOINTEE	=	नियुक्त व्यक्ति
APPOINTMENT	=	नियुक्ति	APPROVAL	=	अनुमोदन
ARREARS	=	बकाया	ACCUSE	=	अभियोग लगाना
ANNUAL	=	वार्षिक	ASSENT	=	अनुमति
ASSETS	=	परिसम्पति	BASIC PAY	=	मूल वेतन
BENCH	=	न्याय पीठ	BIBLIOGRAPHY	=	संदर्भ ग्रंथ सूची
BILATERAL	=	द्विपक्षीय	BILL	=	विधेयक
BLUE PRINT	=	रूपरेखा	BOARD	=	मंडल/परिषद्
BOND	=	बंध पत्र	BONUS	=	अधिलाभांश
BODY	=	निकाय	BRIEF	=	संक्षेप
CABINET	=	मंत्रिमंडल	CADRE	=	संवर्ग
CANDIDATE	=	उम्मीदवार	CAPITAL	=	पूंजी
CASE	=	प्रकरण	CAUTION	=	सावधानी/चेतावनी
CENSUS	=	जनगणना			
COMMISSION	=	आयोग	COMMITTEE	=	समिति
CORRIGENDUM	=	शुद्धि पत्र	COUNCIL	=	परिषद्
COUNTER FOIL	=	दूसरी प्रति	CREDIT	=	उधार/साख
ALLOWANCE	=	भत्ता	DEARNESS ALLOWANCE	=	मंहगाई भत्ता
DEED	=	विलेख	DELEGATE-	=	प्रतिनिधि
DEMOTE	=	पदावनत	DESPATCH	=	प्रेषण
DISPOSAL	=	निष्पादन	EDUCATIONAL	=	शैक्षणिक

शेखावाटी मिशन–100

ELECTORAL =	निर्वाचन सूची	ELIGIBLE =	पात्र
ENDORSE =	पृष्ठांकन	ENROLMENT=	नामांकन
FISCAL =	राजस्व सूची	FIXATION =	स्थिरीकरण
GAZETT =	राजपत्र	GAZETTED =	राजपत्रित
GRANT =	अनुदान	GUARANTEE =	जमानत / प्रत्याभूति
HERITAGE =	धरोहर	HOST =	आतिथेय
ILLEGAL =	अवैध	INCHARGE =	प्रभारी
INITIAL =	लघु हस्ताक्षर	JOINT =	संयुक्त
INVOICE =	बीजक	JOURNAL =	दैनिक / पत्रिका
LABOUR WELFARE=	श्रम कल्याण	LAND MARK=	सीमा चिह्न
LEASE =	पट्टा	LAY OUT =	खाका / योजना
LEGAL =	वैध	LICENCE =	अनुज्ञप्ति
LOCK OUT =	तालाबंदी	LOG BOOK =	कार्यपंजिका
MANIFESTO =	घोषणा पत्र	MAJORITY- =	बहुमत
MERGER =	विलयन	MEMORANDUM-=	ज्ञापन
MIGRATION =	प्रवास / प्रवजन	MINUTES - =	कार्यवृत
MORGAGE =	बंधक / गिरवी	NATIVE PLACE =	जन्म स्थान
NOTE =	टिप्पणी	OATH =	शपथ
OBSERVER =	प्रेक्षक / पर्यवेक्षक	PACT =	समझौता
PERMIT =	अनुमति	PETITION =	याचिका
PORTFOLIO =	संविभाग	POSTING =	पदस्थापन
PROBATION =	परिवीक्षा	PROTOCOL =	आदिलेख
PUBLIC FUND =	लोक निधि	QUALIFICATION=	योग्यता
QUORUM =	गणपूर्ति	QUARTERLY =	त्रैमासिक
RANK =	पद / श्रेणी	RECEIPT =	रसीद
RECORD =	अभिलेख	RECRUITMENT=	भर्ती
RESOLUTION =	संकल्प	SANCTION =	स्वीकृति
SECURITY =	प्रतिभुति	SECTION =	अनुभाग
STIPEND =	वृत्ति		

शेखावाटी मिशन–100

SURPLUS	=	अधिशेष	TARIFF	=	दर सूची
TOLL TAX	=	पथ कर	TENDER	=	निविदा
TERM	=	अवधि	THEATRE	=	

नाट्यशाला/रंगशाला

TRIBE	=	जनजाति	TRUST	=	प्रन्यास
UNIQUE	=	अनुपम	UTOPIA	=	आदर्शलोक
VALID	=	विधिमान्य	VIGILANCE	=	सतर्कता

अभिव्यक्ति और माध्यम

अतिलघुतरात्मक प्रश्न–

निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नो के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए **(12)**

प्र:1 प्रमुख जनसंचार के माध्यमों में रेडियो किस प्रकार का माध्यम माना जाता है।

(अ) मुद्रित माध्यम (ब) श्रव्य माध्यम (स) दृश्य माध्यम (द) उपर्युक्त सभी (ब)

प्र:2 समाचार, लेखन की उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिया जाता है उसको समाचार की भाषा में कहते है।

(अ) इंट्रो/ मुखड़ा (ब) बॉडी (स) समापन (द) इनमे से कोई नहीं (अ)

प्र:3 अंतरक्रियात्मकता और सूचनाओं की विपुलता का माध्यम जनसंचार का कौनसा माध्यम माना जाता है।

(अ) मुद्रित माध्यम (ब) रेडियो (स) टेलीविजन (द) इंटरनेट (द)

प्र:4 संदर्भ के रूप में प्रयुक्त होने वाला जनसंचार का माध्यम कौनसा है?

(अ) मुद्रित माध्यम (ब) रेडियो (स) टेलीविजन (द) इनमें से कोई नहीं (अ)

प्र:5 रिपोर्टर से प्राप्त दृश्य रहित सूचना को टेलीविजन की भाषा में कहा जाता है।

(अ) एंकर–बाइट (ब) फोन–इन (स) ड्राई–एंकर (द) लाइव (स)

प्र:6 घटना के प्रत्यक्ष दर्शी के लघु साक्षात्कार को टेलीविजन की भाषा में कहा जाता है।

(अ) फोन–इन (ब) एंकर–बाइट (स) ड्राई–एकर (द) एंकर–विजअल (ब)

प्र:7 टेलीविजन पर दृश्यों के साथ प्रयुक्त प्राकृतिक आवाजों को क्या कहा जाता है?

(अ) बाइट (ब) विजुअल (स) नेट–सांउड (द) फ्लैश (स)

प्र:8 रिपोर्टर और कैमरामैन का घटना स्थल से घटना का सीधा प्रसारण टेलीविजन की भाषा में क्या कहलाता है ?

(अ) फोन–इन (ब) एंकर–विजुअल (स) लाइव (द) एंकर बाइट (स)

प्र:9 वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरु करने का श्रेय किसको जाता है।

शेखावाटी मिशन–100

(अ) रीडिफ (ब) सीफी (स) इंडियाइंफोलाइन (द) तहलका डॉट कॉम (द)

प्र.10 भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का वर्तमान में कौनसा दौर चल रहा है।

(अ) पहला दौर (ब) दुसरा दौर (स) तीसरा दौर (द) चौथा दौर (ब)

प्र:11 हिन्दी पत्रकारिता में कौनसा अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

(अ) राजस्थान पत्रिका (ब) भास्कर (स) प्रभासाक्षी (द) जागरण (स)

प्र:12 इंटरनेट पत्रकारिता के क्षेत्र में किस साइट को भारत की प्रथम साइट कहा जा सकता है।

(अ) सीफी (ब) रीडिफ (स) इंडियाइंफोलाइन (द) तहलका डॉटकॉम (ब)

प्र:13 एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक भौर आत्मनिष्ठ लेखन जिसका उद्देश्य पाठको को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ–साथ

मनोरंजन करना भी है कहलाता है।

(अ) स्तम्भ (ब) विशेष लेखन (स) फीचर (द) समाचार (स)

प्र:14 दृश्य की प्राप्ती के पश्चात एंकर दृश्यों के आधार पर खबरें पढ़ता है टेलीविजन की भाषा में इसे क्या कहते है?

(अ) फोन–इन (ब) लाइव (स) एंकर विजुअल (द) बाइट (स)

प्र:15 भारत का पहला छापाखाना कब और कहां खोला गया।

(अ) 1555 – कलकता (ब) 1556 – गोवा (स) 1557 – मुम्बई (द) 1556–सूरत (ब)

प्र:16 एंकर द्वारा घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफिक आदि के जरिये खबर को सम्पूर्णता के साथ पेश करना टेलीविजन की भाषा में कहलाता है।

(अ) एंकर–विजुअल (ब) एंकर–बाइट (स) ब्रेकिंग न्यूज (द) एंकर–पैकेज (द)

प्र:17 रेडियो के लिए समाचार लेखन के सम्बन्ध में कौनसा तथ्य गलत है।

(अ़) समाचार कॉपी को ट्रिपल स्पेस में टाइप करें। (ब) एक लाइन में अधिकतम 12–13 शब्द हो।

(स) % और $ के जैसे संकेत चिह्नो का प्रयोग करें। (द) सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग करे। (स)

प्र:18 जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे प्राचीन माध्यम कौनसा है।

(अ) मुद्रित माध्यम/प्रिंट मिडिया (ब) रेडियो (स) टेलीविजन (द) इंटरनेट

(अ़),

प्र:19 पत्रकारिता में स्टोरीज किसे कहते है।

(अ) खबरों को (ब) विज्ञापनों को (स) ग्राफिक को (द) विशेष लेखन को (अ़)

प्र:20 अखबार की आवाज कौनसा लेख कहलाता है।

(अ) स्तम्भ लेख (ब) संपादकीय लेख (स) आलेख (ब) संपादकीय के नाम पत्र (ब)

अतिलघुतरात्मक प्रश्नः–

प्र:1 समाचार का इंट्रो लिखते समय कौनसे ककारों का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर– क्या, कौन, कहां और कब

शेखावाटी मिशन–100

प्र:2 विशेष रिपोर्ट के कौन–कौनसे प्रकार है?

उत्तर – खोजी रिपोर्ट, इन डेप्थ रिसोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपार्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट

प्र:3 लेखकों के नाम से प्रसिद्ध और पसंद किया जाने वाला लेख कौनसा है ?

उत्तर– स्तम्भ लेख

प्र:4 विशेष क्षेत्र में विशेष लेखन के विशेषज्ञ लेखकों के लिए निर्धारित स्थान को क्या कहते है ?

उत्तर– डेस्क

प्र:5 संवाददाताओं के मध्य कार्य का विभाजन क्या कहलाता है?

उत्तर –बीट

प्र:6 भुगतान के आधार पर अलग– अलग अखबारों के लिए लिखने वाले पत्रकारों को क्या कहा जाता है ?

उत्तर :– फ्रीलांसर

प्र:7 समाचार लेखन प्रायः किस शैली में किया जाता है।

उत्तर –उलटा पिरामिड शैली में

प्र:8 उलटा पिरामिड शैली में समाचार को कितने भागों में बांटा जाता है। नाम लिखिए–

उत्तर – तीन (इंट्रो, बॉडी, समापन)

प्र:9 फीचर लेखन में कौनसी शैली का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर– सीधा पिरामिड शैली / कथात्मक शैली

प्र:10 समाचार लेखन में सामान्तया कितने ककारों का प्रयोग किया जाता है। नाम लिखिए–

उत्तर – समाचार लेखन में छः ककारों का प्रयोग किया जाता है जो निम्न है–

क्या, कौन, कहा, कब, कैसे और क्यों ।

प्र:11 डेडलाइन लाइन किसे कहते हैं ?

उत्तर– अखबार या पत्रिका में समाचार या रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय–सीमा होती है उसे डेडलाइन कहते है।

प्र:12. टेलीविजन को किस प्रकार का माध्यम माना जाता है।

उत्तर– टेलीविजन को श्रव्य दृश्य एवम् एकरेखिय माध्यम माना जाता है।

प्र:13 अखबार का कौनसा स्तम्भ पाठकों का अपना स्तम्भ माना जाता है।

उत्तर –संपादक के नाम पत्र स्तम्भ को पाठको का अपना स्तम्भ माना जाता है है यह सभी अखबारों का स्थाई स्तम्भ है।

प्र:14 एक साक्षात्कार कर्ता में कौन–कौन से गुण होने चाहिए–

उत्तर– संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य, साहस के साथ–साथ पात्र के विषय में पर्याप्त जानकारी जैसे गुण होने चाहिए।

प्र:15 हर्ष भोगले, जसदेव सिंह या नरोतम पुरी किस विशेष लेखन क्षेत्र से सम्बंधित है।

उत्तर – खेल क्षेत्र

शेखावाटी मिशन–100

लघुतेरात्मक प्रश्न

प्र:1 स्तम्भ लेखन के आप क्या समझते है स्पष्ट कीजिए ?

उपर – स्तम्भ लेखन एक विचारपरक लेखन है। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते है। उनकी अपनी एक लेखन शैली भी विकसित हो जाती है ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तम्भ लेखन का जिम्मा दे देता है इसे ही स्तम्भ लेखन कहते है। इस लेखन में विषय चुनने और विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लेखक को प्राप्त होती है।

प्र:2 सम्पादकीय लेखन पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर– आमतौर पर अखबारों के सम्पादकों, सह संपादको द्वारा किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट की जाती है। जिसे अखबार में एक विशेष स्थान पर जगह दी जाती है जिसे संपादकीय पृष्ठ कहते है व इस प्रकार के लेखन को संपादकीय लेखन कहते है संपादकीय लेखन को अखबार की आवाज माना आता है। सामान्यत्या संपादकीय लेखन की जिम्मेदारी संपादक मंडल की होती है।

प्र:3 विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्रों के नाम लिखिए।

उत्तर– विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र निम्न है– अर्थ–व्यापार, खेल, विज्ञान–प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फिल्म–मनोरंजन, अपराध, सामाजिक मुद्दे, कानून आदि।

प्र:4 समाचार लेखन की उलटा पिरामिड शैली पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर– यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली है इसकी शुरुवात 19वीं सदी के मध्य से मानी जाती है। इस शैली का विकास –अमेरिका के गृह युद्ध के दौरान हुआ। इस शैली में समाचार को तीन भागों में बांटा जाता है सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना यानी क्लाइमेक्स सबसे पहले लिखा जाता है जिसे इंट्रो या मुखड़ा कहते है इंट्रों लेखन में मुख्यतः चार ककारो क्या, कौन, कहाँ और कब का प्रयोग किया जाता है। इसके बाद बॉडी मे समाचार का विवरण व विशलेषण क्यों और कैसे ककरों का प्रयोग कर प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली में समापन व बॉडी में कोई खास विभाजन नहीं देखा जाता है।

प्र:5 मुद्रित माध्यमों के लेखन के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(i). भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना जरूरी है।

(ii) प्रचलित भाषा के प्रयोग पर जोर दे।

(iii) समय–सीमा (डेडलाइन) और आंवटित जगह के अनुशासन का पालन करे।

(iv) लेखन में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता बनाए रखना जरूरी है।

(v) जरूरी चित्र व ग्राफिक का प्रयोग करे।

प्र:6 रेडियो के लिए समाचार लेखन करते समय किन्न–किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

उत्तर– चुंकि रेडियो एक श्रव्य व एक रेखीय माध्यम है अतः इसके लिए समाचार लेखन में निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

(i) साफ–सुथरी और टाइप्ड कॉपीः–

शेखावाटी मिशन–100

– समाचार कॉपी को कंप्युटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप करे।

– कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़े।

– एक लाइन में अधिकतम 12–13 शब्द ही लिखे।

– पंक्ति के आखिर में कोई शब्द विभाजित नहीं होना चाहिए।

– पृष्ठ के अन्त में कोई वाक्य विभाजित नहीं होना चाहिए

– बोल–चाल की भाषा का प्रयोग करें

– संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग न करें

– % और $ जैसे संकेत चिह्नो का प्रयोग न करें।

– एक से दस तक की संख्याओं को शब्दों में 11 से 999 तक की संख्याओं को अंको में व इससे उपर की संख्याओ को शब्दों में लिखे।

– समाचार मे समय को आज, आज सुबह, दोपहर, पिछले साल, गत महिने, पिछले शुक्रवार जैसे शब्द से दर्शाये।

प्र:7 टीवी खबरों के विभिन्न चरणों के नाम लिखिए।

उत्तर – फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज, ड्राई–एंकर, फोन–इन, एंकर–विजुअल, एंकर–बाइट, लाइव, एकर – पैकेज ।

प्र:8 फोन–इन से आप क्या समझते हो?

उत्तर–एंकर द्वारा टेलीविजन समाचारों में खबर को विस्तार देने के लिए रिपोर्टर से फोन के माध्यम से सूचनाएं दर्शकों तक पहुंचाने की प्रक्रिया फोन–इन कहलाती है।

प्र:9 पत्रकारीय लेखन किसे कहते है ? पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शको और श्रोताओ तक सूचनाएं पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते है। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं – (i) पूर्णकालिक पत्रकार

(ii) अंशकालिका पत्रकार

(iii) फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र पत्रकार

प्र:10 फीचर किसे कहते है एक अच्छे फीचर की विशेषता लिखिए–

उत्तर –एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन जिसका उद्देश्य, पाठको को सुचना देने, शिक्षित करने के साथ–साथ – मनोरंजन करना फीचर कहलाता है।

एक अच्छे फीचर की भाषा रूपात्मक, आकर्षक व मन को छुने वाली होनी चाहिए। किसी फीचर को रोचक बनाने के लिए उचित फोटो, रेखाकंन व ग्राफिक्स का इस्तेमाल करना चाहिए।

प्र:11 इंटरनेट पत्रकारिता से जुड़ी विशेषताएं और कमियाँ लिखिए।

उत्तर– विशेषताएं:–

दुनिया के किसी भी कोने की खबरें चौबीसों घंटे इंटरनेट पर उपलब्ध होती है इंटरनेट पत्रकारिता, समाचार पत्र, रेडियों

शेखावाटी मिशन–100

व टेलीविजन जैसे सभी माध्यमों की पूर्ति एक स्थान पर कर सकती है। एक सैकेंड में 56 किलोबाइट यानी लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

कमियाः– अश्लीलता, दुष्प्रचार, गंदगी फैलाने का साधन बन चुका है साथ ही विश्वसनीयता का अभाव व सांस्कृतिक प्रदूषण का माध्यम भी बन चुका है।

प्रः12 भारत में इंटरनेट पत्रकारिता पर टिप्पणी लिखिए ।

उत्तरः– भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी दूसरा दौर चल रहा है। भारत में पहला दौर 1993 से शुरु माना जाता है जबकि दूसरा दौर सन 2003 से शुरु हुआ है। पहले दौर में डॉटकॉम का तूफ़ान आया और बुलबुले की तरह फूट गया। आज पत्रकारिता की दृष्टि से टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स, इंडियन एक्सप्रेस राजस्थान पत्रिका, भास्कर जैसे अनेक अखबार अग्रणीय है भारत में सच्चे अर्थो में – वेब पत्रकारिता रीडिफ डॉटकॉम व सीफी जैसी साइटे कर रही है। वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता पर का श्रेय – तहलका डॉट कॉम को जाता है।

प्रः13 किसी कहानी के नाट्य रूपातरण के प्रमुखो चरणों का उल्लेख कीजिए–

उत्तर – (i) कहानी की कथावस्तु का समय व स्थान के आधार पर विभाजन ।

(ii) दृश्यों का निर्माण (iii) दृश्यों का लेखन (iv) संवाद लेखन

(v) मंच साज सज्जा (vi) पात्रों का चरित्र – चित्रण

प्रः14 किन्ही पॉच कहानियों के नाम लिखिए जिनका सफल नाट्य रुपांतरण हुआ है।

उत्तर– (i) चीफ की दावत – भीष्म साहनी (ii) कफन – प्रेमचंद

(iii) ईदगाह – प्रेमचंद (iv) दुविधा – विजयदान देथा

(v) डिप्टी कलेक्टरी – अमरकांत

प्रः15 किसी कहानी के नाटय रूपांतरण में मुख्यतः किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

उत्तर– किसी कहानी के नाट्य रूपांतरण में मुख्यतः पात्रों के मनोभावों, कहानीकार द्वारा विवरण के रूप में व्यक्त प्रसंगो, या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुती जैसी, समस्यायों का सामना करना पड़ता है। आजकल ''वायस ओवर'' अथवा ''फ्लैश बैक' शैली का उपयोग कर इन समस्याओं को हल किया जाता है।

प्रः16 एक रेडियो नाटक लिखते समय – हमें किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर – (i) कथावस्तु पूर्णतः एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर न हो

(ii) रडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट तक की हो

(iii) यदि नाटक समयावधि अधिक है तो उसे धारावाहिक के रूप में पेश करें।

(iv) पात्रों की संख्या सीमित हो

(v) संवाद स्पष्ट व बोल चाल की भाषा में हो।

(vi) किसी प्राकृतिक विषय वस्तु की प्रस्तुति आवाजों /नेट साउंड के माध्यम से हो।

प्रः17 ''जंक फूड की बढ़ती घुसपैठ '' विषय पर फीचर तैयार कीजिए –

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर – मनुष्य को संसार में जीने के लिए भोजन, जल व वायु की आवश्यकता होती है। प्राचीनकाल में उसका जीवन प्रकृति के अनुकुल था किन्तु आज का सभ्य मनुष्य प्रकृति विरुद्ध जीवन जीता है। धन कमाने की व्यस्तता में इंसान का जीवन मशीन हो गया है। पहले मनुष्य सादा जीवन पौष्टिक भोजन पर बल देता था परन्तु आज उसके पास खाना पकाकर खाने का वक्त नहीं है। वह बाजार में मिलने वाले या होटलों में उपलब्ध चटपटे खाने का शौकिन हो गया है। उसे–डिब्बाबंद भोजन करने का चस्का लग गया है इससे मनुष्य का स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरता जा रहा है। विज्ञापनों की ताकत पर घरों में डिब्बाबंद खाने का प्रवेश होता जा रहा है।

प्र:18 हिन्दी नेट पत्रकारिता पर प्रकाश डालते हुए इसकी मुख्य समस्याओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर– हिन्दी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। इंदौर के नयी दुनिया समूह से शुरु हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नेयी दुनिया, हिस्दुस्तान'' 'भास्कर ''राजस्थान' पत्रिका नवभारत टाइम्स जैसे कई हिन्दी अखबारों का वेब संस्करण शुरू हो चुका है। प्रभासाक्षी' नाम से शुरु हुआ अखबार, प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है आज पात्रकारिता के लिहाज से हिन्दी की सर्वेश्रेष्ठ साइट 'बीबीसी' की है। वर्तमान में कुछ पत्रिका जैसे अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिन्दी नेस्ट सराय आदि भी इस क्षेत्र मे अच्छा काम कर रही है।

समस्या – हिन्दी नेट पत्रकारिता की मुख्य समस्या हिंदी के फौंट की है अभी भी हमारे पास कोई एक 'की बोर्ड नहीं है डायनमिक फौंट की अनुपलब्ध के कारण हिन्दी की ज्यादातर साइटें खुलती नहीं है।

प्र:19 खोजी रिपोर्ट एवं इन–डेप्थ रिसोर्ट में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – खोजी रिपार्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के जरिये ऐसी सूचनाएं या तथ्य सामने लाता है जो सार्वजनिक तोर पर पहले से उपलब्दा नहीं थी। खोजी रिपार्ट का इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमिताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

इन डेप्थ रिपोर्ट :– इन डेथ रिपार्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है। और उसके आधार पर किसी घटना समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्वपूर्ण पहलूओं को सामने लाया जाता है।

प्र:20 जातिवाद और सांप्रदायिकता का विष'' विषय पर एक फीचर तैयार कीजिए।

उत्तर– हमारे देश में विभिन्न जातियों तथा संप्रदायों के लोग रहते हैं। हमारे देश के संविधान में धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत को मान्यत दी गई है। सामान्यतः भारत के लोगों में सांप्रदायिक सद्धभाव दृष्टिगोचर होता है। पर कुछ राजनैतिक दल अपने वोटो के राजनैतिक खेल में समाज में जातिवाद तथा सांप्रदायिकता का जहर घोलते हुए नजर आते है। वे देश की विभिन्न जातियों और धर्म के अनुयायियों को आपस में लड़वाते है, दंगा–फसाद करवाते है। यहां तक की हमारे देश में चुनाव जातिगत आधार पर लड़े जाते है। धर्म एक अफीम के नशे की तरह काम करता है। सांप्रदायिकता की इन भीषण लपटो से राष्ट्रीय एकता को खतरा है। अतः हमें बुद्धिमता का परिचय देकर इस विष को समाज से बहिष्कृत करना ही होगा। देश का विकास तभी होगा, जब देश से जातिवाद और सांप्रदायिकता समूल नष्ट हो जायगी।

शेखावाटी मिशन–100

रचनात्मक लेखन (कार्यालय–पत्र)

प्र:1 चूरु कलेक्टर की ओर से रसद विभाग के रजिस्ट्रार चूरु को एक पत्र लिखिए जिसमें राशन की दुकानों पर होने वाली अनियमितताओं के सम्बंध में कार्यवाही का आग्रह किया गया हो।

उत्तर– अंकभार = (04)

राजस्थान सरकार रसद विभाग चूरू

कलेक्ट्रेट कार्यालय

जिला कलेक्टर चूरू

2/वि/आदेश/क्रमांक/प्रशासन/2025 दिनांक– 13 जनवरी, 2025

श्रीमान.........................

आपको सूचनार्थ पत्र प्रेषित कर लेख है कि कल की राजस्थान पत्रिका और दैनिक भास्कर में प्रकाशित रसद विभाग अनियमितताओं को पढ़कार ज्ञात हुआ है कि लगभग सभी सरकारी उचित मूल्यों की राशन दुकानों पर अनियमितता हो रही है। उपलब्ध सामग्री BPL परिवारों को न, वितरण कर कालाबाजारी की जा रही है। अतः इस संदर्भ में आप उचित कार्यवाही कर उचित मूल्य की वस्तुओं की आपूर्ति चयनित गरीब परिवारों को कराना सुनिश्चित करें। अनैतिक कार्य कर रहे सभी राशन डीलरों के लाइसेंस रद्द करे/ आशा है आप इस कार्य को गंभीरता के साथ विचार कर उचित निर्णय करेंगे।

शुभेच्छु

अ ब स

(जिलाधीश चूरु)

विज्ञप्ति

प्र:1 स्वयं को सचिव राजस्थान पाठ्य–पुस्तक मण्डल अजमेर मानते हुए सभी पुस्तक विक्रेताओं को सूचित करने की विज्ञप्ति जारी कीजिए ताकि सभी पुस्तक विक्रेता अपना पंजिकरण समय पर करवा सके।

उत्तर– कार्यालय, सचिव, राजरथान पाठ्य –पुस्तक, मण्डल, अजमेर

रा0/पा./पु./मण्डल/अजमेर/2025 दिनांक–10 जनवरी, 2025

विज्ञप्ति संख्या:- 07/2024

शीर्षकः–पुस्तक विक्रेताओं का पंजीकरण

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित विभिन्न कक्षाओं की पाठ्य–पुस्तकें केवल उन्हीं पुस्तक विक्रेताओं को उपलब्ध करवाई जाएँगी जिनका राजस्थान पाठ्य–पुस्तक मण्डल, अजमेर में पंजीकरण होगा।

अतः सभी पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है. कि जो पुस्तक विक्रेता विभिन्न कक्षाओं की पुस्तक विक्रय करना चाहते हैं वो दिनांक 27 जनवरी 2025 तक मण्डल कार्यालय में उपस्थित होकर

शेखावाटी मिशन–100

पंजीकरण की कार्यवाही पूर्ण करें।

सचिव

राजस्थान पाठ्य–पुस्तक मण्डल, अजमेर

2. सचिव मा. शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की ओर से दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षा तिथि परिवर्तन की विज्ञप्ति तैयार कीजिए ।

उत्तर– **विज्ञप्ति**

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर

क्रमांक–325 दिनांक 4 मार्च, 2025

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा दसवीं एवं बारहवीं की परीक्षाएँ दिनांक 10 मार्च 2024 से प्रारम्भ होनी थी, किन्तु अपरिहार्य कारणों से अब 17 मार्च 2024 से आयोजित होंगी। बोर्ड परीक्षार्थी अपना नवीन समय विभाग–चक्र माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं तथा परीक्षा प्रवेश–पत्र अपने विद्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

भवदीय,

(हस्ताक्षर..............)

सचिव

शेखावाटी मिशन–100

निविदा

1. अपने विद्यालय के लिए खेलकूद सामग्री क्रय करने हेतु निविदा तैयार कीजिए।

निविदा–सूचना

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाय

क्रमांक–लेखा / नि.सू. / 2023–2024 दिनांक 15 नवम्बर, 2024

निविदा संख्या 11 / 2024

अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा निम्न विवरणानुसार खेल सामग्री की आपूर्ति हेतु प्रतिष्ठित निर्माताओं / प्रतिष्ठानों से निविदाएँ आमन्त्रित की जाती हैं, जो निर्धारित तिथि को दोपहर दो बजे तक प्राप्त हो जायेगी और उसी दिन तीन बजे इच्छुक निविदाकारों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा–प्रपत्र निविदा खोलने की निर्धारित तिथि के 12 बजे तक निविदा शुल्क तथा धरोहर राशि का रेखांकित बैंक ड्राफ्ट प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाय के कार्यालय में जमा कराकर प्राप्त किया जा सकता है। निविदा–विवरण इस प्रकार हैं–

विरवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा खोलने की तिथि	निविदा प्रपत्र–शुल्क
खेल–कूद सामग्री	पचास हजार रुपया लगभग	2500/-	20-11-24	50/-

नोट–आपूर्ति के लिए सामग्री का पूरा विवरण निविदा प्रपत्र के साथ उपलब्ध रहेगा।

(हस्ताक्षर)

प्रधानाचार्य

कार्यालय–पत्र

2. **बिरोल ग्राम पंचायत के सचिव की ओर से अपने जिला कलेक्टर को गाँव में फैली मौसमी बीमारियाँ, यथा–मलेरिया, डेंगू एवं चिकनगुनिया के उपचारार्थ चिकित्सकों की टीम भेजने हेतु कार्यालयी–पत्र लिखिए।**

उत्तर–पत्रांक–ग्रा. पं. 5/208/2024 दिनांक 12 जून, 2024

प्रेषक– सचिव,

ग्राम पंचायत,

बिरोल

सेवा में,

श्रीमान् जिला कलेक्टर महोदय,

जिला झुन्झुनू

राजस्थान।

विषय– मौसमी बीमारियों के उपचारार्थ चिकित्सकों की नियुक्ति के क्रम में।

महोदय,

प्रतिवर्ष की भाँति गर्मी का मौसम आते ही गाँव में मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि मौसमी बीमारियों का प्रकोप बढ़ने लगा है। इस वर्ष यह स्थिति कुछ अधिक ही दिखाई दे रही है। ग्राम पंचायत क्षेत्र में एक डिस्पेंसरी है, परन्तु उसमें आवश्यक दवाइयों की नितान्त कमी है और चिकित्सक भी नियुक्त नहीं है। इसलिए मौसमी बीमारियों के प्रकोप को दूर करने तथा रोगियों के उपचार करने के लिए चिकित्सकों की एक टीम गाँव में भेजने की व्यवस्था जरूरी है।

अतः इस सम्बन्ध में चिकित्सकों की टीम की उचित व्यवस्था कर गाँव की जनता के हितार्थ आदेश प्रसारित करें।

भवदीय,

(हस्ताक्षर..............)

सचिव

ग्राम पंचायत– बिरोल

शेखावाटी मिशन–100

अधिसूचना

1. **स्वायत्त शासन विभाग, शासन सचिवालय की ओर से समस्त सरकारी विभागाध्यक्षों को स्वच्छता अभियान चलाने हेतु एक अधिसूचना का प्रारूप लिखिए।**

उत्तर– **अधिसूचना**

राजस्थान सरकार,

स्वायत्त शासन विभाग,

शासन सचिवालय, जयपुर।

क्रमांक–196 / 202513 जनवरी, 2025 दिनांक 11 सितम्बर, 2025

महामहिम राज्यपाल की अनुशंसा के आधार पर राज्य सरकार के आदेश क्रमांक 33 / 12 / (द) / स्वच्छता 56, दिनांक 2 / 10 / 2024 की अनुपालना में गांधी जयन्ती पर प्रदेश के समस्त नगर निगमों, नगर परिषदों व नगरपालिकाओं द्वारा सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत 'स्वच्छ नगर–स्वच्छ' आवास अभियान चलाया जाएगा। अभियान में जन–सहभागिता महत्त्वपूर्ण रहेगी।

हस्ताक्षर...............

क, ख, ग

उपशासन सचिव

निम्नलिखित विषयों पर सारगर्भित निबंध लिखिए।

(1) पर्यावरण प्रदूषण

रूपरेखा–

(1) प्रस्तावना। (2) पर्यावरण शब्द का अर्थ । (3) पर्यावरण प्रदूषण का कारण। (4) पर्यावरण प्रदूषण का प्रसार (5) पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार (6) पर्यावरण संतुलन के उपाय। (7) उपसंहार।

(i) **प्रस्तावना–**

वर्तमान संसार है, विचि–नवीन,
प्रकृति पर सर्वत्र है विजय पुरुष आसीना।
है बंध नर के करों में वारि, विद्युत, भाप,
हुक्म पर चढ़ता–उतरता है पतन का ताप।

हमारे चारों और जो भौतिक, जैविक और सांस्कृतिक वातावरण है, वही पर्यावरण है। नीवन की शुरुआत से लेकर अंत तक हमारा पर्यावरण के साथ निरन्तर सम्पर्क, संघर्ष और सामंजस्य रहता है। एक व्यक्ति ही दूसरे व्यक्ति के लिए पर्यावरण है अतः पर्यावरण को हमें व्यक्तिगत एवं सामजिक अस्तित्व की दृष्टि से देखना चाहिए। वस्तुतः पर्यावरण के साथ ही सही सामंजस्य में हो व्यक्ति और समाज का विकास निहित है। अपने से अलग हटकर अन्य से, दुनिया से जोड़ने

शेखावाटी मिशन–100

का उपक्रम ही पर्यावरण है। विकास के नाम पर मनुष्य ने प्रकृति का जिस रूप में दोहन किया है, उस व्यक्ति का पर्यावरण के साथ संतुलन बिगड़ गया है और निरन्तर रूप से बिगड़ता जा रहा है। इसलिए पर्यावरण प्रदूषण आज सभी व्यक्तियों और देशों की जनता के लिए चिन्ता का विषय बन गया है।

पर्यावरण पर लिखना, मुझको एक निबंध।
साँसें एक दिन बिकेगी कर लो सभी प्रबन्ध।

(ii) **पर्यावरण शब्द का अर्थ–** पर्यावरण शब्द की रचना परि / आवरण' दो शब्दों के मेल से हुआ है, जिसका अर्थ है किसी हमारे चारों ओर विद्यमान है, वही पर्यावरण है।

(iii) **पर्यावरण प्रदूषण का कारण –**

दूषित पर्यावरण से, रोग हजारों होय।
तन, मन, धन सब मिटत है, चैन–खुशी सब खोया।

प्रकृत्ति ने हमारे चारों और एक स्वस्थ और सुखद आवरण का निर्माण किया था परन्तु मनुष्य ने भौतिक सुखों की होड़ में उसे दूषित कर दिया। निरन्तर बढ़ते हुए कल–कारखानो, वाहनो द्वारा छोड़ा जाने वाला धुआँ, नदियों– तालाबों में गिरता हुआ कुड़ा–करकट, वनों की कटाई, रासायनिक खादों का प्रकोप, मिट्टी का कटाव एवं निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।

(iv) **पर्यावरण प्रदूषण का प्रसार –**

मनुष्य के प्रारंभिक विकास में मनुष्य और प्रकृति का निकट सम्बन्ध था। प्रकृति पर मनुष्य का दबाव भी कम था। मनुष्य ने अपने भौतिक सुखों के लिए प्रकृति का दोहन किया तो पर्यावरण प्रदूषण को समस्या उत्पन्न हुई। औद्योगिक क्रान्ति, उद्योगों की चिमनियों से निकलता हुआ धुओं, रासायनिक कारखानों में बहता हुआ विषैला पदार्थ, प्रकृति में कार्बन कण, कार्बन डाई–ऑक्साइड, कार्बन–डाइ सल्फाइड आदि विषाक्त गैसें बढ़ने से जलवायु दुषित होने लगी जिससे पर्यावरण दूषित हो गया।

(v) **पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार –**

(1) **जल प्रदूषण–**

बादल से पूछो जरा, पानी की औकात।
बूंद–बूंद पर लिखी है, पर्यावरणी बात।

बढ़ते हुए कल–कारखानों से निकला अपशिष्ट पदार्थ, जलयानों द्वारा मेल का रिसाव कूड़ा–करकट आदि नदियों, तालाबों से मिल जान से जल दूषित हो जाता है। जिसमे दुषित जल के उपयोग में लेने से पचिश, खुजली, पोलिया, हैजा आदि रोग लग जाते हैं। पृथ्वी का तीन चौथाई भाग पानी से ढ़का है किन्तु उसमें केवल 1 प्रतिशत जल पीने योग्य है। कुछ पूर्व सुरत एवं दिल्ली से फैले प्लग में हुए व्यापक मानव मृत्यु ने जल प्रदूषण की समस्या का विकराल रूप हमारे सामने रखा था

(2) वायु प्रदूषण–

उद्योगों का कूड़ा–करकट, कार्बन मोटर आदि वाहनों द्वारा छोड़े जाने वाली जहरीली गैसों, रेडियोधर्मी पदार्थ आदि वायु प्रदूषण के प्रमुख कारण है। जीव–जन्तुओं के अलावा पेड़–पौधे और भवन तक वायु प्रदूषण द्वारा प्रभावित हो रहे हैं। उदाहरण–आगरा के ताजमहल को वायु प्रदूषण से बचाने की दृष्टि से उद्योगों को लगाने के लिए अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगाने पड़े है।

शेखावाटी मिशन–100

(3) ध्वनि प्रदूषण–

मशीनों की आवाज तथा लाऊड स्पीकर आदि के कारण ध्वनि प्रदूषण की समस्या भयंकर होती जा रही है। ध्वनि प्रदूषण के कारण मानव के अनेक मानस्कि और मनोवैज्ञानिक विकारों का सामना करना पड़ता है। शादी, उत्सवों, त्योहारों आदि अवसरों पर होने वाला ध्वनि प्रदूषण अनेक व्यक्तियों की नींद हराम करता है।

(vi) पर्यावरण संतुलन के उपाय–

संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रर्यावरण संतुलन के अनेक उपाय कर रहे हैं। हमारे देश में सरकार ऐसे उपाय कर रही है। इसके लिए नाले के गन्दे पानी को यंत्रों द्वारा साफ किया जा रहा है, वनों की कटाई रोको जा रही है नये वृक्ष लगाये जा रहे हैं। पर्यावरण संतुलन के लिए जनजागरण किया जा रहा है। इस तरह अनेक उपाय किए जा रहे हैं ताकि पर्यावरण को प्रदूषण से बचाया जा सके।

प्राण वायु देकर हमें वृक्ष बचाये जान
पर्यावरण सुधारते, जैव विविधता मान।

(vii) उपसंहार–

पर्यावरण प्रदूषण एक विकराल समस्या है। यह मानव सभ्यता के सामने एक चुनौती है। पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के लिये सरकार अनेक उपाय कर रही है। परन्तु जब तक जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण नहीं हो सकता, तब तक इस समस्या का निवारण सम्भव नहीं है। पर्यावरण पर संतुलन रहने से ही धरती पर खुशहाल जीवन का विकास हो सकता है। भारतीय आर्य ग्रंथों ने आज से हजारों वर्ष पूर्व कहा था "प्रकृति हमारी माता है जो अपना सब कुछ अपने बच्चों को अर्पण कर देती है।" अतः आवश्यकता है कि हम हमारी प्रकृति माँ को सुरक्षित रखने के लिए कुछ इस प्रकार का काम करें कि वह भी स्वच्छ रहे और हम भी स्वस्थ, स्वच्छन्द रहे।

"वृक्ष लगाओ पयर्यावरण बचाओ"

जल, वायु, पर्यावरण, वृक्ष, जीव, इंसान
पर्यावरण बचाइए। तभी बचेगी जाना।

(2) राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व

अथवा

राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. वर्तमान राष्ट्रीय स्वरूप 3. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–प्रत्येक समाज और राष्ट्र का भविष्य उसके सुनागरिकों पर निर्भर रहता है। राष्ट्रीय उत्थान के लिए केवल भौतिक समृद्धि ही पर्याप्त नहीं रहती है, इसके लिए तो वैचारिक, शैक्षिक, बौद्धिक एवं नैतिक चिन्तन की परिपक्वता भी उतनी ही आवश्यक है। वर्तमान काल में लोकतन्त्रात्मक शासन–व्यवस्था के अन्तर्गत अधिकारों की रक्षा और राजनैतिक सत्ता को प्राप्त करने की बात हर कोई करता है, परन्तु कर्त्तव्य–बोध और नैतिक दायित्व की भावना लोगों में वैसी नहीं दिखाई देती है। हमारे सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में नैतिकता की कमी आ गई है। इस कारण हम राष्ट्र के प्रति अपने

दायित्वों को भूलते जा रहे हैं।

2. वर्तमान राष्ट्रीय स्वरूप – स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर देश के कर्णधारों ने संविधान का निर्माण कर संघीय शासन–व्यवस्था का प्रवर्तन किया और इसे धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र का स्वरूप दिया। आज विश्व में भारतीय लोकतन्त्र को सबसे बड़ा माना जाता है और इसमें सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी निरन्तर चल रही है। परन्तु आज सारे देश में नवयवकों में बेरोजगारी महँगाई तथा भ्रष्टाचार के कागदाता अनुशासनहीनता और तोडफोड की प्रति सबसे बड़ा माना जाता है और इसमें सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी निरन्तर चल रही है। परन्तु आज सारे देश में नवयुवकों में बेरोजगारी, महँगाई तथा भ्रष्टाचार के कारण उद्दण्डता, अनुशासनहीनता और तोड़–फोड़ की प्रवृत्ति बढ़ रही है। सरकारी कर्मचारियों में भ्रष्टाचार एवं अनुत्तरदायित्व की भावना फैल रही है। राजनीति में भाई–भतीजावाद, स्वार्थ–लोलुपता, चरित्रहीनता और छल–कपट अत्यधिक बढ़ रहा है। इससे हमारा राष्ट्रीय चरित्र दूषित हो रहा है।

3. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व – अपने राष्ट्र के नागरिक होने से हमें जहाँ संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार प्राप्त हैं, वहाँ हमारे कुछ कर्त्तव्य भी हैं। इसलिए हमें अपने नैतिक दायित्व का निर्वाह करने में पूर्णतया सावधान रहना चाहिए। हमें ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे संविधान का उल्लंघन हो, राष्ट्रीय विकास और सामाजिक सद्भाव अवरुद्ध हो। हमें अपने परिवार, अपने गाँव या नगर तथा प्रदेश आदि के साथ सम्पूर्ण राष्ट्र का हित–चिन्तन करना चाहिए। राष्ट्र की सुरक्षा, चहुँमुखी प्रगति, जन–कल्याण, सामाजिक उन्नति और सुव्यवस्था के प्रति हमें अपने दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए। अपने राष्ट्र में सच्चरित्र का निर्माण करना हमारा प्रथम दायित्व है, क्योंकि सच्चरित्र से ही समाज को मंगलमय बनाया जा सकता है। अतः हमारा राष्ट्र के प्रति यह नैतिक दायित्व है कि हम त्याग–भावना, सच्चरित्रता, देश–भक्ति, समाज–सेवा आदि श्रेष्ठ गुणों को अपनाकर पूरे समाज को भी इसी तरह निष्ठावान् बनावें ।

4. उपसंहार–राष्ट्र–निर्माण का कार्य जन–जागृति एवं कर्त्तव्य–बोध से ही सम्पन्न हो सकता है। उक्त सभी बातों का चिन्तन करते हुए दायित्व का निर्वाह करते रहें, तभी हम राष्ट्रीय कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इसलिए हमारा यह नैतिक दायित्व है कि हम सुनागरिक बनें अपनी चारित्रिक एवं नैतिक उन्नति का प्रयास करें।

(3)वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इन्टरनेट की आवश्यकता

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. इण्टरनेट 3. इण्टरनेट की रचना एवं कार्यविधि5. उपसंहार

1. प्रस्तावना– वर्तमान वैज्ञानिक युग में कम्प्यूटर के आविष्कार के साथ टेलीफोन, मोबाइल, टेलीविजन, टेलेक्स, ई–मेल, ई–कॉमर्स, फैक्स, इन्टरनेट आदि संचार–साधनों का विस्तार हुआ है। जन–संचार–साधनों का असीमित विस्तार होने से जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार हुआ है, वहाँ संचार–सुविधाओं में आश्चर्यजनक क्रान्ति आने से सूचना आदान– प्रदान अत्यन्त सहज हो गया है।

2. इण्टरनेट–संचार नेटवर्क कुछ कम्प्यूटरों का समूह होता है, जिन्हें आपस में सूचनाओं तथा संसाधनों के सुगम आदान–प्रदान के लिए जोड़ा जाता है। इसी प्रकार से पूरे विश्व में फैले हुए अलग–अलग नेटवर्को को आपस में जोड़

दिया जाता है जिसे हम 'इण्टरनेट' के नाम से जानते हैं। अतः इण्टरनेट कई नेटवर्कों का एक नेटवर्क या अन्तरजाल है। अतः इण्टरनेट संसार में व्याप्त सूचना–भण्डारों को आपस में सम्बद्ध किए जाने तथा उन्हें किसी भी स्थान पर उपलब्ध कराये जाने का आधुनिक वैज्ञानिक संचार माध्यम है।

3. इण्टरनेट की रचना एवं कार्यविधि– हालांकि इण्टरनेट विश्वभर में फैला एक नेटवर्क है, फिर भी कई कारणों से यह एक छोटे शहर की अनुभूति देता है। इसमें भी वही सेवाएँ होती हैं जो किसी शहर में मिलती हैं। यदि आपको अपनी 'मेल' प्रेषित या प्राप्त करनी है तो इस कार्य को करने के लिए इण्टरनेट में 'इलेक्ट्रोनिक पोस्ट–ऑफिस' होते हैं। इसमें 'ऑनलाइन लाइब्रेरी' मिल जाती है जिसमें हजारों–लाखों पुस्तकों को सुविधानुसार पढ़ा जा सकता है। इण्टरनेट में शामिल होने के लिए अपनी वेबसाइट स्थापित करनी पड़ती है। फिर रुचि के अनुसार सम्बन्धित वेबसाइट से सम्बन्ध स्थापित करके जानकारी प्राप्त होती है।

4. उपयोग एवं दुरुपयोग– 'इण्टरनेट' आज की संचार–सेवाओं में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इंटरनेट सार्थक समाज में शिक्षा, संगठन और भागीदारी की दिशा में एक बहुत ही सकारात्मक कदम है। घर बैठे बटन दबाते ही वांछित सूचनाओं का आदान–प्रदान बड़ी सरलता से किया जा सकता है। इसके द्वारा उन सभी विषयों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है जिन्हें व्यक्ति के द्वारा केवल सोचा जा सकता है। अध्यापक, विद्यार्थी, डॉक्टर, व्यापारी तथा अन्य शिक्षित समुदाय अपने विचारों एवं समस्याओं के हल हेतु आदान–प्रदान तेजी से लम्बी दूरियों के बीच कर सकता है। अतः इण्टरनेट हमारे लिए आज की व्यस्तता भरी जिन्दगी के लिए अति उपयोगी है, परन्तु कुछ शरारती तत्त्व इस नेटवर्क में वायरस प्रवेश कराने का प्रयास कर महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का दुरुपयोग करने में नहीं चूकते हैं। इण्टरनेट ने अपराध जगत् में 'साइबर' अपराधी की एक नयी फौज खड़ी कर दी है। अब इस अपराध को रोकने के लिए कानून बनाया गया है।

5. उपसंहार– विज्ञान के इस युग में इंटरनेट यदि ज्ञान का सागर है, तो इसमें 'कूड़े–कचरे' की भी कमी नहीं। यदि इसका इस्तेमाल करना आ जाए, तो इस सागर से ज्ञान व प्रगति के मोती हासिल होंगे और यदि गलत इस्तेमाल किया जाए, तो कूड़े–कचरे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिलेगा। सार यह है कि इण्टरनेट हमारे लिए उपयोगी है और सभी इसका सदुपयोग कर लाभान्वित होवें।

(3) "सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव "

प्रस्तावनाः–

हम वैश्विक इतिहास की ओर नजर डाले तो हमें ज्ञात होगा कि विश्व अनेक प्रकार क्रांति हुई है। इन क्रांतियों ने समाज देश और विश्व को परम्पराओं से हटकर परिवर्तन के नये मार्गों और विचारों की ओर अग्रसर किया। जैसे हरित क्रांति संचार क्रांति और इसी क्रम में सोशल मीडिया क्रांति उद्भव जिसने विश्व को हिलाकर कर रख दिया है। सोशल मीडिया आज प्रत्येक व्यक्ति के लिए नशा बन गया है। व्यक्ति सोशल के बिना वर्तमान में नहीं रह सकता है। इसने प्रत्येक व्यक्ति के विचार बुद्धि और सामाजिक जीवन, गहराई से परिवर्तन किया है। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। सोशल मीडिया के आविष्कार ने भौतिक दूरियों को कम करके दुनिया को मुट्ठी में कर लिया है। प्रत्येक आविष्कार के साथ वरदान और अभिशाप का भी चोली–दामन का का साथ रहा है। जो वर्तमान में देश दुनियाँ में देखा जा सका है।

शेखावाटी मिशन–100

सोशल मीडिया एक नजर में:–

अमेरिका के मशहूर कारोबारी एण्ड्रेयू विनरीच सोशल मीडिया प्लेट फॉर्म को 1997 में दुनियाँ में लेकर आये। इस प्लेटफॉर्म का नाम था sx degress (शिक्स डिग्रेस)। उस समय लोग इसके इस बारे में बहुत जानते थे। बहुत से बुद्धिजीवी लोगों ने कहा की इसकी कोई आवश्कता नहीं लेकिन Adnrew veinrrich (एण्ड्रेयू विनरीच) बहुत दूरदर्शी थे।/ 2001 तक Six Degress के विश्व भर में 10 लाख यूजर्स (उपभोक्ता) हो चुके थे/ बाद में ये प्लेटाफॉर्म बन्द हो गया लेकिन इसने दुनिया में मोबाईल फोन, इन्टरनेट का नया अध्याय प्रारम्भ करवाया।

21वीं सदी के साथ दुनिया में सोशल मीडिया क्रांति का प्रवेश हुआ जो आज देश और दुनियाँ में नयी ऊंचाईयाँ छू रहा है। आज सोशल मिडिया ने विश्व को बौधिक आर्थिक और सामाजिक रूप से बदल कर रख दिया है। हमारे पूर्वज जो कल्पना की बात मानते थे इसको इस सोशल मीडिया ने हमारे सामने लाकर रख दिया है।

आज बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ लाखों करोड़ो रूपये कमा रही है इस सोशल मीडिया के कारण/सोशल मीडिया ने न केवल दुनिया को बदला बल्कि उनके विचारों में भी परिवर्तन ला दिया।

भारत में सोशल मीडिया:–

आकड़ों के अनुसार वर्तमान में भारत में तकरीबन 447 मिलियन सोशल मीडिया यूजर्स हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक भारतीय 24 घण्टों में से 2.4 धारा सोशल मीडिया का उपयोग कर्ता है। सोशल मीडिया ने समाज को बहुत गहराई तक प्रभावित किया है। इसके प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार से देखे जा सकते हैं। सोशल मीडिया के कारण आर्थिक स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए नये द्वार भी खुले हैं। वैचारिक और बौधिक रूप से देश और समाज विकसित और समृद्ध भी हुआ है लेकिन इसके दुरुपयोग को लेकर अपनी आलोचनाओं के लिए भी चर्चा में रहता है।

सोशल मीडिया का समाज पर सकारात्मक प्रभाव:–

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। वरदान और अभिशाप जीवन सुख और दुःख की तरह होते हैं। उसी प्रकार सोशल मीडिया ने समाज को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं है कि सोशल मीडिया आज समाज की आवश्कता बन गया है।

सोशल मीडिया देश और दुनियाँ से जुड़ने का श्रेष्ठ माध्यम बन चुका है। इसने समाज के अंतिम् छोर के व्यक्ति को मुख्य धरा में ला खड़े करने का महत्वपुर्ण कार्य किया है। सोशल मीडिया ने रोजगार के नये द्वार खोलकर समाज को आर्थिक रूप से मजबूती प्रदान की है। सोशल मीडिया ने शिक्षा के क्षेत्र में नयी क्रांति ला ही है। सोशल मीडिया के कारण शिक्षा समाज के प्रत्येक व्यक्ति के दरवाजे को खटखटाने में सफल रही है। कोरोना जैसी महामारी में तो सोशल मीडिया शिक्षा के लिए रामबाण सिद्ध हुआ। अतः हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया आज की आवश्कता बन चुकी है। इसने समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालकर समाज को विकशीत और समृद्ध किया है।

सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभाव:–

सोशल मीडिया समाज की आवश्यकता जरूर बन गया है लेकिन साथ–साथ चिंताजनक भी बन गया है। अति सर्वत्र वर्जयते अति अधिकता सभी जगह वर्जित है। सोशल मीडिया की अधिकता निश्चित रूप से चिंता का विषय है।

शेखावाटी मिशन–100

सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक उपयोग हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इसका सबसे नकारात्मक पहलू है विश्वसनियता का अभाव, यह झूठ को बढ़ावा देता है। सोशल मीडिया के कारण सामाजिक रीति–रिवाजों पर कुप्रभाव पड़ा है। छोटे बच्चों के हाथों में फोन चिंता का विषय है। नये शोध बता रहे हैं सोशल मीडिया के कारण युवाओं जीवन पुस्तके दूर होती जा रही हैं। सोशल मीडिया के कारण धोखादड़ी और भ्रष्टाचार बढ़ावा मिला है। गत के वर्षों में परीक्षाओं में कालाबाजारी सोशल मीडिया के कारण बहुत बढ़ी है। इसके कारण राष्ट्रीय स्तर पर गोपनियता रखना चिंता का विषय है। आजकल युवाओं के विचार और चरित्र में ह्रास में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। निश्चित रूप से सोशल मीडिया वरदान के साथ समाज के लिए अभिशाप बना है लेकिन कानून की कड़ी नजर और जागरूकता इन नक्कारात्मक प्रभावों से समाज को बचाया जा सकता है।

निष्कर्ष / उपसंहारः–

अकाल के डर से किसान खेती से दूर नहीं हो सकते असफलता के डर से प्रयास न करना समझदारी नहीं हो सकती। निश्चित रूप से सोशल मीडिया देश–दुनियाँ और समाज की प्राथमिक आवश्कता बन गयी है। इसके इतर हम विश्व की प्रतिस्पर्धा में खड़े नहीं रह सकते। सोशल मीडिया विश्व में वरदान साबित हुआ है। देश–दुनिया समृद्ध और विकसित किया है लेकिन, चिंता की नयी लकीरे भी स्पष्ट देखी जा सकती है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नकारात्मक पहलूओं से दूर रहते हुए जीवन में सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ना ही जीवन है।

शेखावाटी मिशन–100

(4) योग स्वास्थ्य कुंजी
अथवा
योग भगाए रोग

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. योग से आशय 3. योग का महत्त्व 4. वर्तमान में योग की स्थिति 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–

भारत प्राचीन काल से ही ऋषियों, मुनियों और मनीषियों की धरा रही है। इसीलिए भारतीय संस्कृति विश्व के आँगन में अपनी श्रेष्ठता और महानता के लिए प्रसिद्ध रही है। इसके मूल में 'सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों' की भावना ही निहित रही है। इसी निमित्त भारत में योग को सनातन काल से अपनाया जाता रहा। वस्तुतः योग भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार है।

2. योग से आशय–

'योग' शब्द संस्कृत के 'युज्' धातु से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है–जोड़ना। किसी कातु को अपने से जोड़ना अर्थात् किसी अच्छे कार्य में अपने आपको लगाना। अतः तन से मन को जोड़ने को ही योग कहते हैं। महर्षि पतंजलि द्वारा रचित 'योगसूत्र' योग दर्शन का मूलग्रन्थ है। उन्होंने योग के आठ अंग बताते हुए कहा है

कि चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग है। अतः हमें शारीरिक, मानसिक, धार्मिक व आध्यात्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योग की कोई न कोई क्रिया पन्द्रह–बीस मिनट नियमित रूप से करनी चाहिए, क्योंकि योग स्वस्थ जीवन जीने की एक कला है।

3. **योग का महत्त्व–**

योग से मनुष्य को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक दृष्टि से अनेक लाभ हैं। इससे सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसको नियमित करने से व्यक्ति निरोगी रहता है और दीर्घजीवी होता है। उसके शरीर और मस्तिष्क में वृद्धि के साथ–साथ सोच में भी शुचिता आती है। योगाभ्यासी जन परार्थ चिन्तन से पूरित होकर आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख होता रहता है।

4. **वर्तमान में योग की स्थिति–**

वर्तमान में 'योग' शब्द अब अनजाना नहीं रहा है, क्योंकि जहाँ देखो वहीं योग का प्रचार–प्रसार है। टी.वी., पत्रिकाएँ, सी.डी., डी.वी.डी., पुस्तकें आदि इसके प्रचार के जहाँ प्रमुख साधन हैं वहीं बहुत सारी संस्थाएँ हैं जो योग की कक्षाएँ चलाती हैं, प्रशिक्षण देती हैं। चारों तरफ आज के जमाने में योग हो योग है। असाध्य रोगों की प्राकृतिक दवा योग है इसीलिए कहा गया है कि 'योग भगाए रोग'। योग के क्षेत्र में स्वामी रामदेव का योगदान वर्तमान में अतुलनीय है। उन्होंने देश और विदेशों में सैकड़ों योग शिविर लगाकर लोगों को स्वस्थ और दीर्घजीवी रहने का सहज उपाय सिखाया है और सिखा रहे हैं। उन्होंने हरिद्वार में 'पतंजलि योगपीठ' की स्थापना करके सोग द्वारा रोगों की चिकित्सा का भी प्रबन्ध किया है। वर्तमान में योग की उपादेयता को समझते हुए इसे शिक्षा पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ा जा रहा है।

5. **उपसंहार–**

योग भारतीय संस्कृति का एक अनुपम उपहार है। जो आज के मनुष्य के व्यस्ततम और तनावग्रस्त जीवन की एक अमूल्य औषधि है। योग स्वास्थ्य की कुंजी है। इसके नियमित अभ्यास से मनुष्य सौ वर्ष तक जीवित कने की इच्छा पूरी कर लेता है। इसीलिए आज सभी के लिए योग लाभदायक सिद्ध हो रहा है और इसका प्रचार–प्रसार दिनों–दिन बढ़ता चला जा रहा है। योग के कारण हो आज का मानव अपने स्वास्थ्य के लिए जागरूक होता जा रहा है।

शेखावाटी मिशन–100

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2025–26

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय – अनिवार्य हिन्दी

समयः 03 घन्टे 15 मिनट **पूर्णांकः 80**

खण्ड – अ

1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए – **(12)**

(i) भाषा की सबसे छोटी इकाई है – (1)

(अ) वर्ण (ब) शब्द (स) पद (द) वाक्य

(ii) वर्तमान में हिन्दी हमारी कौनसी भाषा है ? (1)

(अ) मातृभाषा (ब) राजभाषा (स) देवभाषा (द) क्षेत्रीय भाषा

(iii) प्रिन्ट माध्यम हेतु भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला – (1)

(अ) 1556 में गोवा में (ब) 1650, मद्रास में (स) 1856 आगरा में (द) 1951, मुम्बई में

(iv) बच्चों को खतरनाक किनारों से कौन बचाता है? (1)

(अ) पतंग की डोर (ब) पतंगो की ऊंचाइयाँ

(स) रोमांचित शरीर का संगीत (द) छत का किनारा

(v) 'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता के कवि है– (1)

(अ) आलोक धन्वा (ब) कुंवर नारायण

(स) रघुवीर सहाय (द) उमाशंकर जोशी

(vi) क्रान्ति हमेशा किसका प्रतिनिधित्व करती है? (1)

(अ) पूँजीपति वर्ग का (ब) शोषक वर्ग का

(ब) राजसी वर्ग का (द) वंचित वर्ग का

(vii) श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति–प्रथा किससे युक्त है? (1)

(अ) श्रेष्ठ गुणों से (ब) स्वार्थों से

(स) गंभीर दोषो से (द) मानव कल्याण से

(viii) यशोधर बाबू किसके आदर्शों पर चलते थे? (1)

(अ) माता–पिता (ब) गांधीजी

(स) कृष्णानन्द पाण्डे (द) मेनन

(ix) 'कविता के पंथ लगा उड़ने' से क्या तात्पर्य है? (1)

(अ) उड़ना (ब) चलना

(ब) कल्पना करना (द) कोई नहीं

(x) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना क्या है ? (1)

(अ) परिवार की कहानी (ब) अपनापन

(स) पुरानी पीढी वनई पीढ़ी के बीच अंतराल व वैचारिक मत भेद

(द) दिखावटी पन (1)

शेखावाटी मिशन–100

(xi) मुअनजो–दड़ो का अर्थ है–

(अ) काली चूड़ियाँ (बं) मोहन का पुरा

(स) मुर्दों का टीला (द) कृष्ण का गाँव

(xii) भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का प्रारंभ कब हुआ ? (1)

(अ) 1987 (ब) 1988

(स) 1983 (द) 1993

2. रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिएः– (6x1=6)

(i) .... मौखिक अभिव्यक्ति का माध्यम है।

(ii) "आशुतोष पुस्तक पड़ रहा है।" वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

(iii) 'चारू –चन्द्र की चंचल किरणे' उक्त काव्य–पंक्ति में .... वर्ण की आवृति के कारण .... अलंकार है।

(iv) जहाँ शब्द की आवृति हो किन्तु अर्थ भिन्न हो वहाँ .... अलंकार है।

(v) भाषा का लिखित रूप ही .... कहलाता है।

(vi) Notification शब्द का हिन्दी रूपान्तरण......................... है।

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नो के उत्तर दीजिए– (6x1=6)

हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें, परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ़्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य – निर्देशित होता जा रहा है।

(i) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए ?

(ii) हमारी बौद्धिकता का ह्रास किस कारण से हुआ है ?

(iii) 'दिग्भ्रमित' शब्द का सन्धि विच्छेद लिखिए ।

(iv) आस्थाओं के क्षरण होने की क्या कारण है ?

(v) आधुनिकता से संस्कृति का क्या विनाश हो रहा हैं ?

(vi) परम्पराओ के अवमूल्यन होने का क्या कारण है ?

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नो के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए । (6)

साक्षी है इतिहास, हमी पहले जागे है,
जाग्रत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं।
शत्रु हमारे कहाँ नहीं भय से भागे है ?
कायरता से कहाँ प्राण हमने त्यागे है ?
है हमि प्रकम्पित कर चुके, सुरपति तक का भी हृदय ।

शेखावाटी मिशन–100

फिर एक बार हे विश्व ! तुम, गाओ भारत की विजय ।।
कहाँ प्रकाशित नहीं रहा है तेज हमारा,
दालित कर चुके शत्रु सदा हम पैरों द्वारा।
तुम्ही बताओ कौन नहीं जो हमसे हारा
पर शरणागत हुआ कहाँ, कब हमनें मारा ?
बस युद्ध मात्र को छोड़कर कहाँ नहीं है हम संदय।
फिर एक बार हे विश्व ! तुम गाओ भारत की विजय ।

(i) 'हमी पहले जागे है।' पंक्ति में 'हमी' शब्द का अर्थ क्या है?

(ii) 'जाग्रत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं' में निहित भाव को लिखिए।

(iii) "शत्रु हमारे............... त्यागे है" पंक्तियों में भारतीयों के किस गुण का उल्लेख हुआ है?

(iv) 'शत्रु हमार कहाँ नहीं भय से भागे हैं' में अलंकार बताइए।

(v) इस काव्यांश में किस रस का वर्णन है ?

(vi) हमने शत्रु को कैसे जीता है?

5. निम्नलिखित अतिलघुतरात्मक प्रश्नों के उत्तर 20 शब्दों में लिखिए–

(i) बाणभट्ट की 'आत्मकथा' किसका उपन्यास है?

(ii) भीमराव अम्बेडकर का जन्म कब हुआ?

(iii) 'उषा' कविता में कवि ने किस समय का वर्णन किया है?

(iv) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना क्या है?

(v) मोहनजो–दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद आई?

खण्ड–ब

निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों का उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिये।

6. हिन्दी में 'नेट पत्रकारिता' पर टिप्पणी लिखिए। (2)

4. 'पतंग' कविता में किन–किन विम्बो को चित्रित किया है? (2)

8. 'भाषा को सहूलियत से बरतने' से क्या अभिप्राय है? (2)

9. सिंधु घाटी सभ्यता जल– संस्कृति थी, समझाइए । (2)

10. कविता से लगाव के बाद लेखक को अकेले रहना क्यों अच्छा लगने लगा ? (2)

11. भक्तिन नामक संस्मरण में 'खोटे सिक्को की टकसाल' किसे कहा गया है?

12. बगुलों के पंख कविता में वर्णित भाव कल्पना पर प्रकाश डालिए?

खण्ड–स

प्रश्न संख्या 13 से 16 के उत्तर 60 से 80 शब्दो में लिखिए–

13. कवि रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बन्द अपाहिज' में किस पर व्यंग्य किया है? स्पस्ट कीजिए। (3)

शेखावाटी मिशन–100

अथवा

'उषा' कविता में व्यक्त केन्द्रीय भाव को स्पष्ट कीजिए

14. जैनेन्द्र कुमार का लेखक परिचय लिखिए। (3)

अथवा

'हजारी प्रसाद द्विवेदी का कवि परिचय लिखिए।

15. एक शिक्षक अपने विद्यार्थी के जीवन को कैसे बदल सकता है? 'जुझ' पाठ के आधार पर उदाहरण सहित समझाये ?

अथवा (3)

'मुअनजो–दड़ो नगर की नालियों एवं घरों के संबंध में वर्णन कीजिए।

16. 'जुझ' के लेखक आनन्द यादव को यह किस प्रकार विश्वास हुआ कि वे भी कविता कर सकते है? (3)

अथवा

मुअनजो–दड़ो की सभ्यता में हथियार का न मिलना क्या सिद्ध करता है ? लिखिए।

खण्ड–द

17. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– (4)

अट्टालिका नहीं है रे
आतंक–भवन
सदा पंक पर ही होता
जल–विप्लव–प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग–शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष

अथवा

अंगना–अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं।
धनी, वज्र–गर्जन से बादल!
त्रस्त–नयन मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़–मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

शेखावाटी मिशन–100

18. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– (4)

सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए । तात्पर्य यह है कि दूध–पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान–प्रदान का नाम है।

अथवा

शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब–कुछ कोमल है! यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल–पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प–पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

19. सचिव मा. शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की ओर से दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षा तिथि परिवर्तन की विज्ञप्ति तैयार कीजिए। (4)

अथवा

स्वायत्त शासन विभाग, शासन सचिवालय की ओर से समस्त सरकारी विभागाध्यक्षों को स्वच्छता अभियान चलाने हेतु एक अधिसूचना का प्रारूप लिखिए।

20. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। (शब्द सीम 300 शब्द)– (5)

(i) कृत्रिम बुद्धिमता (AI) का वर्तमान स्वरूप

(ii) वृक्षारोपण महाभियान

(iii) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

(iv) समाज में नारी का योगदान

शेखावाटी मिशन–100